



SAHABIYAT AUR NASIHATON KE MADANI PHOOL (HINDI)

सहाबियात और नसीहतों के मदनी फूल



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ **اَللّٰهُ** ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(मستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अब्बल आखिर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना

बकीअ

व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



क्रियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुश्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** : सब से ज़ियादा

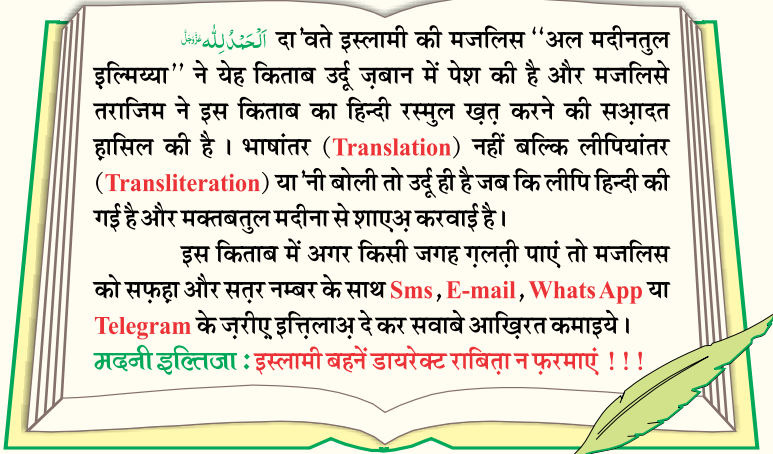
हसरत क्रियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या 'नी उस इल्म पर अमल न किया) (तاريخ دمشق لابن عساکر ج ۱ ص ۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)



 ...राबिता :-

मदनी मर्कज़, कासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मूल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = ف	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = س	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ز	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख = خ	ह = ح
श = ش	स = س	ज़ = ز	ज़ = ز	ढ़ = ڈھ	ड़ = ڈ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ = ع	ज़ = ط	त = ط	ज़ = ض	ص = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئی	ू = ئو	आ = آ	य = ی	ह = ہ	و = و	ن = ن

कुरआनो सुन्नत और बानिये दा 'वते इस्लामी की
मुख्तलिफ़ तहरीरों से माखूज़ इस्लामी बहनों के लिये

226 से जाइद नसीहतों के मदनी फूल

सहाबियात और नसीहतों के मदनी फूल

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा 'वते इस्लामी)

शो 'बए फ़ैज़ाने सहाबियात व सालिहात

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना, देहली-6

الصلوة والسلام على من لا نبي بعده

- नाम किताब : सहाबियात और नसीहतों के मदनी फूल
- पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)
- शो'बए फैजाने सहाबियात व सालिहात
- पहली बार : मुहर्मुल हुराम, सि. 1438 हि.
- नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली-6

तस्दीक नामा

तारीख : 17 जुल का'दतिल हुराम 1436 हि. हुराला नम्बर : 203

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله واصحابه اجمعين

तस्दीक की जाती है कि किताब

“सहाबियात और नसीहतों के मदनी फूल” (उर्दू)

(मक्तबूआ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नजरे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अकाइद, कुफ़्रिया इबारात, अख़लाक़ियात, फ़िक़ही मसाइल और अरबी इबारात वगैरा के हवाले से मक़दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।



मजलिसे तफ्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)

02-09-2015

Web : www.dawateislami.net

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

[illegible]

इजमाली फ़ेहरिस्त

उ़नवान	शफ़्हा	उ़नवान	शफ़्हा
नसीहत क्या है ?	12	कुरआनो सुन्नत से माख़ूज़	
दीन सरापा नसीहत है	15	नसीहतों के मदनी फूल	81
नसीहत का हुक्म	23	अमीरे अहले सुन्नत की कुतुब	
नसीहत के ग़लत और दुरुस्त तरीके	28	से माख़ूज़ नसीहतें	92
गुनाहों पर किसी को अ़र दिलाना	29	सय्यिदी अ़तार की तरफ़ से बिने अ़तार	
दुरुस्त तरीके से की गई नसीहत		के लिये 12 मदनी फूल	116
की तासीर	31	शादी के मौक़अ़ पर अमीरे अहले सुन्नत	
नसीहत व फ़ज़ीहत में फ़र्क़	33	की तरफ़ से इस्लामी बहनों को दिया	
ख़ैरख़्वाही महबूबत की अ़लामत है	34	जाने वाला मक्तूब	118
आदाबे नसीहत	41	शादी मुबारक के नौ हुरूफ़ की निस्बत	
वा'ज़ो नसीहत करने वाली के आदाब	41	से (9) मदनी फूल	124
वा'ज़ो नसीहत सुनने वाली के आदाब	42	शादी शुदा इस्लामी बहनों के लिये	
नसीहत के फ़वाइद	43	(14) मदनी फूल	125
वा'ज़ो नसीहत में ज़रूरी उमूर	43	मदनी सहरा (इस्लामी बहनों के लिये)	129
सरकार की सहाबियात को नसीहतें	44	माख़ूज़ो मराजेअ़	136
सहाबियाते तय्यिबात की नसीहतें	61	फ़ेहरिस्त	140

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

“नसीहतों के मदनी फूल” (उर्दू) के सतबह हुरूफ़ की निखत

से इस किताब को पढ़ने की “17 नियतें”

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ :

“يَسِّرُ الْمُوْمِنَ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهِ” : “मुसलमान की नियत उस के अमल से बेहतर है।”

(المعجم الكبير، १/१८५، حديث: ५९२२)

दो मदनी फूल :

❦ बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अमले खैर का सवाब नहीं मिलता ।

❦ जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

﴿1﴾ हर बार हम्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअव्वुज़ व ﴿4﴾ तस्मिया से आगाज़ करूंगी (इसी सफ़हा पर ऊपर दी हुई दो अरबी इबारात पढ़ लेने से इन नियतों पर अमल हो जाएगा) । ﴿5﴾ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अब्वल ता आख़िर मुतालआ करूंगी । ﴿6﴾ हतल वसअ इस का बा वुजू और ﴿7﴾ क़िब्ला रू मुतालआ करूंगी । ﴿8﴾ कुरआनी आयात और ﴿9﴾ अहादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगी ﴿10﴾ जहां “**अब्बाह**” का नामे पाक आएगा वहां **عَزَّوَجَلَّ** और ﴿11﴾ जहां “सरकार” का इस्मे मुबारक आएगा वहां **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पढ़ूंगी । ﴿12﴾ इस हदीसे पाक **تَهَادَوْا تَحَابُّوْا** एक दूसरे को तोहफ़ा दो आपस में महबबत बढ़ेगी । (موطأ امام مالك، २/३०८، حديث: १८३१) पर अमल की नियत से (एक या हस्बे तौफ़ीक़) येह किताब खरीद कर दूसरों को तोहफ़तन दूंगी ﴿13﴾ इस किताब में मौजूद नसीहतों पर खुद अमल करूंगी और ﴿14﴾ दीगर इस्लामी बहनों की खैर ख़्वाही चाहते हुवे ﴿15﴾ उन तक भी पहुंचाऊंगी ﴿16﴾ सहाबियात की सीरत को अपनाऊंगी ﴿17﴾ किताबत वगैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगी । **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى**

(नाशिरीन वगैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अल मदीनतुल इल्मिया

अज : शेखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि रज़वी, ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ
 اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَى اِحْسَانِهِ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक 'दा'वते इस्लामी' नेकी की दा'वत, इहयाए सुन्नत और इशाअते इल्मे शरीअत को दुन्या भर में आम करने का अज़मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअद्दिद मजालिस का क़ियाम अमल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस 'अल मदीनतुल इल्मिया' भी है जो दा'वते इस्लामी के उलमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَرَهُمُ اللهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

- | | |
|-----------------------------|---------------------------------|
| ﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत | ﴿2﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब |
| ﴿3﴾ शो'बए दर्सी कुतुब | ﴿4﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब |
| ﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब | ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज ⁽¹⁾ |

①ता दमे तहरीर (रबीउल आख़िर 1437 हिजरी) 10 शो'बे मज़ीद काइम हो चुके हैं :
 (7) फैज़ाने कुरआन (8) फैज़ाने हदीस (9) फैज़ाने सहाबा व अहले बैत (10) फैज़ाने सहाबियात व सालिहात (11) शो'बए अमीरे अहले सुन्नत (12) फैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फैज़ाने औलिया व उलमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अरबी तराजुम। (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया)

‘अल मदीनतुल इल्मिया’ की अब्बलीन तरजीह सरकारे आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्स रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिye बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल कारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** की गिरां माया तसानीफ़ को अस्से हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ **हत्तल वस्अ** सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहक़ीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ‘दा’वते इस्लामी’ की तमाम मजालिस ब शुमूल ‘अल मदीनतुल इल्मिया’ को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और हमारे हर अमले ख़ैर को ज़ेवरे इख़लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बकीअ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। **اٰمِيْنَ بِجَاۗءِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**



मरज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा’वते इस्लामी)

पहले इसे पढ़िये

दुनिया में खैरो शर के दरमियान बरपा जंग में खैर के दाई और अलम बरदार हमेशा दीने इलाही से वाबस्ता रहे और शर के पैकर लोग नफ़्सो शैतान के पुजारी रहे। चुनान्चे, **عَزَّوَجَلَّ** ने नौए इन्सानी की फ़लाहो बहबूद और अपने पसन्दीदा दीन या'नी इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिये हर दौर में ऐसे अफ़राद पैदा किये जो न सिर्फ़ इस दीन की पहचान बने बल्कि उन्होंने ने राहे हक़ से भटक कर कुफ़्रो गुमराही के अंधेरो में खो जाने वालों की रहनुमाई के लिये हमेशा नूरे हक़ की शम्अ भी रोशन रखी। चूँकि फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** है :

① **خَيْرُ النَّاسِ أَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ** या'नी बेहतरीन शख़्स वोह है जो दूसरों के लिये ज़ियादा मुफ़ीद हो। लिहाज़ा बेहतरीन इन्सान बनने की एक सूरत येह भी है कि दूसरों की खैरख़्वाही चाही जाए या'नी उन्हें अच्छी और बुरी बातों में तमीज़ सिखाई जाए कि ऐसा करना बिलाशुबा उन के लिये मुफ़ीद है। जैसा कि फ़रमाने बारी तआला है :

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَ يَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ (प: २८, الذّٰرियात: ५५)

और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** इसी खैरख़्वाही के जज़्बे के तहत मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) के शो'बे फैज़ाने सहाबियात व सालिहात ने एक नए सिलसिले का आगाज़ किया, ताकि आज के इस पुर फ़ितन व नफ़सा नफ़सी के दौर में

..... معجم اوسط، باب الميم، من اسمه محمد، २/ २२२، حديث: ५८८८ [1]

प्यारे आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की दुख्यारी उम्मत की माएं, बहनें और बेटियां सहाबियाते तय्यिबात की सीरत के नुमायां पहलूओं की रोशनी में अपनी हयाते फ़ानी को संवार कर हयाते जावेदानी में बदल सकें। चुनान्चे, जेरे नज़र किताब **सहाबियात और नसीहतों के मदनी फूल** भी इसी सिलसिले की एक कड़ी है। जिस में नसीहत के मा'ना व मफ़हूम, शरई हैसियत, नसीहत के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ और फ़वाइद व आदाब के इलावा सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बतौर ख़ास सहाबियात को की गई और सहाबियाते तय्यिबात की बतौर मां, बहन बेटी, बीवी, ख़ाला और फूफी अपने करीबी रिश्तेदारों को की गई नसीहतें मज़कूर हैं। नीज़ आख़िर में अक्वाले ज़री की शक़ल में इस किताब को 226 से ज़ाइद ऐसी नसीहत आमोज़ बातों पर मुश्तमिल मदनी फूलों के एक दिलकश और दिल आवेज़ मदनी गुलदस्ते से मुजय्यन किया गया है जो कुरआनो सुन्नत से और शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** की मुख़्तलिफ़ तहरीरों से माखूज़ है।

इस किताब में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यकीनन **عَزَّوَجَلَّ** की मदद व तौफीक़, उस के प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की अता, औलियाए किराम **رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام** की इनायत और अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** की नज़रे शफ़क़त का समरा हैं और ख़ामियों में हमारी कोताह फ़ेहमी का दख़ल है। **عَزَّوَجَلَّ** से दुआ है कि वोह दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए।

أَمِينٌ بِجَاةِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शो 'बए फ़ैज़ाने सहाबियात व सालिहात

अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सहाबियात और नसीहतों के मदनी फूल

दुश्मदे पाक की फज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ
649 सफ़हात पर मुशतमिल किताब हि्कायतें और नसीहतें सफ़हा
610 पर हज़रते सय्यिदुना शैख़ शुऐब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ नक्ल फ़रमाते
हैं : उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا
फ़रमाती हैं : मैं वक्ते सहर कुछ सी रही थी कि मेरे हाथ से सूई गिर गई
और चराग़ बुझ गया । इतने में हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए, यौमुन्नुशूर
صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए
ज़ियाबार के अन्वार से सारा कमरा जगमगा उठा और सूई मिल गई ।
मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप का चेहरए
अन्वर कितना रोशन है ! तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :
ऐ आइशा ! हलाकत है उस के लिये जो बरोजे क़ियामत मुझे न देखेगा ।
मैं ने अर्ज़ की : बरोजे क़ियामत आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से
कौन (बद नसीब) महरूम रहेगा ? इरशाद फ़रमाया : बख़ील । मैं ने
पूछा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बख़ील कौन है ? इरशाद

फरमाया : जो मेरा नाम सुन कर मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े ।⁽¹⁾

पाएंगे चार पुश्त तक बरकत दिल से भेजेंगे जो दुरूद शरीफ
आखिरत के सफ़र को ऐ बैदल तोशा तुम ले चलो दुरूद शरीफ⁽²⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

काबिले २२क लोग

बे चैन दिलों के चैन, रहमते दारैन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फरमाने आलीशान है : क्या मैं तुम्हें ऐसे लोगों के बारे में ख़बर न दूं जो अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام हैं न शुहदा लेकिन बरोजे क़ियामत अम्बिया व शुहदा उन के मक़ाम को देख कर रश्क करेंगे, वोह लोग नूर के मिम्बरों पर बुलन्द होंगे, येह वोह लोग हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को **अल्लाह** तआला का महबूब (या'नी प्यारा) बना देते हैं और वोह ज़मीन पर (लोगों को) नसीहतें करते चलते हैं । अर्ज़ की गई : वोह किस तरह लोगों को **अल्लाह** तआला का महबूब (या'नी प्यारा) बनाते हैं ? इरशाद फ़रमाया : वोह लोगों को **अल्लाह** तआला की महबूब (या'नी पसन्दीदा) बातों का हुक्म देते और नापसन्दीदा बातों से मन्अ करते हैं, लिहाज़ा जब लोग उन की इताअत करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपना महबूब बना लेता है ।⁽³⁾

[1] القول البديع، الباب الثالث في تحذير من ترك الصلاة عليه عند ذكره، ص ۱۵۳ مفهوماً

[2] نور ایمان، ص ۳۹

[3] شعب الإيمان، ۱۰- باب في محبة الله عزوجل / معاني المحبة، ۱/ ۳۶۷، حديث: ۲۰۹

अल्लाह का महबूब बने जो तुम्हें चाहे

उस का तो बयां ही नहीं कुछ तुम जिसे चाहो ⁽¹⁾

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा बरोजे कियामत क़ाबिले रश्क मक़ाम पर वोही लोग फ़ाइज़ होंगे जो दूसरों को नसीहतें करते हैं या'नी उन की ख़ैरख़्वाही के पेशे नज़र **अल्लाह** की पसन्दीदा बातों का हुक्म देते और नापसन्दीदा बातों से मन्अ करते हैं ।

नसीहत क्या है ?

वा'जो नसीहत का लफ़्ज़ आम तौर पर खुलूस व इब्रत के लिये भलाई की बात बताने और नेक सलाह मश्वरे के मफ़हूम में इस्ति'माल होता है । ⁽²⁾ जैसा कि शिफ़ा शरीफ़ में है कि जिस शख्स को नसीहत की जा रही हो, उस की मुकम्मल भलाई और ख़ैरख़्वाही के इरादे को लफ़्जे नसीहत से ता'बीर किया जाता है । ⁽³⁾

शैख़ुल हदीस हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** जवाहिरुल हदीस में फ़रमाते हैं : नसीहत के मा'ना लुग़त में इख़लास और ख़ैरो सलाह की तरफ़ बुलाना और शर व फ़साद से रोकना है । इमाम सुलैमान ख़त्त़ाबी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया कि लफ़्जे नसीहत एक ऐसा जामेअ लफ़्ज़ है कि इस के मा'ना को अदा करने के लिये अरबी में कोई दूसरा मुफ़रद लफ़्ज़ नहीं है, बहर हाल आम तौर पर

[1].....जौके ना'त, स. 147

[2].....माखूज़ अज़ उर्दू लुग़त, 20 / 73

[3] کتاب الشفاء، القسم الثانی، الباب الثانی، فصل فی وجوب مناصحته، 28/2

उर्दू में इस लफ्ज़ का तर्जमा “खैरख्वाही” किया जाता है जो खुद भी एक बहुत ही जामेअ लफ्ज़ है।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ इस की ता'रीफ़ कुछ यूँ बयान करते हैं : नसीहत वोह कलाम है जो राहे दीन में नारवा और नामुनासिब बातों से रोकने का फ़ाएदा दे।⁽²⁾ दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूअ 868 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब इस्लाहे आ 'माल जिल्द अब्बल सफ़हा 244 पर है : वा'ज़ कहते हैं ऐसी डांट डपट को जिस में डराना पाया जाए। चुनान्चे, इमाम ख़लील नह्वी कहते हैं : वा'ज़ ख़ैर की ऐसी बातें याद दिलाने को कहते हैं जिन से दिल नर्म पड़ जाए और येह भी कहा गया है कि वा'ज़ ऐसी बात की तरफ़ रहनुमाई करने को कहते हैं जो बतरीक़ए रग़बत व डर इस्लाह की तरफ़ बुलाए।

वा'जो नसीहत क़ तज़किश क़ुरआन में

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वा'जो नसीहत के बे शुमारो बे हिसाब फ़वाइदो समरात की बिना पर इस की अहम्मियत व इफ़ादियत से इन्कार मुमकिन नहीं, क्यूँकि वा'जो नसीहत हज़रते अम्बियाए किराम व मुर्सलीने उज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ السَّلَام की अज़ीम सुन्नत है। जैसा कि कुरआने करीम की कई आयाते मुबारका इस पर वाजेह दलील हैं। चुनान्चे, ज़ैल में चन्द आयाते मुबारका पेशे ख़िदमत हैं :

[1].....जवाहिरुल हदीस, स. 96

[2].....تفسير كبير، الجزء التاسع، سورة آل عمران، تحت الآية: 138، 3/340

﴿1﴾ ﷺ हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ का अपनी कौम से फ़रमान इन अल्फ़ाज़ में मज़कूर है :

أُبَلِّغُكُمْ رَأْيِي وَأَنْصَحُكُمْ
وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١١﴾

(प. ८, अ. २४: २४)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता और तुम्हारा भला चाहता और मैं **अल्लाह** की तरफ़ से वोह इल्म रखता हूं जो तुम नहीं रखते ।

﴿2﴾ ﷺ हज़रते सय्यिदुना हूद عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ने अपनी कौम से फ़रमाया :

أُبَلِّغُكُمْ رَأْيِي وَأَنَا لَكُمْ
نَاصِحٌ أَمِينٌ ﴿٢١﴾ (प. ८, अ. २४: २४)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता हूं और तुम्हारा मो'तमद खैरख्वाह हूं ।

﴿3﴾ ﷺ हज़रते सय्यिदुना सालेह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ने अपनी कौम से फ़रमाया :

وَقَالَ لِقَوْمٍ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِي
وَأَنْصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُحِبُّونَ
التَّصَحُّينَ ﴿٢٩﴾ (प. ८, अ. २४: २९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और कहा ऐ मेरी कौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम खैरख्वाहों के गर्जी (पसन्द करने वाले) ही नहीं ।

﴿4﴾ ﷺ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को हुक्म इरशाद फ़रमाया :

أَدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ
وَالْبُوعْظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِ نَهْمَ

तर्जमए कन्जुल ईमान : अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ पक्की तदबीर

بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ
أَعْلَمُ بِسَنِّ ضَلِّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ
أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

(प १२, النحل: १२५)

और अच्छी नसीहत से और उन से
उस तरीके पर बहस करो जो सब से
बेहतर हो बेशक तुम्हारा रब खूब जानता
है जो उस की राह से बहका और
वोह खूब जानता है राह वालों को ।

वा'जो नसीहत और हबीबे खुदा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरवरे काएनात, फ़ख़रे मौजूदात
ﷺ ने हुक्मे बारी तआला पर अमल करते हुवे वा'जो
नसीहत को कमाल की बुलन्दियों पर पहुंचा दिया । जैसा कि दा'वते
इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 649 सफ़हात
पर मुश्तमिल किताब हिकायतें और नसीहतें सफ़हा 4 पर है : हुजूर
नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम ﷺ के वा'जो नसीहत का
अन्दाज़ इन्तिहाई दिल नशीन हुवा करता । कभी खौफ़े खुदा का बयान
होता तो कभी रहमते इलाही की बिशारतें, कभी जन्नत की खुश ख़बरियां
सुनाते तो कभी दोज़ख़ से डराते और कभी साबिका उम्मतों के हालात से
आगाह फ़रमाते तो कभी आने वाले फ़ितनों की ख़बर इरशाद फ़रमाते ।
अल गरज़ कलाम हाज़िरीन की हालत और वक्त के तकाज़े के ऐन
मुताबिक़ होता । चुनान्चे,

दीन सशपा नसीहत है

शहनशाहे मदीना, करारे कल्बो सीना ﷺ का
फ़रमाने आलीशान है : दीन नसीहत है । सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ﷺ ! किस के लिये ?
 इरशाद फ़रमाया : **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये, उस की किताब के
 लिये, उस के रसूल के लिये, मुसलमान अइम्मा के लिये और आम
 मुसलमानों के लिये ।⁽¹⁾

शर्हें हदीस

शैखुल हदीस हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी
عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفَى जवाहिरुल हदीस में इस हदीसे पाक की शर्ह करते हुवे
 फ़रमाते हैं : हदीस में नसीहत को दीन फ़रमाया गया । इस का मतलब
 येह है कि नसीहत दीन की एक बहुत ही बड़ी और निहायत ही अज़ीम
 ख़स्लत है, गोया कि येह दीन का दारो मदार है और दीन की इमारत का
 एक मज़बूत व **मुस्तहक़म** सुतून है । जिस तरह एक हदीस में येह
 इरशाद फ़रमाया गया कि **اَلْحُجُّ عَرَفَةٌ** या'नी हज अरफ़ा है । तो इस का
 मतलब येही है कि यूं तो अफ़अल व अरकाने हज चन्द चीज़ें हैं मगर
 हज का **इन्तिहाई** अहम रुक़ जुल हिज्जा की नौ तारीख़ को मैदाने
 अरफ़ात में वुकूफ़ करना (ठहरना) है । इस तरह इस हदीस का मतलब
 भी येही है कि यूं तो दीन के ख़साइल बहुत ज़ियादा हैं मगर दीन की
 तमाम ख़स्लतों में नसीहत एक बहुत ही अज़ीमुश्शान और निहायत
 ही अहम्मियत वाली ख़स्लत है बल्कि दर हकीक़त येह ऐसी शानदार
 ख़स्लत है जो दीन की बहुत सी ख़स्लतों की न सिर्फ़ जामेअ है
 बल्कि अक्सर ख़साइले इस्लाम का दारो मदार भी इस पर है ।

.....مسلم، كتاب الإيمان، باب بيان أن الدين النصيحة، ص ٢٢، حديث: ٩٥

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

चुनान्चे, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने नसीहत की इस अहम्मियत को सुन कर दरबारे रिसालत में अर्ज की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! किस के लिये खैरख्वाही करना दीन की एक अहम और आ'ज़म ख़स्लत है ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : पांच के लिये : **﴿1﴾ अल्लाह** तआला के लिये **﴿2﴾** उस की किताब के लिये **﴿3﴾ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के लिये **﴿4﴾** मुसलमानों के इमामों के लिये **﴿5﴾** अम मुसलमानों के लिये ।

अब हर एक के लिये खैरख्वाही की अलग अलग तफ़्सील मुलाहज़ा फ़रमाइये कि इन में से हर एक के लिये खैरख्वाही किस किस तरह होगी ? चुनान्चे, इमाम मुह्युद्दीन अबू ज़करिया यहूया बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيم शर्हे मुस्लिम में फ़रमाते हैं :

अन्नसीहतु लिल्लाह

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये नसीहत का मतलब येह है कि **﴿1﴾ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात पर ईमान लाएं । **﴿2﴾** उस की तौहीद पर सिद्के दिल से ईमान ला कर ज़बान से इक़रार व ए'लान करें । **﴿3﴾** उस की ज़ात व सिफ़ात में शिर्क व इल्हाद से बराअत व बेज़ारी का इज़हार करें । **﴿4﴾** उस की इताअत व फ़रमां बरदारी पर कमरबस्ता हो कर उस की मा'सियतों से एहतितराज़ व इजतिनाब करें । **﴿5﴾** उस के मुहिब्बीन से महब्बत, उस के दुश्मनों से बुग़्जो नफ़रत और उस की वह्दानियत के मुन्किरों से जिहाद करें । **﴿6﴾** उस की दी हुई ने'मतों का ए'तिराफ़ कर के अपने दिल, अपनी ज़बान और अपने

आ'जा से उस का शुक्र बजा लाएं। ❁ तमाम इबादात इख़्लास के साथ अदा करें। ❁ उस की भेजी हुई मुसीबतों पर सब्र कर के उस की हम्द करें। ❁ नीज खुद अमल करने के साथ साथ दूसरों को भी मजकूर तमाम औसाफ़ की दा'वत दें और उन्हें बजा लाने की तरगीब दिलाएं।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ मजीद फ़रमाते हैं कि याद रखिये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस ख़ैरख़्वाही करने का नफ़ा व फ़ाएदा दर हकीकत बन्दे ही को मिलेगा। क्यूंकि खुदा के लिये ये ख़ैरख़्वाही कर के हकीकत में बन्दा अपने ही लिये ख़ैरख़्वाही करता है, वरना **अल्लाह** तअ़ाला अपने बन्दों की ख़ैरख़्वाही से ग़नी व मुस्तग़नी और बे नियाज़ है। जैसा कि कुरआने करीम में **अल्लाह** तअ़ाला ने बार बार अपने इस फ़रमान का ए'लान फ़रमाया है कि (پ ۳، آل عمران: ۹۷) **فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ** या'नी **अल्लाह** तअ़ाला तमाम जहान वालों से बे नियाज़ है।

अन्नशीहतु लिक्ताबिल्लाह

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब के साथ ख़ैरख़्वाही का मतलब ये है कि ❁ बन्दा कुरआने मजीद पर ये ईमान लाए कि वो **अल्लाह** का कलाम और उसी की तरफ़ से नाज़िल शुदा है। ❁ **मख़्लूक** के कलाम से कुछ भी उस के मुशाबेह नहीं बल्कि ये ए'तिकाद रखे कि मख़्लूक में कोई उस की मिस्ल व नज़ीर लाने पर

कादिर नहीं। ❀ फिर इसी अकीदे के साथ इस किताब की ता'जीम व तकरीम करे और ऐसी तिलावत करे जैसे तिलावत का हक है या'नी निहायत अहसन अन्दाज़ और खुशूओ खुजूअ और इख़्लास के साथ तिलावत करे और तजवीदो क़िरात का ख़याल रखे। ❀ उस के अवामिर व नवाही पर सिद्दके दिल से ईमान ला कर उस पर अमल करे और उस की ता'लीम व तअल्लुम की ताक़त भर कोशिश करता रहे। ❀ जो कुछ उस में है उस की तस्दीक़ करे। ❀ उस के उलूम और मिसालों की समझ हासिल करे। ❀ उस के मवाइज़ पर ए'तिबार और अजाइबात में ग़ौरो फ़िक्र करे। ❀ उस के उलूम की तब्लीग़ो इशाअत करे और लोगों को कुरआनी अहक़ाम और कुरआन में मौजूद ख़ैरख़्वाही पर दलालत करने वाली जुम्ला बातों पर अमल करने की तरगीब दिलाए।

अन्नशीहतु लिःशूलिल्लाह

अल्लाह عزّوجلّ के रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के लिये ख़ैरख़्वाही व नसीहत का मफ़हूम येह है कि ❀ आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को ख़ातमुन्नबियीन मान कर उन की रिसालत की तस्दीक़ करे। ❀ जो कुछ आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** लाए हैं दिल से उस की तस्दीक़ और ज़बान से उस का इक़रार व ए'लान करे। ❀ आप के तमाम अहक़ामात या'नी अम्र व नहय की इताअत व फ़रमां बरदारी करे। ❀ आप के

दीन की मदद करे। ❁ आप की ता'जीमो तौकीर करे और अपनी जान से बढ़ कर आप से महबूबत करे। ❁ आप की सुन्नतों पर खुद अमल कर के आप की दा'वत व शरीअत की एक एक बात आप की ज़ातो सिफ़ात, आप की सूरत व सीरत, आप के अस्हाब, आप की अज़वाज व औलाद बल्कि हर उस चीज़ से महबूबत व उल्फ़त रखे जिस का खुदा के रसूल ﷺ से तअल्लुक हो। ❁ उन के दुश्मनों से दुश्मनी और उन के दोस्तों को दोस्त रखे। ❁ बद मज़हबों से बचे। ❁ आप की इज़ज़तो अज़मत के लिये अपनी जान, अपना माल, अपनी आल व औलाद को आप पर कुरबान कर देने का ज़ब्बा रखे।

अन्नशीहतु लिअइम्मतिल मुस्लिमीन

अइम्मए दीन के साथ नसीहत व खैरख़ाही येह है कि मुसलमानों का अमीरुल मोमिनीन जब तक हक़ पर काइम रहे और वोह उन को **अल्लाह** व रसूल ﷺ की इताअत का हुक्म देता रहे तमाम मुसलमानों पर लाज़िम है कि ❁ उस अमीरुल मोमिनीन की बैअत पर काइम रहें ❁ उस की इताअत व फ़रमां बरदारी करते रहें ❁ उस का दिल से इकराम व एहतिराम भी करते रहें ❁ हरगिज़ हरगिज़ उस के ख़िलाफ़ बगावत करें न उस के अहक़ाम की ना फ़रमानी करें ❁ बल्कि उस की इक़्िदा में नमाज़ पढ़ें ❁ उस के हुक्म पर कुफ़्फ़ार से जिहाद करें और ❁ अपने

मालों की ज़कात और उश्र वगैरा उस के बैतुल माल में देते रहें और ❀ हर तरह उस की मुआवनात करें। हां अगर खुदा न ख़्वास्ता कोई अमीरुल मोमिनीन **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के ख़िलाफ़ कोई हुक्म दे तो मुसलमानों पर उस की इताअत लाज़िम नहीं, क्योंकि हुज़ूरे अक़दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमान है :
 ① لَا طَاعَةَ لِمَخْلُوقٍ فِي مَعْصِيَةِ الْخَالِقِ- या'नी ख़ालिके काएनात की मा'सियत और ना फ़रमानी में किसी मख़्लूक की इताअत जाइज़ नहीं।

येह मफ़हूम उस सूरत में है जब अइम्मए मुस्लिमीन से मुराद अरबाबे इक्तिदार या'नी अमीरुल मोमिनीन और खुलफ़ा हों और अगर उन से मुराद इलमाए दीन व अइम्मए मुज्ताहिदीन हों तो उन की ख़ैरख़्वाही का मतलब येह होगा कि ❀ तमाम मुसलमान इलमाए दीन का इकराम व एहतिराम करें ❀ दीनी मसाइल में उन पर ए'तिमाद कर के उन के बताए हुवे फ़तावा और मसाइल पर अमल करें ❀ कभी हरगिज़ हरगिज़ उन की बे हुर्मती न करें ❀ बल्कि हर वक़्त उन के अदबो एहतिराम को मल्हूज़ रखें और ❀ उन की नुस्स्त व हिमायत और इमदाद व इआनत पर कमरबस्ता रहें।

अन्नसीहतु लिअाम्मतिल मुस्लिमीन

आम्मतुल मुस्लिमीन की ख़ैरख़्वाही येह है कि ❀ हर औरत

① مشكاة الصابح، كتاب الامارة والقضاء، الفصل الثاني، ٨/٢، حديث: ٣٦٩٦

दूसरी औरत को अपनी इस्लामी बहन समझे ❀ हर इस्लामी बहन को हर किस्म की तकलीफों से अपनी ताकत भर बचाए रखे । ❀ हर इस्लामी बहन के लिये वोही पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करती है । ❀ जिन चीजों को अपने लिये नापसन्द करे दूसरी इस्लामी बहनों के लिये भी नापसन्द जाने । ❀ हर इस्लामी बहन दूसरी इस्लामी बहन पर शफीक बन कर उस को अच्छी बातों का हुक्म देती रहे और बुरी बातों से रोकती रहे । ❀ हर इस्लामी बहन दूसरी इस्लामी बहन के खून, उस के मालो जान और इज्जतो आबरू की हिफाजत करे । ❀ हर कम उम्र कम सिन इस्लामी बहन खुद से बड़ी व उम्र रसीदा इस्लामी बहनों की ता'जीमो तौकीर करे और हर बड़ी व उम्र रसीदा इस्लामी बहन अपने से छोटी इस्लामी बहनों पर शफकत व रहमत करे । ❀ कोई इस्लामी बहन किसी इस्लामी बहन को न ईजा दे, न धोका दे, न हसद करे । बल्कि जहां तक हो सके हर इस्लामी बहन दूसरी इस्लामी बहनों की मदद करे और उन की भलाई और खैरख्वाही के लिये कोशिश करती रहे ।⁽¹⁾

नसीहत मुसलमान का हक है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नसीहत व खैरख्वाही का तअल्लुक हुक्कुल इबाद से है । जैसा कि एक रिवायत में है कि सरकारे

[1].....जवाहिरुल हदीस, स. 97 ता 100 बित्तसर्रफ

شرح صحيح مسلم للنووي، كتاب الإيمان، باب بيان أن الدين النصيحة، المجلد الاول،
٣٥/٢-٣٦، تحت الحديث: ٩٥ (ملقطاً)

मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुसलमान के मुसलमान पर हुक्क का ज़िक्र करते हुवे इरशाद फ़रमाया : मुसलमान के मुसलमान पर छे हक़ हैं। अर्ज़ की गई : वोह छे हक़ कौन से हैं ? इरशाद फ़रमाया :

- ﴿1﴾ ➡ जब तुम किसी मुसलमान से मिलो तो सलाम करो ।
- ﴿2﴾ ➡ जब वोह तुम्हें दा'वते त़आम दे तो उस की दा'वत क़बूल करो ।
- ﴿3﴾ ➡ जब तुम से नसीहत त़लब करे तो उसे नसीहत करो ।
- ﴿4﴾ ➡ जब छीक़े और الْحَمْدُ لِلَّهِ पढ़े तो يَرْحَمُكَ اللهُ कह कर) उसे ज़वाब दे ।
- ﴿5﴾ ➡ जब वोह बीमार पड़े तो उस की इयादत करो ।
- ﴿6﴾ ➡ और जब वोह फ़ौत हो जाए तो उस के जनाज़े के साथ जाओ ।⁽¹⁾

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान हदीस के इस जुम्ले **وَإِذَا اسْتَضْحَكَ فَانْمُحْ** की शर्ह में फ़रमाते हैं : (जब) तुम से कोई मश्वरा करे तो अच्छा मश्वरा दो, अगर शरई मस्अला पूछे तो ज़रूर बताओ । या'नी ख़ालिस अच्छी राए दो जिस में बुराई का शाइबा न हो ।⁽²⁾

नसीहत का हुक्म

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हज़रते सय्यिदुना शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي नसीहत का हुक्म बयान करते हुवे

[1].....مسلم، كتاب السلام، باب من حق المسلم للمسلم رد السلام، ص ٨٥٤، حديث: ٢١٢٢

[2]....मिरआतुल मनाजीह, बीमार पुर्सी और बीमारी के सवाब का बाब, पहली फ़स्ल,

2 / 404 मुल्तक़तून ।

फरमाते हैं : नसीहत आम हालात में सुन्नत है मगर जब कोई नसीहत की बात सुनने की ख्वाहिश ज़ाहिर करे तो फिर उसे नसीहत करना वाजिब व ज़रूरी है ।⁽¹⁾ इसी तरह पन्द्रहवीं सदी की अज़ीम इल्मी व रूहानी शख्सियत, शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी ज़ियाई **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 616 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **नेकी की दा'वत** सफ़हा 395 पर फरमाते हैं : बेशक सुन्नतों भरा बयान करना कारे सवाब और बहुत बड़ी सआदत की बात है मगर येह ज़ेहन में रहे कि वा'जो नसीहत पर मन्नी बयान करना मुस्तहब काम है, अगर नहीं किया तो कुछ गुनाह नहीं मगर किसी को गुनाह करते देखा और गुमान ग़ालिब है कि उस को बताएगा तो बाज़ आ जाएगा तो कई घन्टों के बयान के मुक़ाबले में उस को गुनाह से मन्अ करने में ज़ियादा सवाब है क्यूंकि अब उस को मन्अ करना फ़र्ज़ है और मन्अ न करने वाला गुनाहगार और अज़ाबे नार का हक़दार है । जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअत** जिल्द 3 सफ़हा 615 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ** फरमाते हैं : अगर ग़ालिब गुमान येह है कि येह उन (बुराई करने वालों) से कहेगा

..... اشعة المعات مترجم، كتاب الجنائز، عيادت مريض اور... الخ، پہلی فصل، ۲/۳۹

तो वोह इस की बात मान लेंगे और बुरी बात से बाज़ आ जाएंगे तो
 أَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ (या'नी अच्छाई का हुक्म करना) वाजिब है, इस (या'नी
 किसी को बुराई करता देखने वाले) को (बुराई से मन्अ करने से) बाज़
 रहना जाइज़ नहीं।⁽¹⁾

जो नेकी की दा'वत की धूमें मचाए

मैं देता हूँ उस को दुआए मदीना⁽²⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

रोज़ाना वा'जो नसीहत पर मब्नी बयान करना कैसा ?

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ लोगों
 को हर जुमा'रात को वा'जो नसीहत फ़रमाया करते थे। एक शख्स ने
 अर्ज़ की : ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! मेरी ख़्वाहिश है कि आप रोज़ाना वा'जो
 नसीहत फ़रमाया करें। तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : मुझे
 ऐसा करने से जो चीज़ बाज़ रखती है वोह येह है कि मैं तुम्हें मलाल व
 उक्ताहट में मुब्तला करने को नापसन्द करता हूँ और मैं नसीहत करने में
 तुम्हारी इस तरह हिफ़ाज़त व रिआयत करता हूँ जिस तरह हुज़ूर
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मलाल व उक्ताहट के ख़दशे के पेशे नज़र हमारी
 हिफ़ाज़त फ़रमाते थे।⁽³⁾ इसी तरह हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन
 अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि लोगों को हफ़्ते में एक बार वा'ज

[1].....नेकी की दा'वत, स. 395 ता 396

[2].....वसाइले बख़्शिश, स. 152

[3].....بخاری، کتاب العلم، باب من جعل لاهل العلم ایاماً معلومة، ص 91، حدیث: 40

सुनाओ अगर ज़ियादा की तमन्ना हो तो दो बार और अगर बहुत ज़ियादा चाहो तो तीन बार।⁽¹⁾ इसी तरह उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने एक बार वाइजे मदीना हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी साइब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को नसीहत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : लोगों को बरोजे जुमुआ (या'नी हफ़्ते में) एक बार वा'ज़ सुनाओ अगर ज़ियादा की तमन्ना हो तो दो बार और अगर बहुत ज़ियादा चाहो तो तीन बार।⁽²⁾

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا मिश्कात शरीफ़ में हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास عَلَيْهِمَا رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ से मरवी इसी किस्म की एक रिवायत की शर्ह में फ़रमाते हैं : रोज़ाना वा'ज़ न सुनाओ हफ़्ते में एक या दो या तीन बार सुनाओ, फिर भी इतनी देर वा'ज़ न कहो कि लोग सैर हो जाएं बल्कि उन का शौक़ बाकी हो कि ख़त्म कर दो سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ क्या नफ़ीस ट्रेनिंग है उन हज़रात की मजलिसें गोया नॉर्मल स्कूल भी थीं, जिन में सीखना सिखाना सब बताया जाता था। इस से बिला ज़रूरत चार चार घन्टे वा'ज़ कहने वाले वाइज़ीन इब्रत पकड़ें। ख़याल रहे कि येह इरशाद वहां है जहां लोग उक्ताते हों लेकिन अगर शाइक़ हैं तो न रोज़ वा'ज़ करना बुरा न देर तक (करना बुरा, जैसा कि) मद्रसों में ता'लीमे कुरआन के दर्स रोज़ाना होते हैं।

[1] بخاری، کتاب الدعوات، باب ما یکره من السجع... الخ، ص ۱۵۲۵، حدیث: ۲۳۳۷

[2] مسند احمد، حدیث السيد عائشة، ۱۰/۵۰۲، حدیث: ۲۶۵۷۱

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक बार फ़त्र से मग़रिब तक वा'ज़ फ़रमाया, अ़लम को चाहिये कि लोगों के शौक़ का अन्दाज़ा रखे।⁽¹⁾

वा'ज़ में त़वालत इख़ितयार करना कैसा ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वा'ज़ो नसीहत पर मन्नी बयानात में बेजा त़वालत से बचिये और हमेशा मुख़्तसर और पुर मग़ज़ बातें कीजिये और दूसरों की उक्ताहट का भी ख़याल रखिये जैसा कि मरवी है कि एक दिन एक शख़्स ने खड़े हो कर बहुत बातें कीं या'नी बहुत लम्बी त़क़रीर की जो निहायत फ़सीहो बलीग़ थी ताकि लोग उस के कमाल के क़ाइल हो जाएं, मगर लोग उस की दराज़ त़क़रीर से घबरा गए और उक्ताहट महसूस करने लगे, इस पर हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़स رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : अगर येह अपने कलाम में इख़ितसार करता तो अच्छा होता। मैं ने रहमते अ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुना है कि मैं मुनासिब समझता हूं या मुझे हुक्म दिया गया है कि कलाम में इख़ितसार किया करूं क्यूंकि मुख़्तसर करना बेहतर है।⁽²⁾ या'नी हर कलाम में खुसूसन वा'ज़ो नसीहत में इख़ितसार मुफ़ीद इस का असर ज़ियादा होता है, **خَيْرُ الْكَلَامِ مَا قَلَّ وَدَلَّ** (अच्छा कलाम वोही है जो मुख़्तसर और मुदल्लल हो) लोगों को याद ख़ूब रहता है।⁽³⁾

[1].....मिरआतुल मनाजीह, इल्म की किताब, तीसरी फ़स्ल, 1 / 217

[2]..... ابو داود, کتاب الادب، باب ما جاء في المتشدد في الكلام، ص ٤٨٣، حديث: ٥٠٠٨

[3].....मिरआतुल मनाजीह, त़क़रीर व शे'र का बयान, दूसरी फ़स्ल, 6 / 440

नसीहत के ग़लत और दुरुस्त तरीक़े

ख़ुश तबई में मग़न लोगों के वा'ज़ करना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वा'ज़ो नसीहत पर मन्नी बयानात करना अगर्चे एक अच्छा काम है मगर इस हवाले से हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की येह नसीहत याद रखिये कि मैं तुम्हें ऐसा करते हुवे न देखूँ कि लोग अपनी खुश तबई की बातों में मसरूफ़ हों तो तुम उन की बात काट कर अपनी तक़रीर शुरूअ कर दो कि वोह परेशान हो कर रह जाएं। बल्कि ख़ामोशी इख़्तियार करो और अगर वोह तुम से वा'ज़ करने को कहें तो ही करो।⁽¹⁾

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَان फ़रमाते हैं : येह एक नसीहत है जिस पर वाइज़ को कारबन्द रहना चाहिये कि जहां लोग कलाम या काम में मशगूल हों तो उन के कलाम व काम बन्द न कर दो। वा'ज़ शुरूअ न कर दो कि इस सूरत में अगर्चे वोह कुछ न कहें मगर दिल में तक्लीफ़ महसूस करेंगे, नीज़ इस में इल्म और आलिम की इहानत भी है। इस से वोह वाइज़ीन इब्रत पकड़ें जो तेज़ लाउड स्पीक़रों पर आधी आधी रात तक तक़रीरें कर के मज़दूरों, बीमारों को परेशान करते हैं, सारी बस्ती को जगाते हैं। देखा गया है कि फिर अ़वाम हुकूमत को दर ख़्वासतें देते हैं जिस पर दफ़अ 144 नाफ़िज़

[1] بخاری، کتاب الدعوات، باب ما یکره من السجع... إلخ، ص ۱۵۶، حدیث: ۶۳۳۷

की जाती है। कितनी बड़ी ज़िल्लत और इल्म की तौहीन है, अगर येह वाइज़ीन इसी फ़रमान पर अमल करते तो येह नौबत क्यूं आती ! हुक्काम और अप्सरान खुद उन से इल्म सीखने उन की खिदमत में हाज़िर होते।⁽¹⁾

गुनाहों पर किसी को आर दिलाना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नसीहत अगर्चे कारे सवाब है मगर वोही नसीहत तासीर का तीर बन कर दूसरों के दिलों में पैवस्त होती है जिस का तरीका दुरुस्त हो, क्यूंकि नसीहत से जहां नेकियां करने की रग़बत पैदा होती है वहीं दिलों में गुनाहों से नफ़रत भी पैदा होती है। मगर याद रखिये ! किसी को उस के गुनाहों पर आर दिलाते हुवे नसीहत करना दुरुस्त नहीं। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मोमिन पर्दा पोशी और नसीहत करता है जब कि इस के बर अक्स फ़ासिको फ़ाज़िर बदनाम करता और शर्म व आर दिलाता है।⁽²⁾ और किसी को उस के गुनाहों पर आर दिलाने के मुतअल्लिक़ सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : जो अपने मुसलमान भाई को उस के (किसी ऐसे) गुनाह के ज़रीए आर दिलाए (जिस से वोह तौबा कर चुका हो) तो वोह आर दिलाने वाला उस

[1].....मिरआतुल मनाजीह, इल्म की किताब, तीसरी फ़स्ल, 1 / 217

[2].....جامع العلوم والحكم في شرح خمسين حديثاً من جوامع الكلم، الحديث السابع الدين

النصيحة، ۲۲۵/۱

वक्त तक नहीं मरेगा जब तक खुद वोह गुनाह न कर ले।⁽¹⁾

किसी के सामने नसीहत करना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! किसी को डांट डपट कर या सब के सामने नसीहत करने से भी नसीहत पुर तासीर नहीं रहती। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : जिस ने अपने भाई को सब के सामने नसीहत की उस ने उसे ज़लील किया और जिस ने तन्हाई में नसीहत की उस ने उसे आरास्ता किया।⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : दोस्त का एक हक़ येह भी है कि उसे अच्छी बात बताई जाए और नसीहत की जाए। क्यूंकि दोस्त को इल्म की भी इतनी ही हाज़त होती है जिस क़दर कि माल की। अगर आप का सीना इल्म के ज़ेवर से आरास्ता है तो आप पर लाज़िम है कि अपने दोस्त को हर वोह बात बताइये जिस की उसे दीनो दुन्या में हाज़त है। इल्म सिखाने और रहनुमाई के बा'द अगर वोह इल्म के मुताबिक़ अमल न करे तो अब आप पर लाज़िम है कि उसे नसीहत कीजिये, वोह जिन कामों में मुब्तला है उन की आफ़ात और तर्क करने के फ़वाइद बताइये और उन कामों की वजह से दुन्या व आख़िरत में होने वाले नुक़सानात बयान कर के भी उसे डराइये ताकि वोह

1.....ترمذی، ابواب صفة القيامة والرفائق والورع، ۲۸-باب، ص ۵۹۲، حدیث: ۲۵۰۵

2.....تنبيه الغافلین، باب الامر بالمعروف والنهي عن المنکر، ص ۲۸

अपनी मजमूम हरकात से बाज़ आए, उस के उयूब पर उसे तम्बीह कीजिये, बुरे अफ़्आल की बुराई और अच्छे अफ़्आल की अच्छाई उस के दिल में रासिख़ कीजिये, लेकिन येह तमाम काम तन्हाई में कीजिये कि उस पर कोई और मुत्तलअ न हो क्यूंकि जो कलाम लोगों के मज्मअ में किया जाए उसे डांट डपट और बे इज़्ज़ती शुमार किया जाता है और जो बात तन्हाई में की जाए वोह शफ़क़त और नसीहत समझी जाती है। हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : जिस ने अपने मुसलमान भाई को तन्हाई में समझाया उस ने उसे नसीहत की और जीनत बख़्शी और जिस ने सब के सामने समझाया उस ने उसे रुस्वा व बदनाम किया।⁽¹⁾

दुरुस्त तरीक़े से की गई नसीहत की तासीर

इमामे अजल्ल हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने अपनी किताब कुतूल कुलूब में नसीहत के मुतअल्लिक़ जो कुछ नक्ल फ़रमाया है, कुछ तसरूफ़ के साथ आप की ख़िदमत में पेश है : चुनान्वे, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : नसीहत का दुरुस्त तरीक़ा येह है कि जिस की ख़ैरख़्वाही मक्सूद हो उसे तन्हाई में नसीहत कीजिये, लोगों के सामने डांट डपट कीजिये न किसी ग़ैर को उस का ऐब बताइये, जैसा कि एक कौल है : मोमिनो की नसीहतें उन के कानों में

❏ إحياء علوم الدين، كتاب آداب الالفة والاخوة، الباب الثاني في حقوق الاخوة والصحبة،

الحق الرابع، ٢/٢٢٥ بتصرف

होती हैं। हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन बुर्कान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ फ़रमाते हैं : मुझे हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ ने फ़रमाया : मैं जिस बात को नापसन्द करता हूँ वोह मेरे सामने कहा करो, क्योंकि कोई शख्स अपने भाई का ख़ैरख़्वाह उस वक़्त ही शुमार होता है जब वोह उस की नापसन्दीदा बात उस के मुंह पर कह दे।⁽¹⁾

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर कोई आप को नसीहत करे और इस वजह से आप के दिल में उस की महबबत बढ़े तो गोया आप उस को अपनी ख़ैरख़्वाह समझती हैं और अगर ना गवारी महसूस करें तो गोया आप उसे अपनी ख़ैरख़्वाही नहीं समझतीं।

किसी बुजुर्ग का फ़रमान है कि मेरे नज़दीक महबूब तरीन वोह शख्स है जो मुझे मेरे उयूब से आगाह करे। इसी तरह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने भाइयों की तरफ़ से उयूब पर आगाह करने को उन की तरफ़ से तोहफ़ा ख़याल करते और फ़रमाते : **اَبْرَأَهُ** उस शख्स पर रहम फ़रमाए जो अपने भाई को ऐब पर आगाह करने की सूरत में उसे तोहफ़ा देता है। हज़रते सय्यिदुना मिस्अर बिन किदाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام से अर्ज की गई : क्या आप उस आदमी को पसन्द करते हैं जो आप को आप के उयूब से आगाह करे ? तो आप ने फ़रमाया : अगर वोह तन्हाई में मुझे नसीहत करे तो ठीक है और अगर लोगों के सामने समझाए तो नहीं।⁽²⁾

❏ قوت القلوب، الفصل الرابع والاربعون في الاخوة في الله... الخ، ٢/٣٤٠

❏ المرجع السابق

नसीहत व फज़ीहत में फ़र्क

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इमामे अजल्ल हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : सलफ़े सालिहीन رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ الْبَرِّين का तरीक़ा येह था कि जब वोह किसी की कोई नापसन्दीदा हरकत देखते तो तन्हाई में उसे समझाते या इस हवाले से उसे मक्तूब लिखते, क्यूंकि नसीहत व फ़ज़ीहत में येही फ़र्क है या'नी नापसन्दीदा बात पर तन्हाई में समझाना नसीहत और सब के सामने समझाना फ़ज़ीहत (रुस्वाई) कहलाता है और ऐसा बहुत ही कम होता है कि लोगों के सामने किसी को समझाते हुवे रिज़ाए इलाही की निय्यत भी दुरुस्त हो, क्यूंकि येह इन्तिहाई बुरा तरीक़ा है ।

इताब व तौबीख़ में फ़र्क

मज़ीद फ़रमाते हैं कि इताब और तौबीख़ में भी फ़र्क है । इताब वोह है जो तन्हाई में किया जाए और तौबीख़ (या'नी डांट डपट) हमेशा लोगों के सामने की जाती है । येही वज्ह है कि कियामत के रोज़ **اَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ अपनी पनाह और सिफ़ते सत्तारी के साए में मोमिन पर इताब करेगा और उसे उस के गुनाहों पर पोशीदा तौर पर आगाह करेगा । उन में से बा'ज़ लोगों को जन्नत में ले जाने वाले फ़रिश्तों को उन का मोहर बन्द नामए आ'माल दिया जाएगा जो वोह उन्हें उस वक़्त देंगे जब वोह जन्नत में दाख़िल होने के क़रीब होंगे ताकि वोह उन्हें पढ़ लें । मगर जिन लोगों पर तौबीख़ (या'नी डांट डपट व फिटकार) लाज़िम हो चुकी होगी

उन्हें सब लोगों के सामने पुकारा जाएगा और यूँ तमाम अहले महशर पर उन की रुस्वाई मख़्फ़ी न रहेगी बल्कि उन के अपने आ'जाए जिस्मानिया उन के ख़िलाफ़ गवाही देंगे तो उन का अज़ाब दो चन्द हो जाएगा ।⁽¹⁾

खैरख़्वाही महब्बत की अलामत है

बसा औकात एक इस्लामी बहन आप से महब्बत करती हो और दूसरी आप से डरती हो तो जो आप को चाहने वाली होगी वोह महब्बत की वजह से हर हाल में आप की खैरख़्वाह रहेगी, ख़्वाह आप उस के सामने मौजूद हों या न हों, मगर जो इस्लामी बहन आप से डरती होगी मुमकिन है कि वोह आप की मौजूदगी में तो खैरख़्वाही से काम ले मगर अदम मौजूदगी में खैरख़्वाही न चाहे ।⁽²⁾ चुनान्चे,

मोमिन तो मोमिन का आईना है

सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : मोमिन, मोमिन का आईना है और मोमिन, मोमिन का भाई है कि उस से तंगी दूर करता और उस की अदम मौजूदगी में उस की हिफ़ाज़त करता है ।⁽³⁾

[१] قوت القلوب، الفصل الرابع والاربعون في الاخوة في الله... الخ، २/ ३८१

[२] جامع العلوم والحكم في شرح خمسين حديثاً من جوامع الكلم، الحديث السابع الدين

النصيحة، १/ २१९، مفهوماً

[३] ابوداود، كتاب الادب، باب في النصيحة والحيطة للمسلم، ص ८८، حديث: २११८

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَائِكَةِ इस हदीसे पाक की शर्ह बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : मोमिन
 की शान येह है कि अपने मुसलमान भाई की पसे पुश्त ख़ैरख़्वाही करे
 हत्ता कि अगर कोई उस की ग़ीबत करे तो या उसे ग़ीबत से रोक दे या
 उस का जवाब दे कर मोमिन की इज़्ज़त बचा ले या उसे समझा बुझा
 कर उस की इस्लाह करे या उस के लिये इस्लाह की दुआ करे।⁽¹⁾

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस फ़रमान के मुखातब सिर्फ़
 मर्द हज़रात ही नहीं, बल्कि तमाम मुसलमान ख़वातीन भी हैं। जैसा कि
 हदीसे मुबारका से मा'लूम हुवा कि हम सब आपस में इस्लामी बहनें हैं
 और एक दूसरी के लिये आईने की हैसियत रखती हैं। मदनी माहोल के
 साए तले रह कर हम एक दूसरी के ज़रीए वोह बातें भी जान सकती हैं
 जो खुद अपनी ज़ात में नहीं देख सकतीं। मतलब येह है कि हम अपने
 उन उयूब से भी ब ख़ूबी आगाह हो सकती हैं जिन की हमें पहचान नहीं
 और **अल्लाह** के फ़ज़लो करम से शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत
 دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने हमें दा'वते इस्लामी की सूरत में ऐसा प्यारा मदनी
 माहोल अता फ़रमाया है जो हमें नेकियों की रग़बत और गुनाहों से नफ़रत
 दिलाता है अगर इस मदनी माहोल से वाबस्ता न होती तो शायद अपने
 गुनाहों को न जान पातीं। लिहाज़ा हम पर लाज़िम है कि हमेशा एक
 दूसरी की ख़ैरख़्वाह रहें, ख़्वाह मौजूद हों या न हों, यहां तक कि अगर

[1]....मिरआतुल मनाजीह, मख़लूक पर शफ़क़त व रहमत का बयान, दूसरी फ़स्ल,

कोई किसी की गीबत करने लगे तो दूसरी उसे अहसन अन्दाज़ में रोक दे या मुनासिब अन्दाज़ में गीबत करने वाली को जवाब दे कर अपनी इस्लामी बहन की इज़्ज़त बचा ले या समझा बुझा कर उस की इस्लाह करने की कोशिश करे, अगर मुमकिन न हो तो कम अज़ कम उस के लिये इस्लाह की दुआ करे कि खैरख्वाही की निय्यत से किसी की इस्लाह करना बाइसे सवाब है। जैसा कि मज़कूरा मफ़हूम की एक और रिवायत की शर्ह में मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَن फ़रमाते हैं : आईना चेहरे के सारे ऐब व खूबियां ज़ाहिर कर देता है ऐसे ही मुसलमान अपने मुसलमान भाई के ऐब पर उसे मुत्तलअ करता रहे ताकि वोह अपनी इस्लाह करे। ग़रज़ येह कि रुस्वाई करना ममनूअ है इस्लाह करना सवाब। हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते थे कि **अब्लाह** उस पर रहम करे जो मुझे मेरे उयूब पर मुत्तलअ करे। उयूब फ़रमा कर बताया कि हमारा नफ़्स ऐबों का सर चश्मा है या येह मतलब है कि मुसलमानों को चाहिये कि उन मोमिनो के पास बैठा करें जिन के ज़रीए उन्हें अपने उयूब पर इत्तिलाअ हो। आईना इस लिये देखते हैं कि अपने चेहरे के छोटे बड़े दाग़ धब्बे नज़र आ जावें। तबीब के पास इसी लिये जाते हैं कि वहां इलाज हो जावे ऐसे मोमिनो की सोहबत इकसीर है। इस लिये सूफ़िया फ़रमाते हैं कि हमेशा अपने मुरीदों (और) अपने शागिर्दों के पास न बैठो जो हर वक़्त तुम्हारी ता'रीफ़ें ही करते हैं बल्कि कभी कभी अपने मुर्शिदों, अपने उस्तादों, अपने बुजुर्गों के पास

भी बैठो जहां तुम्हें अपनी कमतरी नज़र आवे। हाथी पहाड़ को देख कर अपनी हकीकत को पहचानता है, हमेशा हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अज़मतों में गौर किया करो ताकि अपनी गुनहगारी अपनी कमतरी महसूस होती रहे। मुहक्किनीन सूफ़िया इस हदीस के येह मा'ना करते हैं कि मोमिन जब किसी मुसलमान में ऐब देखे तो समझे कि येह ऐब मुझ में है जो उस के अन्दर मुझे नज़र आ रहा है जैसा आईने में अपने जो दाग़ धब्बे नज़र आते हैं वोह अपने चेहरे के होते हैं न कि आईने के। येह मा'ना निहायत अरिफ़ाना हैं। इस लिये अगर ख़्वाब में हुजुरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की ज़ियारत हो मगर शक़ल मुबारक या लिबास खुशनुमा न हो तो समझ लो कि हमारा अपने दिल का हाल ख़राब है इस्लाह करो।⁽¹⁾

किसी को उस के ऐब से आगाह करना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ैरख़्वाही की निय्यत से किसी को उस के ऐब से आगाह करना यकीनन एक मुश्किल काम है क्योंकि इस में उस के बुरा मान जाने का ख़दशा भी लाहिक़ रहता है, मगर याद रखिये ! किसी की दिल आज़ारी का ख़दशा उस वक़्त होता है जब उसे किसी ऐसे ऐब से आगाह किया जाए जिस को वोह खुद भी जानती हो। (मगर ऐसा भी नहीं कि उस ख़दशे के पेशे नज़र उसे समझाना तर्क कर दिया जाए, बल्कि तन्हाई में समझाने की कोशिश कीजिये) लेकिन

[1].....मिरआतुल मनाजीह, मख़्लूक़ पर शफ़क़त व रहमत का बयान, दूसरी फ़स्ल,

अगर इसे उस के किसी ऐसे ऐब से आगाह किया जाए जिसे वोह नहीं जानती तो येह ऐन शफ़क़त है और उस के दिल को अपनी तरफ़ माइल करना है। इस लिये कि जो आप को किसी ऐसे बुरे काम से ख़बरदार करता है कि जिस के आप मुर्तकिब हों या आप में पाई जाने वाली किसी बुरी आदत से आप को आगाह करता है तो दर हकीक़त वोह आप को पाक करना चाहता है जैसे कोई आप को येह बताए कि आप के कपड़े के नीचे सांप या बिच्छू है। अगर आप इस नसीहत को बुरा जानो ! तो येह आप की कम अक्ली की अलामत होगी। लिहाज़ा याद रखिये ! बुरी सिफ़ात सांप, बिच्छू की मिस्ल हैं जो दुन्या और आख़िरत में हलाक़त का बाइस बनेंगी, येह बुरी सिफ़ात रूह और दिल को काटती हैं और ज़ाहिरी जिस्म को काटने वाली चीज़ों की निस्बत इन के काटने से ज़ियादा तक्लीफ़ होती है और येह जलाने वाली आग से पैदा की गई हैं। मगर अफ़सोस सद अफ़सोस ! बा'ज़ लोगों को ख़ैर की कोई बात बताई जाए तो वोह अपने नासेह (या'नी ख़ैरख़्वाह) को पसन्द की निगाह से नहीं देखते। जैसा कि फ़रमाने बारी तआला है :

﴿٤٩﴾ وَلَكِنْ لَا تُحِبُّونَ النَّصِيحِينَ

(प ८, الاعरात: ५९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मगर तुम ख़ैरख़्वाहों के ग़र्ज़ी (पसन्द करने वाले) ही नहीं।

गोया कि किसी ने इन की हालत के मुतअल्लिक़ क्या ख़ूब कहा है :

नासेहा ! मत कर नसीहत दिल मेरा घबराए है

दुश्मन जानता हूं उसे जो मुझे समझाए है

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

एक और शाइर ने इसी मफहूम को कुछ यूं बयान किया है :

उसे जानते हैं बड़ा अपना दुश्मन
हमारे करे ऐब जो हम पे रोशन
नसीहत से नफरत है, नासेह से अनबन
समझते हैं हम रहनुमाओं को रहज़न

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा किसी को उस के ऐब के मुतअल्लिक नसीहत करना उसी सूरत में अच्छा हो सकता है जब वोह उस ऐब से गाफ़िल हो, लेकिन अगर आप जानती हों कि वोह खुद अपने ऐब से वाकिफ़ है मगर तबई तौर पर मजबूर है, तो अगर वोह अपने जुर्म को छुपाती है तो उस का पर्दा फ़ाश करना मुनासिब नहीं और अगर वोह ज़ाहिर करती है तो नर्मी के साथ नसीहत कीजिये, कभी इशारे किनाए से और कभी सराहतन कहिये, लेकिन इस क़दर कि उसे वहशत न हो और अगर आप को मा'लूम हो कि उस पर नसीहत असर नहीं कर रही और वोह तबई तौर पर इस काम को जारी रखे है तो ख़ामोशी बेहतर है।⁽¹⁾

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान
تفّسیرے نورل یرفان میں فرماتے हैं : वाइज़ व अ़लिम इस
तरीके से वा'ज़ न करे जिस से लोगों में ज़िद पैदा हो जाए और फ़साद व

..... 1] احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفه والاخوة، الباب الثانی فی حقوق الاخوة والصحبہ،

الحق الرابع، ۲/۲۲۶ بتصرف

मार पीट तक नौबत पहुंचे। नीज़ अगर किसी के मुतअल्लिक़ येह क़वी अन्देशा हो कि उसे नसीहत करना और ज़ियादा ख़राबी का बाइस होगा तो न करे।⁽¹⁾

इस्लाह का हसीन अन्दाज़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को जब किसी की कोई ना गवार बात मा'लूम होती तो उस का पर्दा रखते हुवे उस की इस्लाह का येह हसीन अन्दाज़ होता कि यूं इरशाद फ़रमाते : **مَا بَالُ أَقْوَامٍ يَقُولُونَ كَذَا وَكَذَا؟** या'नी लोगों को क्या हो गया जो ऐसी ऐसी बात कहते हैं।⁽²⁾

काश ! हमें भी इस्लाह का ढंग आ जाए, हमारा तो अक्सर हाल येह होता है कि अगर किसी को समझाना भी हो तो बिला ज़रूरते शर्इ सब के सामने नाम ले कर या उसी की तरफ़ देख कर इस तरह समझाएं कि बेचारी की पोलें भी खोल कर रख देंगी, अपने ज़मीर से पूछ लीजिये कि येह समझाना हुवा या उसे ज़लील (DEGRADE) करना हुवा ? इस तरह सुधार पैदा होगा या मज़ीद बिगाड़ बढ़ेगा ?

याद रखिये ! अगर हमारे रो'ब से सामने वाली चुप हो गई या मान गई तब भी उस के दिल में ना गवारी सी रह जाएगी जो कि बुज़ु' कीना और ग़ीबत व तोहमत वगैरा के दरवाज़े खोल सकती है। हज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** फ़रमाती हैं : जिस किसी ने अपनी

[1].....तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह, 7 अल अन्आम, तह़तुल आयत : 107 स. 758, बक़िय्या सफ़हा. 170 मुल्लतक़तून।

[2]..... अबुदौद, क़ाबुल-अल-अरब, बाब फ़ी हसन-अल-अशर, 54, हदीथ: 4888

दीनी बहन को अलानिया नसीहत की उस ने उसे ऐब लगाया और जिस ने चुपके से की तो उसे ज़ीनत बख़्शी ।⁽¹⁾ अलबत्ता अगर पोशीदा नसीहत नफ़अ न दे तो फिर (मौकअ और मन्सब की मुनासबत से) अलानिया नसीहत करे ।⁽²⁾

आदाबे नसीहत

वा'जो नसीहत करने वाली के आदाब

वा'जो नसीहत करने वाली हर मुबल्लिगा को दर्जे ज़ैल आदाब का ख़याल रखना चाहिये :

- ✿✿ तकब्बुर से बचते हुवे हमेशा अपने मालिके हकीकी से हया करती रहे ।
- ✿✿ अपनी हाजत बारगाहे इलाही में पेश करे ।
- ✿✿ सुनने वालियों के वा'जो नसीहत से फ़ाएदा हासिल करने की ख़्वाहिश रखे ।
- ✿✿ अपनी ख़ामियों पर आगाह हो तो अपने नफ़्स को मलामत करे ।
- ✿✿ सुनने वालियों को सलामती चाहने वाली निगाह से देखे ।
- ✿✿ सुनने वालियों की पोशीदा बातों के मुतअल्लिक हुस्ने ज़न रखे ।
- ✿✿ अपनी ज़ात को ता'नो तश्नीअ (या'नी बुरा भला कहलवाने) से बचाने के लिये किसी से कोई चीज़ त़लब न करे ।

1..... شعب الامان، 53-باب في التعاون على البر والتقوى، 1/112، حديث: 121-بتغير

2..... تنبيه الغافلين، باب الامر بالمعروف والنهي عن المنكر، ص 38

- ✿✿ अदब सिखाते हुवे नमी से काम ले ।
- ✿✿ इब्तिदाअन जिसे वा'जो नसीहत करे उस पर नमी करे ।
- ✿✿ जो कहे उस पर खुद भी अमल करने का पुख्ता इरादा करे ताकि दूसरी इस्लामी बहनें उस की बातों से फ़ाएदा हासिल करें ।

वा'जो नसीहत सुनने वाली के आदाब

इसी तरह दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार व दीगर सुन्नतों भरे इजतिमाआत में शामिल हो कर वा'जो नसीहत से मा'मूर दर्सों बयान सुनने वाली हर इस्लामी बहन को चाहिये कि दर्जे ज़ैल आदाब को मल्हूज़ रखे :

- ✿✿ खुशूओ खुजूअ (आजिजी व इन्किसारी) की कैफ़ियत पैदा करने की कोशिश करे ।
- ✿✿ जो कुछ सुने उसे याद रखने की कोशिश करे ।
- ✿✿ वा'जो नसीहत करने वाली के मुतअल्लिक हुस्ने ज़न रखे ।
- ✿✿ मुबल्लिगा की बात के दुरुस्त होने का ए'तिक़ाद रखे ।
- ✿✿ हमेशा ख़ामोश रहने की आदत अपनाए ।
- ✿✿ मुस्तक़िल मिज़ाजी इख़्तियार करे ।
- ✿✿ अपने ग़मों और फ़िक़्रों को मुज्तामअ कर ले (या'नी दुन्यवी ख़यालात में मशगूल न रहे) और दूसरों पर तोहमत लगाने से बचे ।⁽¹⁾

नसीहत के फ़वाइद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वा'जो नसीहत के बे शुमार फ़वाइद हैं : मसलन

✿ इस के ज़रीए कुफ़ार दौलते इस्लाम से मुशरफ़ होते
 ✿ मुसलमानों के दिल ख़ौफ़े खुदा से लबरेज़ और इश्के मुस्तफ़ा से सरशार होते ✿ ईमान को ताज़गी मिलती ✿ इस्लाम की महबूबत में तरक्की आती ✿ नेकियों का ज़ब्बा मिलता ✿ गुनाहों से नफ़रत पैदा होती ✿ सवाब की तलब में इज़ाफ़ा होता ✿ गुनाह से बचने का ज़ेहन बनता और ✿ दीन सीखने सिखाने के लिये राहे खुदा में सफ़र का ज़ब्बा मिलता है ।

अल गरज़ वा'जो नसीहत हर तरह से मुफ़ीद है । जैसा कि फ़रमाने बारी तआला है :

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ

الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾ (प २८, الذّٰرिٰत: ५५)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और
 समझाओ कि समझाना मुसलमानों
 को फ़ाएदा देता है ।

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : अगर समझाना किसी काफ़िर को शरफ़े ईमान का फ़ाएदा दे तो येह मुसलमान ही को नफ़अ देना है क्यूंकि वोह मुसलमान हो चुका है ।⁽¹⁾

वा'जो नसीहत में ज़रूरी उमूर

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वा'जो नसीहत करने वाली हर

..... تفسير كبير، الجزء الثامن والعشرون، سورة الذّٰرِیٰت، تحت الآية: ٥٥، ١٠/٩١

मुबल्लिगा को चाहिये कि नसीहत करने में सिर्फ और सिर्फ रिज़ाए रब्बुल अनाम व खैरुल अनाम ﷺ को पेशे नज़र रखे कि इस से ज़बान में तासीर पैदा होगी। नीज़ नसीहत करने वाली पर ये भी लाज़िम है कि पहले वोह नसीहत को सहीह तरीके से समझे फिर अपनी ज़ात पर नाफ़िज़ करे, इस के बा'द दूसरों को नसीहत करे ताकि उस की नसीहत तासीर का तीर बन कर दिलों में पैवस्त हो।

नीज़ उसे खुश अख़्लाकी का दामन भी हमेशा थामे रहना चाहिये क्योंकि जो मुबल्लिगा खुश अख़्लाक होगी या'नी सलाम में पहल करने और गर्म जोशी से मुसाफ़हा व मुआनका करने की आदी होगी और ख़न्दा पेशानी से मुस्कुरा कर मिलने और गुम ख़्वारी करने वाली होगी, दीगर इस्लामी बहनें आसानी से उस की तरफ़ माइल होंगी और उसे नसीहत करने में किसी मुश्किल का सामना नहीं करना पड़ेगा।

सहबियात के नसीहतें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सहाबियाते तय्यिबात की ज़िन्दगियां फ़रामीने मुस्तफ़ा पर अमल की वजह से हमारे लिये मीनारए नूर की हैसियत रखती हैं, क्योंकि उन की हयाते फ़ानी फ़रामीने मुस्तफ़ा पर अमल की बरकत से हयाते जावेदानी (हमेशा की ज़िन्दगी) में बदल गई।

सआदत बड़ी उस ज़माने की येह थी

कि झुकती थी गर्दन नसीहत पे सब की

न करते थे खुद कौले हक़ से खमोशी

न लगती थी हक़ की उन्हें बात कड़वी

लिहाजा आइये ! नसीहतों के कुछ ऐसे मदनी फूल अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में सजाने की कोशिश करती हैं जिन की बरकत से हमारा सीना भी मदीना बन जाए। नसीहतों के ये मदनी फूल **अब्बाह** **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के प्यारे हबीब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने सहाबियाते तय्यिबात **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को बराहे रास्त अता फ़रमाए या आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने सहाबियाते तय्यिबात **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की मौजूदगी में ये मदनी फूल किसी और को अता फ़रमाए और उन्होंने ने भी इन मदनी फूलों को अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में सजा लिया। चुनान्वे,

सय्यदतुना आइशा सिद्दीका के अताक़्द मदनी फूल

खलीफ़ए अब्वल हज़रते सय्यदुना अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की लख्ते जिगर और हज़रते सय्यदतुना उम्मे रूमान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** की नूरे नज़र उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यदतुना आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** को हिजरत से क़ब्ल मक्कए मुकर्रमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** में हुआ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की जौजियत में आने का शरफ़ हासिल हुवा मगर रुख़सती बा'दे हिजरत मदीनए मुनव्वरा में हुई।⁽¹⁾ आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** फ़रमाती हैं कि एक बार सरकारे मदीना,

..... الطبقات الكبرى، ذكر أزواج رسول الله، ٣١٢٨ - عائشة بنت أبي بكر، ٣٦/٨ ملحقاً

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर में तशरीफ़ लाए तो रोटी का एक टुकड़ा पड़ा हुआ देखा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे पोंछ कर खा लिया और इरशाद फ़रमाया : **आइशा ! अच्छी चीज़ का एह्तिराम करो कि येह चीज़ (या 'नी रोटी) जब किसी क़ौम से भागी है तो लौट कर नहीं आई।⁽¹⁾** या'नी अगर नाशुकी की वजह से किसी क़ौम से रिज़्क चला जाता है तो फिर वापस नहीं आता।⁽²⁾

सय्यिदतुना उम्मे सलमह को अताक़र्दा मदनी फूल

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का अस्ल नाम हिन्द जब कि उम्मे सलमह कुन्यत है, आप अपनी कुन्यत ही से ज़ियादा मशहूर हैं। आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا पहले (हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रज़ाई भाई⁽³⁾) हज़रते सय्यिदुना अबू सलमह अब्दुल्लाह बिन असद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से बियाही गई थीं, दोनों मियां बीवी ने हबशा व मदीनए मुनव्वरा की तरफ़ हिजरत करने की सआदत पाई, शोहर के इन्तिक़ाल के बा'द जब आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बड़ी बे कसी में पड़ गई और छोटे छोटे बच्चों के साथ बेवगी में ज़िन्दगी बसर करना दुश्वार हो गया तो येह

[1]..... ابن ماجه، كتاب الاطعمة، باب النبی عن القاء الطعام، ص ۵۲۵، حدیث: ۳۳۵۳

[2]..... बहारे शरीअत, खाने का बयान, 3 / 364

[3]..... सरकार رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और हज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को अबू लहब की लौंडी सुवैबा ने दूध पिलाया था, जैसा कि अबू दावूद शरीफ़ की हदीस में सरकार ने खुद बयान फ़रमाया है।

(ابوداود، كتاب النکاح، باب یحرم من الرضاعة... الخ، ص ۳۲۸، حدیث: ۲۰۵۶)

देख कर रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से निकाह फ़रमा लिया और बच्चों को अपनी परवरिश में ले लिया। इस तरह येह हुजूर ﷺ के घर आ गई और तमाम उम्मत की मां बन गई।⁽¹⁾ चुनान्चे,

मरवी है कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के शोहर हज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वफ़ात के बा'द हुजूर ﷺ ता'ज़ियत के लिये आप के पास तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त आप ने अपने चेहरे पर मुसब्बर (ऐलवा) का लेप किया हुवा था, सरवरे काएनात रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने येह देख कर दरयाफ़्त फ़रमाया : उम्मे सलमह येह क्या है ? तो गोया आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह ﷺ इदत में चूँकि खुशबू लगाना मन्अ है और ऐलवे में खुशबू नहीं होती, इस वज्ह से मैं ने इस का लेप कर लिया। इरशाद फ़रमाया : इस से चेहरे में ख़ूब सूरती पैदा होती है, अगर लगाना ही है रात में लगा लिया करो और दिन में साफ़ कर डाला करो। या'नी इदत में सिर्फ़ खुशबू ही ममनूअ नहीं बल्कि ज़ीनत भी ममनूअ है, ऐलवा खुशबूदार तो नहीं मगर चेहरे का रंग निखार देता है इसे रंगीन भी कर देता है, लिहाज़ा ज़ीनत होने की वज्ह से इस का लेप ममनूअ है, अगर लेप की ज़रूरत ही हो तो रात में लगा लिया करो कि वोह वक़्त ज़ीनत का नहीं

[1].....जन्ती ज़ेवर, स. 486 बित्तसरफ़ ब हवाला

شرح زرقانی، ام سلمة ام المؤمنین، ۳۹۶/۲-۴۰۳ ملتقطاً

और दिन में धो डाला करो। नीज़ खुशबू और मेहंदी से बाल न संवारो। (या'नी ज़मानए इदत में खुशबूदार तेल बदन के किसी हिस्से खुसूसन सर में इस्ति'माल न करो और हाथ पाउं और सर में मेहंदी न लगाओ कि मेहंदी में भीनी खुशबू भी है रंगत भी।) अर्ज़ की : कंधा करने के लिये क्या चीज़ सर पर लगाऊं ? या'नी औरत को सर धोने, कंधी करने की ज़रूरत होती है जब येह चीज़ें ममनूअ हो गईं तो येह ज़रूरत कैसे पूरी करूं। फ़रमाया : बेरी के पत्ते सर पर थोप लिया करो फिर कंधा करो।⁽¹⁾

खयाल रहे कि खुशबूदार तेल लगाना मो'तद्दा (इदत गुज़ारने वाली औरत) के लिये बिल इजमाअ ममनूअ है मगर बिगैर खुशबू का तेल इमामे आ'ज़म व शाफ़ेई (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا) के हां ममनूअ है, इमाम अहमद व मालिक (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا) के हां जाइज़, वोह दोनों इमाम फ़रमाते हैं कि इस तेल से ज़ीनत हासिल हो जाती है ज़रूरतन जाइज़ है।⁽²⁾

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर में एक लड़की थी जिस के चेहरे में ज़र्दी थी। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : इसे झाड़ फूंक कराओ, क्योंकि इसे नज़र लग गई है।⁽³⁾

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن नज़र के मुतअल्लिक़ फ़रमाते हैं : जिन्न की नज़र है या

[1].....मिरआतुल मनाजीह, मअ मतने हदीस, इदत का बयान, दूसरी फ़स्ल, 5 / 153-154

[2].....मिरआतुल मनाजीह, इदत का बयान, दूसरी फ़स्ल, 5 / 154

[3].....بخاری، کتاب الطب، باب رقیة العین، ص ۱۴۵۱، حدیث: ۵۷۳۹

इन्सान की। उलमा फ़रमाते हैं कि जिन्नात की नज़र इन्सानी नज़र से सख़्त तर होती है। मिर्कात ने फ़रमाया कि जिन्नात की निगाह नेज़े से ज़ियादा तेज़ होती है। जाइज़ दुआओं से दम भी जाइज़ है, इस दम पर उजरत लेना भी दुरुस्त है।⁽¹⁾

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि महबूबे रब्बे दावर, शफीए रोज़े महशर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आखिरी वसियत येह फ़रमाई : नमाज़ की पाबन्दी करना और अपने गुलामों का ख़याल रखना।⁽²⁾

नमाज़ की अहमियत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नमाज़ **اَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ की खुश्नूदी और दुआओं की क़बूलियत का सबब है, इस से गुनाह मुआफ़ होते और रोज़ी में बरकत होती है। येह बीमारियों, अज़ाबे क़ब्र व जहन्नम से बचा कर जन्नत में ले जाती है, नमाज़ मोमिन की मे'राज और हमारे प्यारे प्यारे आका मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आंखों की ठन्डक है। येही वजह है कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी आखिरी वसियत में भी नमाज़ की अहमियत को बयान फ़रमाया। चुनान्चे, सहाबियाते तय्यिबात رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की सीरत से मा'लूम होता है कि वोह नमाज़ की ह़द दरजा ह़रीस थीं। फ़र्ज़ नमाज़ तो एक तरफ़, वोह नवाफ़िल की कसरत का भी ख़ूब एहतिमाम फ़रमाती थीं, जैसा कि

[1].....मिरआतुल मनाजीह, दवाओं और दुआओं का बयान, पहली फ़स्ल, 6 / 222

.....مسند احمد، مسند النساء، حديث امرسلة زوج النبي، ۲۱/۱۱، حديث: ۲۷۲۰ [۲]

मरवी है कि एक बार **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे हबीब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने नवाफ़िल की तरगीब दिलाते हुवे इरशाद फ़रमाया : जो 12 रकअत नफ़ल रोज़ाना पढ़ेगा उस के लिये जन्नत में घर बनाया जाएगा । उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हबीबा **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** फ़रमाती हैं कि इस के बा'द मैं हमेशा 12 रकअत नफ़ल रोज़ाना निहायत पाबन्दी से पढ़ती रही ।⁽¹⁾ इसी तरह उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** भी रोज़ाना बिलानागा नमाज़े तहज्जुद पढ़ा करती थीं⁽²⁾ और सय्यिदा ख़ातूने जन्नत **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** रात भर नमाज़ में मशगूल रहतीं यहां तक कि सुबह तुलूअ हो जाती ।⁽³⁾

नमाज़ में सुस्ती

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अफ़सोस सद अफ़सोस ! एक सहबियाते तय्यिबात थीं जो फ़र्ज़ के इलावा नफ़ल नमाज़ का भी ख़ूब एहतिमाम करतीं और एक हम हैं कि फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी में हज़ारों हीले बहाने तराशती रहती हैं, कभी घरेलू कामों की ज़ियादती का बहाना नमाज़ की बर वक़्त अदाएगी से मानेअ होता है तो कभी बच्चों की देख भाल में मसरूफ़ियत का शिकवा ज़बान पर रहता है और बसा औकात इसी टाल मटोल में नमाज़ तक क़ज़ा कर बैठती हैं ।

[1]مسند احمد، مسند النساء، حدیث ام حبیبة... الخ، 11/100، حدیث: 2532 ملقطاً

[2]सीरते मुस्त्फ़ा, स. 660 बित्सरूफ़ ।

[3]مدارج النبوة، قسم پنجم، باب اول در ذکر اولاد و کرام، وصل دختران آنحضرت علیہ السلام،

याद रखिये ! नमाज़ न पढ़ना या जान बूझ कर क़ज़ा करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। जैसा कि आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़तावा रज़विय्या जिल्द 5 सफ़्हा 110 पर फ़रमाते हैं : जो एक वक़्त की नमाज़ भी क़स्दन बिला उज़्रे शरई दीदह व दानिस्ता (जान बूझ कर) क़ज़ा करे फ़ासिक़ व मुर्तकिबे कबीरा व मुस्तहिक्के जहन्नम है।

क़ब्र में आग के शो'ले

एक शख्स की बहन फ़ौत हो गई। जब उसे दफ़न कर के लौटा तो याद आया कि रक़म की थेली क़ब्र में गिर गई है, चुनान्चे, क़ब्रिस्तान आ कर थेली निकालने के लिये उस ने अपनी बहन की क़ब्र खोद डाली ! एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र उस के सामने था, उस ने देखा कि बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़क रहे हैं ! चुनान्चे, उस ने जूं तूं क़ब्र पर मिट्टी डाली और सदमे से चूर चूर रोता हुवा मां के पास आया और पूछा : प्यारी अम्मी जान ! मेरी बहन के आ'माल कैसे थे ? वोह बोली : बेटा क्यूं पूछते हो ? अर्ज़ की : मैं ने अपनी बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़कते देखे हैं। येह सुन कर मां भी रोने लगी और कहा : अफ़सोस ! तेरी बहन नमाज़ में सुस्ती किया करती थी और नमाज़ क़ज़ा कर के पढ़ा करती थी।⁽¹⁾

सय्यिदतुना अश्मा बिनते सिद्दीक़ को नसीहतें

अमीरुल मोमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ की साहिबज़ादी,

[1].....इस्लामी बहनों की नमाज़, क़ज़ा नमाज़ों का तरीक़ा, स. 149

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका की बहन, जन्मती सहाबी हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन अव्वाम की जौजा और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जुबैर (عَلَيْهِمُ الرِّفْعُونَ) की वालिदए माजिदा हज़रते सय्यिदतुना अस्मा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : जिस ज़माने में कुरैश ने हुस्ने अख़्लाक के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मुआहदा किया था मेरी मां जो मुशरिका थी, मेरे पास आई तो मैं ने उस के मुतअल्लिक बारगाहे नुबुव्वत में अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरी मां आई है और वोह इस्लाम की तरफ़ राग़िब है या वोह इस्लाम से ए'राज किये हुवे है, मैं उस के साथ कैसा बरताव करूं ? इरशाद फ़रमाया : उस के साथ अच्छा बरताव करो ।⁽¹⁾

एक बार ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को नसीहतों के मदनी फूल अता करते हुवे इरशाद फ़रमाया : खर्च कर और शुमार न किया कर, वरना **اَعْلَاهُ** भी तुझे शुमार कर के देगा और माल को अपने पास रोक कर न रख, वरना **اَعْلَاهُ** भी तुझ से अपना रिज़क़ रोक लेगा ।⁽²⁾ नीज़ ब क़दरे इस्तिताअत खर्च किया कर ।⁽³⁾

मरवी है कि एक बार आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बारीक कपड़े पहन कर हुज़ूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सामने आई तो

[1].....بخاری، کتاب الجزية والموادعة، ۱۸-باب، ص ۸۱۶، حدیث: ۳۱۸۳

[2].....بخاری، کتاب الهبة، باب هبة المرأة لغير زوجها... الخ، ص ۲۲۶، حدیث: ۲۵۹۱

[3].....بخاری، کتاب الزكاة، باب الصدقة فيما استطاع، ص ۳۰۱، حدیث: ۱۳۳۳

आप ﷺ ने मुंह फेर लिया और यह फरमाया : ऐ अस्मा ! जब औरत बालिग हो जाए तो उस के बदन का कोई हिस्सा दिखाई न देना चाहिये, सिवा मुंह और हथेलियों के ।⁽¹⁾

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! औरत का चेहरा अगर्चे औरत नहीं, मगर ब वजए फितना गैर महरम के सामने मुंह खोलना मन्अ है । यूँही उस की तरफ नज़र करना, गैर महरम के लिये जाइज़ नहीं और छूना तो और ज़ियादा मन्अ है ।⁽²⁾

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ पर्दे के बारे में सुवाल जवाब में फरमाते हैं : अगर एक घर में रहते हुवे औरत के लिये करीबी ना महरम रिश्तेदारों से पर्दा दुश्वार हो तो चेहरा खोलने की तो इजाज़त है मगर कपड़े हरगिज़ ऐसे बारीक न हों जिन से बदन या सर के बाल वगैरा चमकें या ऐसे चुस्त न हों कि बदन के आ'ज़ा जिस्म की हैअत (या'नी सूरत व गोलाई) और सीने का उभार वगैरा ज़ाहिर हो ।⁽³⁾

सय्यिदतुना अस्मा बिनते यज़ीद को अताक़्द मदनी फूल

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिनते यज़ीद अन्सारिय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बड़ी अक्ल मन्द और बहादुर थीं, जंगे यरमूक में शामिल हुई और नौ

[1].....ابوداود، کتاب اللباس، باب فیما تبدي المرأة من زينتها، ص ۶۴۵، حدیث: ۴۱۰۴

[2].....बहारे शरीअत, नमाज़ की शर्तों का बयान, 1 / 484

[3].....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 52

काफ़िरों को खैमे की लकड़ी से क़त्ल किया।⁽¹⁾

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं बारगाहे रिसालत में बैअत के लिये हाज़िर हुई (उस वक़्त) मैं ने सोने के कंगन पहने हुवे थे। जब करीब पहुंची तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन की चमक देख कर इरशाद फ़रमाया : ऐ अस्मा ! इन्हें उतार कर फेंक दो ! क्या तुम इस बात से नहीं डरतीं कि (अगर तुम ने इन की ज़कात अदा न की तो बरोजे क़ियामत) **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें आग के कंगन पहनाएगा ! (फ़रमाती हैं इतना सुनने के बा'द) मैं ने कंगन उतार कर फेंक दिये और मा'लूम नहीं उन्हें किस ने उठाया ?⁽²⁾

इसी तरह का एक वाक़िआ आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की ख़ाला के साथ भी पेश आया, चुनान्वे, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : एक बार मैं सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमते अक्दस में हाज़िर थी कि मेरी ख़ाला बारगाहे रिसालत में कुछ पूछने के लिये हाज़िर हुई, उन्होंने ने सोने के दो कंगन पहने हुवे थे तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : क्या येह पसन्द करती हैं कि आप को आग के कंगन पहनाए जाएं ? मैं ने कहा : ऐ ख़ाला ! **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप के उन कंगनों के बारे में इरशाद फ़रमा रहे हैं (जो आप ने पहने हुवे हैं) ।

[1].....अश्शिअतिल्लमआत मुतर्जिम, ज़ियाफ़त का बयान, तीसरी फ़स्ल, 5 / 513

.....[2] مسند احمد، مسند القبائل، من حديث اسماء ابنة يزيد، 11/326، حديث: 28330

चुनान्चे, उन्होंने ने वोह उतार कर फेंक दिये और अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ﷺ ! अगर औरतें बनाव सिंघार न करें तो शोहरों के नज़दीक उन की कोई कद्रो मन्ज़िलत न रहेगी । हुज़ूर ﷺ ने मुस्क्राते हुवे इरशाद फ़रमाया : क्या औरत येह ताक़त नहीं रखती कि वोह चांदी की बालियां और हार ले कर उस पर जा'फ़रान का रंग चढ़ा ले कि वोह सोने की तरह हो जाएं ? क्यूंकि जिस ने भी टिड्डी की आंख के वज़न के बराबर या छल्ले के बराबर सोना पहना (और उस की ज़कात न दी) तो बरोजे क़ियामत उसे उस से दागा जाएगा⁽¹⁾⁽²⁾

इसी तरह आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि एक बार नबिय्ये करीम ﷺ की ख़िदमत में खाना पेश किया गया, आप ﷺ ने हमारे सामने किया तो हम ने अर्ज़ की : हमें

.....مسند احمد، مسند القبائل، من حديث اسماء ابنة يزيد، ۱۱/۳۳، حديث: ۲۸۳۶۹ [1]

[2]....यहां अगर्वे सिर्फ़ सोने के ज़ेवरात पर ज़कात की अदम अदाएगी के अन्देशे की वजह से उसे पहनने से मन्अ़ फ़रमाया गया है मगर चांदी के ज़ेवरात पर भी ज़कात फ़र्ज़ है । अगर्वे वोह इस्ति'माल में हों । (फ़तावा अहले सुन्नत, किताबुज्जकात, स. 303) सोने चांदी के ज़ेवरात पर ज़कात के हवाले से मज़ीद मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 612 सफ़हात पर मुशतमिल किताब फ़तावा अहले सुन्नत, किताबुज्जकात के सफ़हा 303 ता 316 का मुतालआ कीजिये ।

ख्वाहिश नहीं है। इरशाद फ़रमाया : भूक और झूट दोनों चीज़ों को इकट्ठा मत करो।⁽¹⁾

सय्यिदतुना किस्सा किन्दिय्या को अताक़र्दा मदनी फूल

शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना ﷺ ने हज़रते सय्यिदतुना किस्सा किन्दिय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को नसीहतों के येह मदनी फूल इरशाद फ़रमाए :

✿ ऐ किस्सा ! गुनाह के वक़्त **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ को याद करो (और गुनाह से रुक जाओ) तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मग़फ़िरत के वक़्त याद फ़रमाएगा ।

✿ अपने ख़ावन्द की इताअत व फ़रमां बरदारी करो तो दुन्या व आख़िरत के शर से तुम्हारी हिफ़ाज़त होगी ।

✿ अपने वालिदैन् के साथ अच्छा सुलूक करो तो तुम्हारे घर में ख़ैरो बरकत की कसरत होगी।⁽²⁾

सय्यिदतुना उम्मे शाइब को अताक़र्दा मदनी फूल

एक मरतबा सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार ﷺ हज़रते सय्यिदतुना उम्मे साइब या उम्मे मुसय्यिब के हां तशरीफ़ ले गए तो देखा कि आप पर कपकपी त़ारी है ।

1..... ابن ماجه، كتاب الاطعمة، باب عرض الطعام، ص ۵۳۷، حديث: ۳۲۹۸

2..... الاستيعاب، كتاب النساء وكناهن، باب القاف، ۳۳۸۱-تفسير تپت رواس، ۵۶۱/۲

हुजूर ﷺ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : ऐ उम्मे साइब या उम्मे मुसय्यिब ! क्यूं कपकपा रही हो ? अर्ज की : बुख़ार की वजह से । फिर फ़ौरन कहने लगीं कि **اَبْلَاهُ** **عَزَّوَجَلَّ** इस में बरकत न अता फ़रमाए तो उन के इस जुम्ले पर सरकार ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : बुख़ार को बुरा मत कहो ! यह तो इब्ने आदम की ख़ताओं को यूं दूर करता है जैसे लोहार की भट्टी लोहे की मेल को दूर करती है ।⁽¹⁾

सय्यिदतुना उम्मे फ़रवह को अताक़र्दा मदनी फूल

मोहसिने काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात ﷺ की रज़ाई वालिदा⁽²⁾ हज़रते सय्यिदतुना उम्मे फ़रवह **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** फ़रमाती हैं : हुजूर ﷺ ने मुझ से फ़रमाया : जब बिस्तर पर आराम करने लगें तो सूरए काफ़िरून पढ़ लिया करें येह शिर्क से नजात है ।⁽³⁾

सय्यिदतुना ज़ैनब सक़फ़िया को अताक़र्दा मदनी फूल

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की जौजा हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब सक़फ़िया **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** कसरत से ख़ैरात करने वाली और नमाज़ की पाबन्द सहाबिया थीं । एक बार रहमते आलम

[1]اصابة، كتاب النساء، فصل فيمن عرف بالكنية... إلخ، حرف السين، ١٢٠/٣-ام

السائب الانصارية، ٨/٢٣٩

[2] हुजूर ﷺ की रज़ाई वालिदा की ता'दाद बा'ज मुअर्रिख़ीन ने दस ज़िक्र की है जिन में हज़रते सय्यिदतुना उम्मे फ़रवह **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** भी शामिल हैं ।

(سبل الهدى، جماع ابواب رضاءه... إلخ، الباب الاول في مواضعه، ١/٣٤٨٦٣٤٥)

[3]اصابة، كتاب النساء، فصل فيمن عرف بالكنية... إلخ، حرف الفاء، ١٢٢/٤-ام فروع، ٨/٥١٠

ﷺ ने आप ﷺ से इरशाद फरमाया : जब नमाजे इशा के लिये घर से निकलो⁽¹⁾ तो खुशबू न लगाया करो।⁽²⁾

आप ﷺ ने कुर्बे इलाही के हुसूल के लिये अपने जेवरात राहे खुदा में सदका कर दिये थे। चुनान्वे, मरवी है कि एक दिन **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब **ﷺ** सुब्ह की नमाज अदा फरमा कर वापस लौटे तो औरतों के पास खड़े हो कर इरशाद फरमाया : ऐ बीबियो ! मैं ने अहले जहन्नम में अक्सर औरतों को देखा, लिहाजा अपनी इस्तिताअत के मुताबिक (सदका व खैरात के जरीए) कुर्बे इलाही हासिल करो। वहां हजरते सय्यिदतुना जैनब सकफिया **ﷺ** भी मौजूद थीं। आप घर गई, अपने शोहर को हुजूर **ﷺ** के फरमान के बारे में बताया और जेवरात उठाने लगीं तो हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद **ﷺ** ने पूछा : इन्हें कहां ले जा रही हैं ? अर्ज की : (सदका कर के) इन के जरीए **अब्बाह** व रसूल **ﷺ** का कुर्ब हासिल करूंगी ताकि **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** मुझे अहले जहन्नम में से न करे। हजरते सय्यिदुना इब्ने मसऊद **ﷺ** ने फरमाया : इन्हें मुझ पर

[1]....सरकारे मदीना **ﷺ** की हयाते ज़ाहिरी के दौर में औरत मस्जिद में बा जमाअत नमाजें अदा करती थी, फिर तगय्युरे ज़मान (या'नी तब्दीलिये हालात) के सबब उलमाए किराम **رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمُ** ने औरतों को मस्जिद की हाज़िरी से मन्ज़ फरमा दिया। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 103)

[2].....الطبقات الكبرى، تسمية غرائب... الخ، ٢٢٣٠- زينب بنت أبي معاوية، ٢٢٦/٨

और मेरे बेटे पर सदका कर दो क्योंकि हम इस के (ज़ियादा) मुस्तहिक हैं।⁽¹⁾

सय्यिदुना हुसैन बिन मिहसन की फूफी को अताकर्दा मदनी फूल

हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मिहसन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की फूफीजान किसी काम के सिलसिले में **عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे हबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे आलीशान में हाज़िर हुई और जब अपने काम से फ़ारिग हो गई तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन से इस्तिफ़सार फ़रमाया : क्या तुम्हारा शोहर है ? अर्ज़ की : जी हां। फिर इस्तिफ़सार फ़रमाया : तुम्हारा उस के साथ सुलूक कैसा है ? अर्ज़ की : मैं उन के किसी काम में कोताही नहीं करती मगर जिस काम से मैं अज़िज़ आ जाऊं। हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : तुम अपने सुलूक पर ग़ौरो फ़िक्र कर लो क्योंकि तुम्हारा शोहर ही तुम्हारी जन्नत और जहन्नम है।⁽²⁾

सय्यिदतुना ख़ौला बिनते कैस को अताकर्दा मदनी फूल

हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की जौजा हज़रते सय्यिदतुना ख़ौला बिनते कैस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : एक मरतबा सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने

[1].....حلیۃ الاولیاء، ذکر النساء الصحابیات، ۱۳۹-زیب الثقفیة، ۸۲/۲، حدیث: ۱۵۳۷

[2].....الطبقات الكبرى، من نساء بنی مالک بن النجار، ۳۶۲۸-عمة حصین بن حصن، ۳۳۶/۸

चचा हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास तशरीफ़ लाए तो मैं ने खाना तय्यार किया जिसे तनावुल करने के बा'द आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हारी गुनाहों को मिटाने वाली चीज़ की तरफ़ रहनुमाई न करूँ ? अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! इरशाद फ़रमाइये । फ़रमाया : न चाहते हुवे भी वुजू करना, मस्जिद में कसरत से जाना, एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना गुनाहों को मिटाता है ।⁽¹⁾

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अकबर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते सुना कि दुन्या लज़ीज़ और सर सब्ज़ो शादाब है जो शख़्स हलाल (ज़राएअ से) माल कमाता है उस के लिये उस में बरकत डाल दी जाती है और बहुत से लोग नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी करते हुवे **अब्बाह** व रसूल عَزَّ وَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के माल में तसरुफ़ करते हैं क़ियामत के दिन उन के लिये जहन्नम की आग होगी ।⁽²⁾

सय्यिदुना युसैरा के अताक़्दा मद्दनी फूल

हज़रते सय्यिदुना युसैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का शुमार हिज़रत करने वाली सहाबियाते तय्यिबात में होता है । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हर वक़्त

[1] اصابة، كتاب النساء، حرف الحاء، ۱۱۳۲-خولة بنت قيس بن قهد، ۱۳۰/۸

[2] حلية الاولياء، ذكر النساء الصحابيات، ۱۳۳-خولة بنت قيس، ۷۷/۲، حديث: ۱۵۲۵

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की तस्बीह व तहलील और जिक्रो अज़कार में मसरूफ़ रहती थीं। चुनान्वे, आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** फ़रमाती हैं कि शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हम से इरशाद फ़रमाया : ऐ बीबियो ! **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की तस्बीहो तहलील (या'नी **سُبْحَنَ اللَّهِ** और **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ**) और पाकी बयान करने को खुद पर लाज़िम कर लो और इन्हें अपनी (उंगलियों) के पोरों पर शुमार किया करो क्योंकि इन (उंगलियों) को कुव्वते गोयाई दी जाएगी और इन से सुवाल होगा और कभी गाफ़िल न होना वरना तुम रहमत से दूर कर दी जाओगी।⁽¹⁾

सहाबियाते तय्यिबात की नशीहतें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस्लाम से क़ब्ल औरत की हैसियत मुआशरे में एक धुतकारे हुवे फ़र्द की सी थी, येह इस्लाम ही है जिस ने सब से पहले औरत को बे कसी व बे बसी की ज़िल्लत भरी ज़िन्दगी से नजात दी और मज़हबी व समाजी और कौमी ज़िम्मेदारियों में उसे एक ख़ास मक़ाम अता फ़रमाया। यूँ औरत ख़्वाह मां के रूप में हो या बहन के, बीवी के रूप में हो या बेटी के, इसे मरातिब के लिहाज़ से बुलन्द मक़ामो मर्तबा मिला तो इस्लाम की इन अब्वलीन ख़वातीन या'नी सहाबियाते तय्यिबात **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ** ने भी इस मक़ामो मर्तबे की लाज रखी और अपनी ज़िम्मेदारियों से कभी दामन न छुड़ाया, बल्कि

.....حلیة الاولیاء، ذکر النساء الصحابیات، ۱۲۸-یسیرة، ۸۲/۲، حدیث: ۱۵۳۶ [1]

वोह सरवरे काएनात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दर्जे जैल फ़रमान की अमली तस्वीर थीं। या'नी الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَخَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا الْمَرْأَةُ الصَّالِحَةُ दुनिया (की हर चीज़) काबिले नफ़अ है और इस की सब से बेहतर नफ़अ वाली चीज़ नेक औरत है।⁽¹⁾ सहाबियाते तय्यिबात رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ की दीनी खिदमत का जाइज़ा लेने से मा'लूम होता है कि वोह खैरख़्वाही की पैकर थीं और खैरख़्वाही का मौक़अ मुयस्सर आने पर कभी भी हाथ से जाने न देतीं। इन्हों ने दीन की सर बुलन्दी के लिये खुद भी कभी पहलू तही से काम लिया न किसी और को इस मुआमले में सुस्ती करने दी। चुनान्चे, जैल में सहाबियाते तय्यिबात رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ की मां, बहन, बीवी, बेटी, ख़ाला और फूफी के मुक़द्दस रिश्तों के ए'तिबार से चन्द नसीहतें पेश की जाती हैं :

सहाबियात की बतौरे मां नसीहत

मां की गोद चूँकि बच्चों की अव्वलीन तरबियत गाह होती है, लिहाज़ा हर मां पर लाज़िम है कि अपने बच्चों को नेकियों की रग़बत और गुनाहों से नफ़रत दिलाने के लिये उन्हें खैरख़्वाही की बातें बताती रहे और इस का आगाज़ बच्चों की शीर ख़्वारगी के ज़माने से ही कर दे और कोशिश करे कि उन की ज़बान हमेशा **अल्लाह** व रसूल عَزَّ وَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़िक्रे जमील से तर रहे, जैसा कि हज़रते

[1] مسلم، كتاب الرضاع، باب خير متاع الدنيا المرأة الصالحة، ص ५५५، حديث: १४१८

सय्यदतुना उम्मे सुलैम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के मुतअल्लिक मरवी है कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا अपने शीर ख़्वार बेटे हज़रते सय्यदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को कलिमए तथ्यिबा और कलिमए शहादत पढ़ने की तल्कीन करती रहतीं, चुनान्वे, जब उन्होंने ने बोलना शुरूअ किया तो सब से पहले येही कलिमाते तथ्यिबात उन की ज़बान से अदा हुवे।⁽¹⁾

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप भी कोशिश कीजिये कि आप के बच्चों की ज़बान से भी सब से पहले **اَللّٰهُ** का नामे नामी ही अदा हो कि एक फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में भी ऐसा ही मरवी है कि अपने बच्चों की ज़बान से सब से पहले لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहलवाओ।⁽²⁾ चुनान्वे, शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने अपनी नवासी के लिये सब घरवालों को कह रखा था कि उस के सामने **اَللّٰهُ اَللّٰهُ** का ज़िक्र करते रहें ताकि उस की ज़बान से पहला लफ़्ज़ **اَللّٰهُ** निकले और जब वोह आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ की बारगाह में लाई जाती तो आप खुद भी उस के सामने ज़िक्रुल्लाह करते। चुनान्वे, जब उस ने बोलना शुरूअ किया तो पहला लफ़्ज़ **“اَللّٰهُ”** ही बोला।⁽³⁾

1..... الطبقات الكبرى، من نساء بني عدی بن النجار، ۳۵۷-۱-امسليم بنت ملحان، ۳۱۲/۸

مفهومًا

2..... شعب الإيمان، ۶۰-باب في حقوق الاولاد والاهلین، ۳۹۷/۶، حدیث: ۸۶۴۹

3.....तरबियते औलाद, स. 100

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बच्चों के बड़े हो जाने के बा'द भी मां की ज़िम्मेदारी ख़त्म नहीं हो जाती कि वोह उन्हें ख़ैरख़्वाही पर मुश्तमिल नसीहतें करना बन्द कर दे, क्यूंकि बच्चे उमूमन मां की नसीहत फ़ौरन क़बूल कर लेते हैं। जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 24 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले जोशे ईमानी सफ़हा 5 पर है : जंगे कादिसिय्या (जो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में लड़ी गई थी) में हज़रते सय्यिदतुना खन्सा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا चारों शहज़ादों समेत शरीक हुई थीं। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जंग से एक रोज़ क़बूल अपने चारों शहज़ादों को इस तरह नसीहत फ़रमाई : मेरे प्यारे बेटो ! तुम अपनी खुशी से मुसलमान हुवे और अपनी ही खुशी से तुम ने हिजरत की, उस ज़ात की क़सम ! जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुम एक ही मां बाप की औलाद हो, मैं ने तुम्हारे नसब को ख़राब नहीं किया, तुम्हें मा'लूम है कि **اَبْلَاهُ** **گُفَرار** عَزَّوَجَلَّ ने कुफ़र से मुक़ाबला करने में मुजाहिदीन के लिये अज़ीमुशशान सवाब रखा है। याद रखो ! आख़िरत की बाकी रहने वाली ज़िन्दगी दुन्या की फ़ना होने वाली ज़िन्दगी से बदरजहा बेहतर है। सुनो ! सुनो ! कुरआने पाक के पारह 4 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 200 में इरशाद होता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَبِّرُوا
وَاصْبِرُوا وَرَاطِبُوا وَاتَّقُوا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी

اللَّهُ لَعَلَّكُمْ تَقْلِحُونَ ۝

(प २, आल عمران: २००)

मुल्क की निगहबानी करो और

अल्लाह से डरते रहो, इस उम्मीद

पर कि कामयाब हो ।

सुब्ह को बड़ी होशियारी के साथ जंग में शिरकत करो और दुश्मनों के मुकाबले में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से मदद तलब करते हुवे आगे बढ़ो और जब तुम देखो कि लड़ाई जोर पर आ गई और उस के शो'ले भड़कने लगे हैं तो उस शो'ला ज़न आग में कूद जाना, काफ़िरों के सरदार का मुकाबला करना, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इज़्ज़तो इकराम के साथ जन्नत में रहोगे । जंग में हज़रते सय्यिदतुना खन्सा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** के चारों शहज़ादों ने बढ़ चढ़ कर कुफ़र का मुकाबला किया और यके बा'द दीगरे जामे शहादत नोश कर गए । जब उन की वालिदए मोहतरमा को उन की शहादत की ख़बर पहुंची तो उन्होंने ने बजाए वावेला मचाने के कहा : उस प्यारे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र है जिस ने मुझे चार शहीद बेटों की मां बनने का शरफ़ अता फ़रमाया । मुझे **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त की रहमत से उम्मीद है कि मैं भी उन चारों शहीदों के साथ जन्नत में रहूंगी ।⁽¹⁾

गुलामाने मुहम्मद जान देने से नहीं डरते

ये सर कट जाए या रह जाए कुछ परवा नहीं करते

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

..... [1] اسد الغابة، حرف الخاء، १११३-۶۸۸۳ خنساء بنت عمرو، १/ ९०

सहाबियात की बतौरे बहन नसीहत

बहन भाई के रिश्ते की अज़मत भी क्या ख़ूब है ! बहनें हमेशा अपने भाइयों के लिये दुनिया व आख़िरत की ख़ैरो भलाई चाहती हैं । सहाबियाते तय्यिबात رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की हयाते तय्यिबा इस हवाले से भी हर उस इस्लामी बहन के लिये मशअले राह है कि जिस का कोई भाई है । जैसा कि मरवी है कि एक बार उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के सामने उन के भाई हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ वुजू करने लगे तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने उन्हें वुजू करते देख कर इरशाद फ़रमाया : (ऐ मेरे भाई !) हर हर उज़्च को अच्छी तरह धोइये ! क्यूंकि मैं ने रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना है खुश्क एड़ियों के लिये जहन्नम का अज़ाब है ।⁽¹⁾

इसी तरह उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना हफ़सा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के भाई हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने जब तर्के निकाह का इरादा किया तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने उन से फ़रमाया : (ऐ मेरे भाई !) निकाह कर लीजिये ! अगर आप के हां बेटे की विलादत हुई और वोह ज़िन्दा रहा तो आप के लिये दुआ करेगा ।⁽²⁾ नीज़ इस हवाले से हज़रते

1]مسلم، كتاب الطهارة، باب وجوب غسل الرجلين بكما لهما، ص 111، حديث: 240

2]مسند شافعي، كتاب النكاح، باب الترغيب في النكاح، 3/3، حديث: 1124

सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के इस्लाम लाने का वाकिआ भी फ़रामोश नहीं किया जा सकता, क्यूंकि इन के इस्लाम लाने का सबब भी इन की बहन ही बनी थीं।

सहाबियात की बतौरे बीवी नसीहत

मियां बीवी का रिश्ता अगर्चे कच्चे धागे से बन्धा होता है मगर इस्लाम ने दोनों को एक दूसरे के हुक्क का खयाल रखते हुवे इस रिश्ते को मज़बूत बनाने का जो तरीका बताया है, उस के पेशे नज़र ज़िन्दगी के साथ साथ इस मुक़द्दस रिश्ते की मज़बूती में मज़ीद इज़ाफ़ा ही होता है। मियां बीवी चूँकि गाड़ी के दो पहियों की मिस्ल होते हैं जिन का मुतवाज़ी और एक दूसरे के संग चलना इन्तिहाई ज़रूरी होता है, लिहाज़ा ज़िन्दगी के किसी मोड़ पर अगर एक पहिया कमज़ोर भी पड़ जाए तो दूसरा उसे सहारा देता है। सहाबियाते तय्यिबात رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की इज़दिवाजी ज़िन्दगी का मुतालआ किया जाए तो येह बात रोज़े रोशन की तरह इयां होती है कि उन्होंने ने हमेशा अपने ज़िन्दगी के हम सफ़र का साथ दिया, उन के दुख सुख और सफ़रो हज़र में उन के क़दम से क़दम मिला कर चलती रहीं। ज़िन्दगी के किसी मोड़ पर भी उन्होंने ने अपने हम सफ़र को कभी थकन महसूस न होने दी, बल्कि हमेशा उन की ढारस बन्धाए रहतीं। जैसा कि जंगे यरमूक के मौक़अ पर रूमियों की पै दर पै यलगार की ताब न लाते हुवे जब हज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़यान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जैसे बतले जलील (बहुत बड़े बहादुर) का हौसला भी पस्त हो गया तो उन की जौजा

हज़रते सय्यिदतुना हिन्दा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जिस तरह उन के हौसले को मेहमीज़ लगाई वोह अपनी मिसाल आप है।⁽¹⁾

इसी तरह फ़त्हे मक्का के मौक़अ पर हज़रते सय्यिदुना इकरिमा बिन अबू जहल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ (जो अभी तक मुसलमान नहीं हुवे थे) जब इस बात से खौफ़ज़दा हो कर यमन की तरफ़ भाग गए कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उन्हें क़त्ल कर देंगे तो आप की जौजा हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हक़ीम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने आप के लिये न सिर्फ़ सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अमान हासिल की बल्कि तिहामा के साहिल तक उन की तलाश में गई ताकि उन की तरह उन के ज़िन्दगी के हम सफ़र भी दौलते इस्लाम से माला माल हो जाएं। फिर उन के मिल जाने पर ख़ैरख़्वाही से भरपूर लहजे में यूं गोया हुई : ऐ मेरे चचाज़ाद ! मैं एक ऐसी अज़ीम हस्ती के पास से आ रही हूं जो बहुत ज़ियादा रहम दिल और एहसान फ़रमाने वाली है, वोह लोगों में सब से अफ़ज़ल है। लिहाज़ा खुद को हलाकत में मत डालिये। आख़िर आप की येह नसीहत भरी बातें हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दिल में घर कर गई और वोह बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हो कर इस्लाम ले आए।⁽²⁾

[1].....तफ़सीली वाकिआ इसी रिसाले के सफ़हा नम्बर 76 पर मुलाहज़ा फ़रमाइये।

[2]..... كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، حرف العين، عكرمة رضى الله عنه،

المجلد السابع، 13/ 232، حديث: 3714 مفهوماً

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अफ़सोस सद अफ़सोस ! आज हम में से बेशतर की हालत येह हो गई है कि अपने शोहरों को नारे जहन्नम से बचाने के बजाए अपनी बेजा नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तक्मील के लिये उन्हें खुद अपने हाथों जहन्नम की आग का ईंधन बनने पर मजबूर कर रही हैं और एक वोह सहाबियाते तय्यिबात **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ** थीं कि खुद हाजत मन्द होने के बा वुजूद अपने शोहर को सब कुछ राहे खुदा में खर्च कर देने का मश्वरा दिया करती थीं। जैसा कि मन्कूल है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अहले हिम्स को येह मक्तूब रवाना फ़रमाया कि मुझे अपने फुकरा के मुतअल्लिक़ बताओ। उन्होंने ने अपने शहर के तमाम फुकरा के नाम लिख कर पेश कर दिये। इन में हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुजैम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का नाम भी था और एक क़ौल के मुताबिक़ हज़रते सय्यिदुना उमैर बिन सा'द **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का नामे नामी था। चुनान्वे, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने पूछा : येह सईद बिन जुजैम कौन हैं ? अर्ज की : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येह हमारे हाकिम हैं। पूछा : क्या वोह फ़कीर हैं ? अर्ज की : जी हां ! हम में उन से बड़ा कोई फ़कीर नहीं। दरयाफ़्त फ़रमाया : वोह तहाइफ़ व वजाइफ़ का क्या करते हैं ? अर्ज की : वोह सब कुछ राहे खुदा में खर्च कर देते हैं और अपने और अपने अहलो इयाल के लिये कुछ बचा कर नहीं रखते।

येह जान कर अमीरुल मोमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुजैम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को 400 दीनार भेजे और हुक्म इरशाद फ़रमाया कि इन्हें खुद पर और अपने घरवालों पर खर्च कीजियेगा। जब येह रक़म उन के पास पहुंची तो वोह रोने लगे और फिर रोते रोते अपनी जौजए मोहतरमा के पास गए तो उन्होंने ने अर्ज़ की : आप को क्या हुवा है ? क्या अमीरुल मोमिनीन इस दुन्याए फ़ानी से कूच फ़रमा गए हैं ? फ़रमाया : इस से भी बड़ा हादिसा रूनुमा हुवा है। अर्ज़ की : क्या मुसलमानों में इन्तिशार पैदा हो गया है ? फ़रमाया : इस से भी बड़ा मुआमला है। अर्ज़ की : तो फिर खुद ही बता दीजिये कि क्या हुवा है ? फ़रमाने लगे : मेरे पास दुन्या आ गई है, हालांकि मैं عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ रहा मगर दुन्या मुझ पर कुशादा न हो सकी, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़माने में भी दुन्या मुझ पर कुशादगी में कामयाब न हो सकी और अब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़माने में येह आखिर मेरे पास आ ही गई है, हाए अफ़सोस ! येह ज़माना भी कैसा है ! उन की येह बात सुन कर नेक बख़्त जौजा ने अर्ज़ की : मेरी जान आप पर कुरबान ! इस के साथ जो सुलूक चाहे फ़रमाइये। फ़रमाया : क्या मैं जो चाहता हूं उस में मेरी मदद करेंगी ? अर्ज़ की : जी हां ! ज़रूर करूंगी। फ़रमाया : मुझे वोह पुरानी चादर दीजिये। रावी फ़रमाते हैं कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस चादर

को टुकड़े टुकड़े कर के तीन तीन, पांच पांच और दस दस दीनार की थेलियां बनाई यहां तक कि तमाम दीनार ख़त्म हो गए, फिर उन तमाम थेलियों को अपने बड़े थेले में डाला और बग़ल में दबा कर बाहर चल दिये, रास्ते में जिहाद पर जाने वाले मुसलमानों का एक लश्कर मिला तो उन में हर एक की हालत के मुताबिक़ उसे एक एक थेली दे कर वापस घर लौट आए और अपने अहलो इयाल के लिये एक दीनार भी बाकी न रखा।⁽¹⁾

सहाबियात की बतौरे बेटी नसीहत

बेटियों के रहमत होने में शायद ही किसी को शक हो, नीज़ सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अपनी बेटियों से महब्बत भी किसी से ढकी छुपी नहीं, येही वजह है कि इस्लाम ने वालिदैन् पर बेटी की ता'लीमो तरबियत के लिये काफ़ी ज़ोर दिया। नसीहत चूँकि ख़ैरख़्वाही चाहते हुवे किसी को नाज़ेबा बात से मन्ज़ करने को कहते हैं, लिहाज़ा इस के मुताबिक़ अ़म मफ़हूम येही पाया जाता है कि नसीहत का हक़ सिर्फ़ बड़ों को ही है और छोटा अगर बड़ों की तवज्जोह किसी ख़ास बात की तरफ़ मन्ज़ूल कराए तो बसा औकात वोह इसे अपनी आन का मस्अला बना कर डांट देते हैं। ऐसा न करना चाहिये क्यूँकि इस हवाले से भी सहाबियाते तय्यिबात رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की हयाते तय्यिबा में हमारे लिये रोशन मिसालें मौजूद हैं कि बेटी ने वालिदैन् को राहे हक़ से हटते

..... قوت القلوب، الفصل الثانی والثلاثون، ذکر وصف الزاهد وفضل الزهد، ۱/ ۲۴۹

हुवे पाया तो बसद एहतिराम उन की तवज्जोह इस तरफ़ मब्जूल करा कर तारीख़ के सुनहरी औराक़ में अपना नाम दर्ज करवा लिया । चुनान्वे, मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना जुलैबीब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ एक खुश मिज़ाज शख्स थे, जब सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का रिश्ता हज़रते सय्यिदुना बरज़ा अस्लमी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बेटी से करना चाहा तो सय्यिदुना बरज़ा अस्लमी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी जौजा से मुशावरत के बा'द इस रिश्ते से इन्कार कर देने का फैसला कर लिया । इधर उन की वोह बेटी भी येह तमाम बातें सुन रही थी कि जिन के लिये येह रिश्ता आया था । जब उन्होंने ने देखा कि उन के वालिद इन्कार करने के लिये दरबारे रिसालत में जाने लगे हैं तो उन्होंने ने बसद एहतिराम अपने वालिदैन् की ख़िदमत में अर्ज की : क्या आप लोग **عَزَّوَجَلَّ** के **رَسُول** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हुक्म को रद करना चाहते हैं ? अगर उन की इस रिश्ते में रिज़ा है तो आप मुझे मेरे सरकार, हबीबे परवर दगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सुपुर्द कर दें वोह कभी मुझे ज़ाएअ नहीं होने देंगे । बेटी की नसीहत पर मब्नी येह बात सुन कर आख़िर वालिदैन् भी उस रिश्ते पर राज़ी हो गए ।⁽¹⁾

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस हवाले से वोह हिकायत भी हमारे लिये मशअले राह है जिस में मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने दौरे ख़िलाफ़त में अक्सर रात के वक़्त मदीनए मुनव्वरा رَأَى اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا का दौरा फ़रमाते

..... مسند احمد، مسند البصريين، حديث أبي هريرة الاسلامي، ٨/ ١١٤، حديث: ٢٠٣١٥ ملقطاً

ताकि अगर किसी को कोई हाजत हो तो उसे पूरा करें, एक रात आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** चलते चलते अचानक एक घर के पास रुक गए, अन्दर से एक औरत की आवाज़ आ रही थी : बेटी दूध में थोड़ा सा पानी मिला दो । लड़की येह सुन कर बोली : अम्मीजान ! क्या आप को मा'लूम नहीं कि अमीरुल मोमिनीन ने क्या हुक्म जारी फ़रमाया है ? मां बोली : बेटी ! हमारे ख़लीफ़ा ने क्या हुक्म जारी फ़रमाया है ? लड़की ने बताया : अमीरुल मोमिनीन ने येह ए'लान करवाया है कि कोई भी दूध में पानी न मिलाए । मां ने येह सुन कर जब येह कहा : बेटी ! अब तो तुम्हें हज़रते सय्यिदुना उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** नहीं देख रहे, उन्हें क्या मा'लूम कि तुम ने दूध में पानी मिलाया है, जाओ और दूध में पानी मिला दो । तो लड़की बोली : ब ख़ुदा ! मैं हरगिज़ ऐसा न करूंगी कि उन के सामने तो फ़रमां बरदारी करूं और ग़ैर मौजूदगी में ना फ़रमानी करूं, इस वक़्त अगर्चे वोह मुझे नहीं देख रहे, लेकिन मेरा रब तो मुझे देख रहा है, मैं हरगिज़ दूध में पानी न मिलाऊंगी । हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने मां बेटी के दरमियान होने वाली येह तमाम गुफ़्तगू सुनी तो सुबह होते ही तफ़्तीशे हाल के बा'द अपने बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़सिम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के लिये उस लड़की का रिश्ता मांग लिया जो ब खुशी क़बूल कर लिया गया । फिर शादी के बा'द उन के हां एक बेटी पैदा हुई जिस से हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की विलादत हुई ।⁽¹⁾

..... عيون الحكايات، الحكاية الثانية عشرة، حكاية بنت بائعة اللّبن، ص ۲۸-۲۹، مأخوذاً

सहाबियात की बतौरे ख़ाला नसीहत

ख़ाला को इस्लाम ने मां का रुत्बा अता किया है। चुनान्वे, ख़ाला को भी वोही हक़ हासिल है जो मां को है। या'नी ख़ाला अपने भांजे को किसी भी बात पर उस की मां की तरह ही नसीहत कर सकती है। जैसा कि एक मरतबा उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को मा'लूम हुवा कि उन के भांजे हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا अपनी जौजा का बिस्तर हैज़ के अय्याम में न सिर्फ़ जुदा कर देते हैं बल्कि खुद भी दूर दूर रहते हैं तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने उन्हें येह नसीहत आमोज़ पैग़ाम भेजा : क्या तुम सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत से ए'राज़ किये हुवे हो, क्यूंकि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तो अपनी अज़वाजे मुतहहरात के अय्यामे हैज़ में भी उन के साथ एक ही बिस्तर पर आराम फ़रमा लिया करते और दरमियान में सिर्फ़ घुटनों तक कपड़ा होता।⁽¹⁾ इसी तरह उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के एक और भांजे हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन असम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं ने और उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के भांजे या'नी जन्नती सहाबी हज़रते सय्यिदुना तल्हा बिन उबैदुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के बेटे ने मिल कर मदीना शरीफ़ رَأَدَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا के एक बाग़ में घुस कर कुछ खाया तो येह बात उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना

.....مسند احمد، مسند النساء، حديث ميمونة... الخ، 11/111، حديث: 24546 مضمناً

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को मा'लूम हो गई, उस वक्त आप मक्काए मुकर्ममा رَأَاهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا से वापस तशरीफ ला रही थीं, अभी आप रास्ते में ही थीं कि हम दोनों की उन से मुलाकात हो गई तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपने भांजे के साथ साथ न सिर्फ मुझे भी डांटा डपटा बल्कि अहले बैते नबी से तअल्लुक की पासदारी का खयाल रखते हुवे आइन्दा ऐसा करने से मन्अ भी फरमाया।⁽¹⁾

सहाबियात की बतौरै फूफी नसीहत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! औरतें अम तौर पर अपने बहन भाइयों की औलाद से भी उसी क़दर महबबत करती हैं जिस क़दर वोह अपने बच्चों से करती हैं और बतौरै ख़ाला व फूफी वोह हमेशा अपने बहन भाइयों की औलाद की ख़ैरख़्वाही को भी पेशे नज़र रखती हैं। जैसा कि एक बार उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की भतीजी हज़रते सय्यिदतुना हफ़सा बिन्ते अब्दुरहमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا बारीक दूपट्टा ओढ़े आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने उस दूपट्टे को फाड़ते हुवे इरशाद फरमाया : **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ ने सूरए नूर में जो नाज़िल फरमाया है तुम्हें उस का इल्म नहीं ? फिर एक मोटा दूपट्टा मंगवा कर उन्हें ओढ़ा दिया।⁽²⁾

1.....مستدرک للحاکم، کتاب معرفة الصحابة، ذکر الصحابیات من ازواج النبی ﷺ،

ذکر ام المؤمنین میمونہ بنت حارث، ۴۲/۵، حدیث: ۶۸۷۸ مفہومًا

2.....الطبقات الکبری، ذکر ازواج رسول اللہ، ۴۱۲۸-عائشہ بنت ابی بکر الصديق، ۵۷/۸

सहाबियात की मुजाहिदीन को नसीहतें

जंगे यरमूक में लाखों की ता'दाद में रूमियों का टिड्डी दल लश्कर मुठ्ठी भर मुसलमानों से ऐसी इब्रतनाक शिकस्त से दो चार हुवा कि फिर वोह मुल्के शाम में कहीं भी अपने पाउं न जमा सका, येह जंग बिलाशुबा इस बात का वाजेह सुबूत है कि जब भी दीन की सर बुलन्दी के लिये कोई कठिन मर्हला आया मर्द तो मर्द औरतें भी कभी किसी से पीछे न रहीं। चुनान्वे, जंगे यरमूक के ग्यारहवें दिन जब मारने या मर जाने की कसमें उठा कर जन्जीरों से बन्धे हुवे रूमी सिपाहियों ने पागल अरने भेंसे की तरह हम्ला किया तो इब्तिदा में इस्लामी लश्कर का एक हिस्सा इस की ताब न ला सका और बा'ज मुजाहिदीन पस्पा होने लगे, मुस्लिम ख़वातीन ने इस मौक़अ पर जो किरदार अदा किया बिलाशुबा वोह अपनी मिसाल आप है। चुनान्वे,

इफ़फ़त व इस्मत की पैकर ख़वातीन ने जब घुड़ सुवारों को एड़ियों के बल मुड़ते देखा तो एक दूसरी को यूं पुकारने लगीं : ऐ बनाते अरब ! तय्यार हो जाओ हमारे मर्दों ने हज़ीमत का शिकार हो कर वापस लौटना शुरूअ कर दिया है, उन्हें रोको, अपने बच्चों को उठा कर उन के सामने लाओ और उन्हें लड़ाई पर उभारते हुवे मैदाने जंग की तरफ़ लौटाओ। लिहाज़ा सब आगे बढ़ीं, बा'ज ख़ैमों की चोबों से दुश्मनों के सामने सीना सिपर हो गई और मार मार कर उन का भुरकस निकाल दिया तो बा'ज मैदाने जंग से राहे फिरार इख़्तियार करने वाले शहसुवारों

के घोड़ों को पथर मार मार कर वापस जंग की तरफ लौटाने लगीं। यहां तक कि बा'जू अपने शोहरों से कहने लगीं : अगर तुम इन काफ़िरों से हमें महफूज़ न रख सके तो हम लम्हा भर के लिये भी तुम्हारे साथ रहना गवारा न करेंगी। जोशे ईमानी से सरशार उन ख़वातीन में कई जलीलुल क़द्र सहाबियात भी मौजूद थीं जो इस सिलसिले में दीगर ख़वातीन की रहनुमाई करने के इलावा अशआर की सूरत में मुसलमानों को लड़ाई पर भी उभार रही थीं। मसलन एक मौक़अ़ पर हज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की जौजा सय्यिदतुना हिन्दा बिनते उतबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जंग छोड़ कर भागते हुवे मुसलमानों को देख कर इरशाद फ़रमाया : **اَللّٰهُمَّ** और उस की जन्नत को छोड़ कर कहां भागे जा रहे हो ? हालांकि वोह तुम्हारी हालत ब ख़ूबी जानता है। फिर जब उन्होंने ने अपने ख़ावन्द हज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को भी जंग से वापस मुड़ते देखा तो उन के घोड़े के मुंह पर खैमे की चोब मारी और उन की गैरते ईमानी को उभारते हुवे नसीहत भरे लहजे में बोलीं : ऐ अबू सख़ ! किधर जा रहे हैं ? जंग की तरफ़ जाइये और तन मन की बाज़ी लगा दीजिये और उस वक़्त तक लड़ते रहिये जब तक कि ज़मानए नबवी की कोताहियों के दाग़ न मिट जाएं। आख़िर सहाबियाते तय्यिबात की येह पुर जोश नसीहतें काम आई और जंग की शिद्दत से वक़्ती तौर पर पस्पा

होने वाले मुसलमानों ने पलट कर इस जोश व वलवले के साथ हम्ला किया कि रूमियों का गुरुर खाक में मिला दिया।⁽¹⁾

सहाबियात की हुक्मरानों को नसीहतें

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक ख़त में उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से मुख़्तसर नसीहत करने को कहा तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जवाब में लिखा : سَلَامٌ عَلَيْكَ أَفَابَعْدُ मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते सुना है कि जो शख्स इन्सानों की नाराज़ी के साथ **اَبْلَاٰهُ** की रिज़ा चाहे तो **اَبْلَاٰهُ** उसे लोगों की नाराज़ी से महफूज़ रखेगा और जो खुदा को नाराज़ कर के लोगों की रिज़ा का तलबगार हो खुदा तआला उसे लोगों के हाथ सोंप देगा।⁽²⁾

हज़रते सय्यिदतुना बरीरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की ख़िदमत गुज़ार बांदी हैं जिन्हें आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने ख़रीद कर आज़ाद फ़रमा दिया था।⁽³⁾

अब्दुल मलिक बिन मरवान हुक्मत मिलने से पहले मदीनए मुनव्वरा رَأَاهَا اللَّهُ يَتَرَفًا وَتَعْظِيمًا में आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास बैठता तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا उसे येह नसीहत फ़रमाया करतीं : ऐ अब्दुल मलिक ! तुम

[1]..... فتوح الشام، ذكر وقعة اليرموك، نساء المسلمين في المعركة، ١٩٥-١٩٦ مملعة مطبوعه

[2]..... ترمذی، کتاب الزهد، ٦١-باب منه، ص ٥٤٣، حدیث: ٢٣١٣

[3]..... اصابة، کتاب النساء، حرف الباء، ١٠٩٣٣-بريرة مولاة عائشة، ٥٣/٨

में मुझे उस हुक्मत को हासिल कर लेने के औसाफ़ दिखाई देते हैं और वाकेई तुम उस के लाइक़ भी हो, अगर उस के वाली बन जाओ तो नाहक़ खून रेज़ी से इजतिनाब करना ! क्योंकि मैं ने शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को येह फ़रमाते सुना है : जो शख़्स किसी मुसलमान का नाहक़ खून बहाएगा तो वोह जन्नत के दरवाज़े से उस वक़्त दूर किया जाएगा जब वोह बिल्कुल उस की नज़रों के सामने होगी ।⁽¹⁾

एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** चन्द लोगों के हमराह मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाए तो रास्ते में एक बुजुर्ग़ ख़ातून को देखा, आप **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** ने उसे सलाम किया तो सलाम का जवाब देते हुवे उस औरत ने कहा : ऐ उमर सुनिये ! मुझे आप का वोह वक़्त याद है कि जब बाज़ारे उक्काज़ में आप को उमैर कह कर पुकारा जाता था आप अपने असा से बच्चों को डराया करते थे, अभी इस बात को ज़ियादा वक़्त नहीं गुज़रा कि आप को उमर कहा जाने लगा और इस बात को भी ज़ियादा अर्सा नहीं हुवा कि आप अमीरुल मोमिनीन के लक़ब से मौसूम हो गए हैं, मख़्लूक के बारे में **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** से डरिये और जान लीजिये ! जो वईद से डरा दूर की चीज़ उस के क़रीब हो जाएगी कि मौत से वोही डरता है जिसे कुछ खो जाने का ख़ौफ़ होता है । पास खड़े किसी शख़्स ने आप **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** से अर्ज़ की : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप ने अपने साथ दीगर लोगों को

भी इस बुढ़िया के पास खड़ा कर रखा है। तो आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उसे डांटते हुवे फ़रमाया : तुम जानते हो येह कौन हैं ? येह तो हज़रते ख़ौला हैं जिन की बात **اَللّٰهُ** ने भी सुनी⁽¹⁾ है, **اَللّٰهُ** की क़सम ! उमर, इन की बात सुनने का ज़ियादा हक़ रखता है।⁽²⁾

[1].....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **اَللّٰهُ** ने सुनी उस की बात जो तुम से अपने शोहर के मुआमले में बहस करती है (प २८, مجادلة: १) वोह ख़ौला बित्ने सा'लबा थीं, औस बिन सामित की बीबी। शाने नुज़ूल : किसी बात पर औस ने उन से कहा कि तू मुझ पर मेरी मां की पुश्त की मिस्ल है, येह कहने के बा'द औस को नदामत हुई, येह कलिमा ज़मानए जाहिलियत में तलाक़ था, औस ने कहा मेरे ख़याल में तू मुझ पर हराम हो गई, ख़ौला ने सय्यिदे आलम **سَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमत में हाज़िर हो कर तमाम वाकिआत अर्ज़ किये और अर्ज़ किया कि मेरा माल ख़त्म हो चुका, मां बाप गुज़र गए, उम्र ज़ियादा हो गई, बच्चे छोटे छोटे हैं, उन के बाप के पास छोड़ू तो हलाक हो जाएं, अपने साथ रखू तो भूके मर जाएं, क्या सूरत है कि मेरे और मेरे शोहर के दरमियान जुदाई न हो ? सय्यिदे आलम **سَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि तेरे बाब में मेरे पास कोई हुक्म नहीं या'नी अभी तक ज़िहार के मुतअल्लिक कोई हुक्मे जदीद नाज़िल नहीं हुवा, दस्तूरे कदीम येही है कि ज़िहार से औरत हराम हो जाती है, औरत ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह **سَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ! औस ने तलाक़ का लफ़्ज़ न कहा, वोह मेरे बच्चों का बाप है और मुझे बहुत ही प्यारा है, इसी तरह वोह बार बार अर्ज़ करती रही और जवाब हस्बे ख़्वाहिश न पाया तो आस्मान की तरफ़ सर उठा कर कहने लगी : या **اَللّٰهُ** तअ़ला ! मैं तुझ से अपनी मोहताजी व बेकसी और परेशान हाली की शिकायत करती हूं, अपने नबी पर मेरे हक़ में ऐसा हुक्म नाज़िल फ़रमा जिस से मेरी मुसीबत रफ़ू हो। हज़रते उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** ने फ़रमाया ख़ामोश हो देख चेहरए मुबारके रसूले करीम पर आसारे वह्य़ जाहिर हैं, जब वह्य़ पूरी हो गई, फ़रमाया : अपने शोहर को बुला, औस हाज़िर हुवे तो हुजूर ने (ज़िहार और इस के कफ़फ़ारे के मुतअल्लिक पारह, 28, सूएफ़ मुजादला की इब्तिदाई 4) आयतें पढ़ कर सुनाई। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 28, अल मुजादला, तह़तुल आयत : 1 स, 1001)

[2].....اصابة، كتاب النساء، حرف الخاء، 11118-خولة بنت مالك، 8/241 ملقطاً

कुरआनो सुन्नत से माखूज नसीहतों के मदनी फूल

पर्दे व जीनत से मुतअल्लिक मदनी फूल

- ﴿1﴾ औरत औरत (या'नी छुपाने की चीज) है।⁽¹⁾
- ﴿2﴾ औरत जब (बिला पर्दा) बाहर निकलती है तो शैतान उसे घूरता है।⁽²⁾
- ﴿3﴾ तन्हा अजनबी मर्द व औरत को शैतान आसानी से बुराई में मुब्तला कर देता है।⁽³⁾
- ﴿4﴾ औरत का तेज़ खुशबू लगा कर बाहर निकलना सख्त मन्अ और गुनाह का काम है।⁽⁴⁾
- ﴿5﴾ औरत सिर्फ़ वोही खुशबू इस्ति'माल करे जिस का रंग ज़ाहिर हो न कि खुशबू।⁽⁵⁾
- ﴿6﴾ बालिग़ होते ही औरत पर दीगर अहकामे शरइय्या के साथ साथ पर्दे के अहकाम भी लागू हो जाते हैं।⁽⁶⁾

1.....ترمذی، کتاب الرضاع، 18-باب، ص 304، حدیث: 1143

2.....ترمذی، کتاب الرضاع، 18-باب، ص 304، حدیث: 1143

3.....ترمذی، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی کراهیة الدخول... الخ، ص 304، حدیث: 1141

4.....ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی کراهیة خروج... الخ، ص 252، حدیث: 2489

5.....ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی طیب الرجال والنساء، ص 252، حدیث: 2484

6.....ابوداود، کتاب اللباس، باب فیما تبدی المرأة من زینتها، ص 235، حدیث: 3103

﴿7﴾ ✎ ऐसा बारीक दूपट्टा जिस से बालों की रंगत ज़ाहिर हो या बारीक कपड़े की जुराबें जिस से पाउं की पिन्डलियां चमकें पहनना ममनूअ है ।⁽¹⁾

﴿8﴾ ✎ शक्लो सूरत और लिबास वगैरा में मर्दों की मुशाबहत इख्तियार करने वाली औरत पर ला'नत फ़रमाई गई है ।⁽²⁾

﴿9﴾ ✎ सूई के ज़रीए नील या सुर्मा जिस्म में लगा कर नक्शो निगार बनाने और बनवाने वालियों पर ला'नत फ़रमाई गई है ।⁽³⁾

﴿10﴾ ✎ अलबत्ता ! ख़ूब सूरती के लिये औरतें हाथों पर मेहंदी लगा सकती हैं ।⁽⁴⁾

﴿11﴾ ✎ मुसलमान औरतें नज़रें नीची रखें । (प १८, १: ३१)

﴿12﴾ ✎ औरतों का बाप, बेटों, भाइयों, भतीजों, भांजों और अपने दीन की औरतों और अपनी कनीजों से पर्दा नहीं है । (प २२, १: ५५)

﴿13﴾ ✎ नाजाइज़ अश्या से ज़ीनत हासिल करने वाली औरतें जहन्म का शिकार होंगी ।⁽⁵⁾

नेक औरतों से मुतअल्लिक मद्दनी फूल

﴿1﴾ ✎ नेक औरतें शोहर की इताअत करती हैं । (प ५, १: ३३)

1..... موطأ امام مالك، كتاب اللباس، باب ما يكره للنساء... الخ، ص ۲۸۵، حديث: ۱۷۳۹

2..... ابوداود، كتاب اللباس، باب لباس النساء، ص ۲۲۲، حديث: ۲۰۹۷

3..... ابوداود، كتاب الترجل، باب في الحضاب للنساء، ص ۲۵۳، حديث: ۲۱۶۵

4..... بخاری، كتاب اللباس، باب الوصل في الشعر، ص ۱۲۸۶، حديث: ۵۹۳۷

5..... تاريخ بغداد، باب محمد، ذكر... حرف الالف، ۳۶۹- محمد بن ابراهيم، ۱/ ۲۱۵

﴿2﴾ ﷻ नेक औरत ही शोहर की अदम मौजूदगी में उस के माल की हिफाजत करती और उसे जाएअ व बरबाद होने से बचाती है।⁽¹⁾

﴿3﴾ ﷻ अच्छे आ'माल वालियों को **अल्लाह** तअला जन्नत अता फरमाएगा। (प५, النساء: १२४)

﴿4﴾ ﷻ नेक औरत निस्फ़ ईमान की हिफाजत का बाइस है।⁽²⁾

﴿5﴾ ﷻ नेक औरत नेक बख़्ती और बद औरत बद बख़्ती की अलामत है।⁽³⁾

﴿6﴾ ﷻ तक्वा के बा'द नेक बीबी से बेहतर कोई चीज़ नहीं।⁽⁴⁾

﴿7﴾ ﷻ बा'ज सूरतों में जन्मती औरत और शहीद के दरमियान एक दरजे का फ़र्क़ होगा।⁽⁵⁾

﴿8﴾ ﷻ दुन्या मताअ (सरमाया) है और दुन्या की बेहतर मताअ नेक औरत है।⁽⁶⁾

﴿9﴾ ﷻ मुसलमान औरतों और ईमान वालियों, फ़रमां बरदार और सच बोलने वालियों, सब्र करने और आजिज़ी इख़्तियार करने वालियों, अपनी निगाह की हिफाजत और **अल्लाह** को बहुत याद

1..... ابن ماجه، كتاب النكاح، باب افضل النساء، ص २९८، حديث: १८५८

2..... معجم اوسط، باب الالف، من اسماء احمد، १/ २८९، حديث: ९८२

3..... مسند احمد، مسند العشرة المبشرين بالجنة، مسند ابن اسحاق... الخ، १/ ३१३، حديث: १३११

4..... ابن ماجه، كتاب النكاح، باب افضل النساء، ص २९८، حديث: १८५८

5..... كنز العمال، حرف التون، كتاب النكاح، الباب الخامس في حقوق الزوجين، الفصل

الاول، المجلد الثامن، १/ १३३، حديث: २३८९

6..... مسلم، كتاب الرضاع، باب غير متاع الدنيا... الخ، ص ५५५، حديث: १३१८

करने वालियों के लिये **अल्लाह** ने बख्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है। (अहزاب: २२, ३५)

शोहर से मुतअल्लिक मद्दनी फूल

- ﴿1﴾ औरत ऐसी हो कि शोहर उस की तरफ़ देखे तो उस की परेशानी दूर हो जाए।⁽¹⁾
- ﴿2﴾ ब वक्ते विसाल जिस औरत का शोहर उस से राज़ी हो वोह जन्नती है।⁽²⁾
- ﴿3﴾ खुदा के सिवा किसी को सजदा जाइज़ होता तो औरत शोहर को करती।⁽³⁾
- ﴿4﴾ शोहर से नाराज़ हो कर रात गुज़ारने वाली औरत पर फ़रिश्ते सुब्ह तक ला'नत करते रहते हैं।⁽⁴⁾
- ﴿5﴾ शोहर की रिज़ा में रब की रिज़ा है।⁽⁵⁾
- ﴿6﴾ शोहर को तकलीफ़ पहुंचाने वाली औरत पर जन्नती हूँ नाराज़ होती हैं।⁽⁶⁾
- ﴿7﴾ हक्के शोहर अदा करने पर औरत ईमान की लज़्ज़त पाती है।⁽⁷⁾

- 1..... ابن ماجه، كتاب النكاح، باب افضل النساء، ص २९८، حديث: १८५८
- 2..... مشکاة المصابيح، كتاب النكاح، باب عشرة النساء، الفصل الثاني، १ / ५९८، حديث: ३२५२
- 3..... ترمذی، كتاب الرضاع، باب ما جاء في حق الزوج على المرأة، ص ३०१، حديث: ११५९
- 4..... بخاری، كتاب بدء الخلق، باب اذا قال احدكم... الخ، ص ८२، حديث: ३२३८
- 5..... كنز العمال، حرف النون، كتاب النكاح، الباب السادس في ترهيبات... الخ، الفصل الاول، المجلد الثامن، १/ १२، حديث: ۴۴۹۹۸
- 6..... ترمذی، كتاب الرضاع، ۱۹-باب، ص ۳۰۵، حديث: ۱۱۷۴
- 7..... مستدرک، كتاب البر والصلة، ۳۰۵-حق الزوج على الزوجة، ۵/ ۲۴۰، حديث: ۷۴۰۵

- ﴿8﴾ ﷻ **اَللّٰهُ** और अपने शोहर का हक़ अदा करने वाली औरत जन्नती है।⁽¹⁾
- ﴿9﴾ ﷻ शोहर को नेकी की तरगीब दिलाने वाली औरत जन्नती है।⁽²⁾
- ﴿10﴾ ﷻ शोहर के माल में ख़ियानत न करने वाली औरत जन्नती है।⁽³⁾
- ﴿11﴾ ﷻ औरत पर सब से ज़ियादा हक़ शोहर का और मर्द पर मां का है।⁽⁴⁾
- ﴿12﴾ ﷻ जो औरत पांचों नमाज़ें पढ़ने के साथ साथ अपने शोहर की इताअत करे तो जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो सकती है।⁽⁵⁾
- ﴿13﴾ ﷻ औरत अपने शोहर के घर और बच्चों की निगरान व ज़िम्मेदार है।⁽⁶⁾
- ﴿14﴾ ﷻ औरत अपने शोहर की इजाज़त के बिग़ैर घर से (बिला वजह) बाहर न जाए।⁽⁷⁾

1] كنز العمال، حرف النون، كتاب النكاح، الباب الخامس في حقوق الزوجين، الفصل

الاول، المجلد الثامن، ١٦/١٣٢ حديث: ٣٣٤٩٤

2] كنز العمال، حرف النون، كتاب النكاح، الباب الخامس في حقوق الزوجين، الفصل

الاول، المجلد الثامن، ١٦/١٣٢ حديث: ٣٣٤٩٤

3] كنز العمال، حرف النون، كتاب النكاح، الباب الخامس في حقوق الزوجين، الفصل

الاول، المجلد الثامن، ١٦/١٣٢ حديث: ٣٣٤٩٤

4] مستدرک للحاکم، کتاب البر والصلّة، ٣٠٥٦-اعظم الناس حقاً... الخ، ٥/٢٣٣،

حديث: ٤٣١٨

5] صحيح ابن حبان، كتاب النكاح، باب معاشرّة الزوجين، ذكر ايجاب الجنة للمراة... الخ،

ص ١١٢، حديث: ٣١٦٣

6] بخاری، کتاب الجمعة، باب الجمعة في القرى والمدن، ص ٢٤٣، حديث: ٨٩٣

7] كنز العمال، حرف النون، كتاب النكاح، الباب الخامس في حقوق الزوجين، الفصل

الاول، المجلد الثامن، ١٦/١٣٢ حديث: ٣٣٨٠١

﴿15﴾ ﷻ शोहर की इजाज़त के बिग़ैर घर से बाहर जाने वाली औरत पर फ़रिश्ते ला'नत करते हैं।⁽¹⁾

﴿16﴾ ﷻ औरत को हमेशा शोहर की खुशनूदी की तलाश में रहना चाहिये।⁽²⁾

﴿17﴾ ﷻ औरत अगर शोहर का हक़ जान लेती तो जब तक उस के पास खाना हाज़िर रहता येह खड़ी रहती।⁽³⁾

﴿18﴾ ﷻ जिस औरत का शोहर नाराज़ हो उस की कोई नेकी क़बूल होती है न कोई नमाज़।⁽⁴⁾

﴿19﴾ ﷻ शोहर के सामने किसी दूसरी औरत की ख़ूबियां इस तरह बयान करना गोया कि वोह उसे देख रहा है, मन्ज़ है।⁽⁵⁾

वालिदैन् व औलाद और दीगर रिश्तों से मुतअल्लिक़ मद्दनी फूल

﴿1﴾ ﷻ औरत का अपने वालिद की आमद पर एहतिरामन खड़ी होना बाइसे सवाब है।⁽⁶⁾

❏ كنز العمال، حرف النون، كتاب النكاح، الباب الخامس في حقوق الزوجين، الفصل

الاول، المجلد الثامن، ١٣٢/١٦، حديث: ٣٢٨٠١

❏ كنز العمال، حرف النون، كتاب النكاح، الباب الخامس في حقوق الزوجين، الفصل

الاول، المجلد الثامن، ١٣٥/١٦، حديث: ٣٢٨٠٩

❏ كنز العمال، حرف النون، كتاب النكاح، الباب الخامس في حقوق الزوجين، الفصل

الاول، المجلد الثامن، ١٣٥/١٦، حديث: ٣٢٨٠٩

❏ شعب الايمان، ٢٠-باب في حقوق الاولاد والاهلین، ٣١٤/٦، حديث: ٨٤٢٤

❏ ترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء في كراهية مباشرة... الخ، ص ٢٥٣، حديث: ٢٤٩٢

❏ ابوداود، کتاب الادب، باب ما جاء في القيام، ص ٨١٢، حديث: ٥٢١٤

- ﴿2﴾ मां बच्चों का खयाल रखे और उन्हें ज़रूर न पहुंचाए। (प २, البقرة: २३३)
- ﴿3﴾ मां से बच्चे मानूस हों तो वोह उन्हें खुद से दूर कर के तक्लीफ़ न पहुंचाए। (1)
- ﴿4﴾ जिस औरत ने अपनी बच्चियों की अच्छी तरह परवरिश की तो वोह बच्चियां उस के लिये जहन्नम की आग से आड़ होंगी। (2)
- ﴿5﴾ मन्सब व जमाल वाली औरत ने अपने यतीम बच्चों की खिदमत की तो वोह जन्नत में हुज़ूर ﷺ के साथ होगी। (3)

अहक़ामे तहारात से मुतअल्लिक़ मद्दनी फूल

- ﴿1﴾ सर की चोटी इतनी मज़बूत गूंधी हो कि गुस्ल करते वक़्त पानी बालों की जड़ों तक पहुंच जाए तो दुरुस्त वरना उसे खोलना फ़र्ज़ है। (4)
- ﴿2﴾ हलते हैं और जनाबत में औरत कुरआने पाक नहीं पढ़ सकती। (5)
- ﴿3﴾ हाइज़ा और जुनुबी औरत का मस्जिद में जाना ममनूअ है। (6)

1].....खज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 2, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 233, स. 79

2].....مسلم، كتاب البر والصلة... الخ، باب فضل الاحسان الى البنات، ص 101، حديث: 2429

3].....ابوداود، كتاب الادب، باب في فضل من عال يتيماً، ص 803، حديث: 5139

4].....مسلم، كتاب الحيض، باب حكم ضفائر المغتسلة، ص 135، حديث: 330

5].....ترمذی، ابواب الطهارة، باب ما جاء في الجنب... الخ، ص 35، حديث: 131

6].....ابوداود، كتاب الطهارة، باب في الجنب يدخل المسجد، ص 50، حديث: 232

- ﴿4﴾ हाइज़ा औरत तवाफ़े का'बा के इलावा बाकी तमाम अफ़आले हज़ अदा कर सकती है ।⁽¹⁾
- ﴿5﴾ हाइज़ा और जुनुबी औरत अपने शोहर की ख़िदमत कर सकती है ।⁽²⁾
- ﴿6﴾ हैज़ वाली औरत का जूठा खाना पानी पाक है ।⁽³⁾
- ﴿7﴾ हाइज़ा के पास बैठ कर कुरआने पाक पढ़ना और उस का सुनना जाइज़ है ।⁽⁴⁾
- ﴿8﴾ हाइज़ा औरत मस्जिद में दाख़िल हुवे बिग़ैर हाथ बढ़ा कर कोई चीज़ उठा सकती है ।⁽⁵⁾
- ﴿9﴾ कपड़े पर नजासते ग़लीज़ा (मसलन हैज़ का खून वग़ैरा) लग जाए तो उसे खुरचने के बा'द पानी से धो कर (या'नी पाक कर के) उसी कपड़े में नमाज़ अदा की जा सकती है ।⁽⁶⁾

इबादात वग़ैरा से मुतअल्लिक मदनी फूल

- ﴿1﴾ औरत का कमरे में नमाज़ पढ़ना सहन में पढ़ने से बेहतर है ।⁽⁷⁾

1..... بخاری، کتاب الحيض، باب الامر بالنساء اذا نفسن، ص ۱۲۵، حدیث: ۲۹۳

2..... بخاری، کتاب الحيض، باب غسل الحائض راس زوجها وترجيله، ص ۱۲۵، حدیث: ۲۹۶

3..... مسلم، کتاب الحيض، باب جواز غسل الحائض راس زوجها... الخ، ص ۱۲۷، حدیث: ۳۰۰

4..... بخاری، کتاب الحيض، باب قراءة الرجل في... الخ، ص ۱۲۶، حدیث: ۲۹۷

5..... مسلم، کتاب الحيض، باب جواز غسل الحائض راس زوجها... الخ، ص ۱۲۷، حدیث: ۲۹۸

6..... بخاری، کتاب الحيض، باب غسل دم المحيض، ص ۱۲۸، حدیث: ۳۰۷

7..... ابوداود، کتاب الصلاة، باب التشديد في ذلك، ص ۱۰۴، حدیث: ۵۷۰

﴿2﴾ ﷻ माहे रमज़ान के इलावा किसी दिन रोज़ा रखना शोहर की इजाज़त पर मौकूफ़ है।⁽¹⁾

﴿3﴾ ﷻ हालते हम्ल और दूध पिलाने के अय्याम में औरत रोज़ा छोड़ सकती है मगर उस की क़ज़ा दूसरे अय्याम में लाज़िम है।⁽²⁾

﴿4﴾ ﷻ औरतों का जिहाद हज़ है।⁽³⁾

﴿5﴾ ﷻ एहराम बांधने वाली औरत निकाब पहने न दस्ताने।⁽⁴⁾

﴿6﴾ ﷻ औरत के साथ जब तक कि उस का शोहर या बालिग़ महरम क़ाबिले इतमीनान न हो जिन से उस औरत का निकाह हमेशा के लिये ह़राम हो उस वक़्त तक औरत के लिये सफ़र (शरई) ह़राम है। औरत अगर बिला शोहर या बिग़ैर महरम के हज़ करेगी तो उस का हज़ हो जाएगा मगर हर हर क़दम पर गुनाह लिखा जाएगा।⁽⁵⁾

﴿7﴾ ﷻ मय्यित पर रोना, पीटना और कपड़े फाड़ना मन्अ़ है कि ये सब ज़मानए जहालत के काम हैं।⁽⁶⁾

1..... كنز العمال، حرف النون، كتاب النكاح، الباب الخامس في حقوق الزوجين، الفصل

الاول، المجلد الثامن، 1/12، حديث: 22801

2..... ترمذی، کتاب الصوم، باب ما جاء في الرخصة... الخ، ص 201، حديث: 415

3..... بخاری، کتاب الجهاد، باب جهاد النساء، ص 43، حديث: 2845

4..... بخاری، کتاب جزاء الصيد، باب ما ينهى من الطيب... الخ، ص 290، حديث: 1838

5]..... जन्ती ज़ेवर, स. 367

6..... بخاری، کتاب الجنائز، باب ليس من امن ضرب الحدود، ص 364، حديث: 1294

﴿8﴾ ﷻ नौहा करने वाली अगर मरने से पहले तौबा न करे तो क़ियामत में अज़िय्यत नाक सज़ा की मुस्तहिक होगी ।⁽¹⁾

मुतफ़रिक् मदनी फूल

﴿1﴾ ﷻ हर हाल में **अल्लाह** व रसूल का हर हुक्म मानना वाजिब है । (प २२, الاحزاب: ३६)

﴿2﴾ ﷻ **अल्लाह** व रसूल का हुक्म न मानने वालियां सरीह गुमराह हैं । (प २२, الاحزاب: ३६)

﴿3﴾ ﷻ दूसरों पर ला'नत करने की बिना पर कसीर औरतें जहन्नम में जाएंगी ।⁽²⁾

﴿4﴾ ﷻ दूसरों पर हंसना मन्ज़ है, हो सकता है कि जिस पर हंस रही हैं वोह आप से बेहतर हो । (प २६, الحجرات: ११)

﴿5﴾ ﷻ तोहफ़े को हक़ीर न समझा जाए ख़्वाह वोह बकरी का खुर ही हो ।⁽³⁾

﴿6﴾ ﷻ आपस में एक दूसरी को ता'ना न दो । (प २६, الحجرات: ११)

﴿7﴾ ﷻ एक दूसरी के बुरे नाम न रखो । (प २६, الحجرات: ११)

﴿8﴾ ﷻ अगर गुनाह हो जाए तो तौबा कर लो क्यूंकि जो तौबा नहीं करती वोह ज़ालिमा है । (प २६, الحجرات: ११)

﴿9﴾ ﷻ राहे खुदा में सताई जाने वाली औरतों के गुनाह मुअ़ाफ़ हो जाते

1] مسلم، كتاب الجنائز، باب التشديد في النياحة، ص ३३५، حديث: १३३

2] بخاری، كتاب الحيض، باب ترك الخائض الصوم، ص ११८، حديث: ३०३

3] بخاری، كتاب الهبة وفضلها والتعريض عليها، باب الهبة... الخ، ص ६१، حديث: २५२१

हैं और उन के लिये जन्नत की बिशारत है । (प २, आल عمران: १९५)

﴿10﴾ ﷻ दुन्या में जिस क़दर हो सके थोड़े माल पर ही इक्तिफ़ा करना चाहिये ।⁽¹⁾

﴿11﴾ ﷻ हर छोटे और बड़े पर रहम कीजिये यहां तक कि जानवरों पर भी ।⁽²⁾

﴿12﴾ ﷻ तुम में से कोई औरत किसी मर्द के साथ ख़ल्वत व तन्हाई में न जाए, हां महरम साथ हो तो जा सकती है ।⁽³⁾

﴿13﴾ ﷻ औरत महरम के बिगैर सफ़र (शरई) पर न निकले ।⁽⁴⁾

﴿14﴾ ﷻ जो औरत **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** और यौमे आख़िरत पर ईमान रखती हो वोह तीन रातों की मसाफ़त का सफ़र बिगैर महरम के न करे ।⁽⁵⁾

﴿15﴾ ﷻ औरतों का दम करना जाइज़ है ।⁽⁶⁾

﴿16﴾ ﷻ मुनाफ़िक़ औरतें जहन्नमी हैं । (प १०, التوبة: १८)

﴿17﴾ ﷻ जज़ाए आ'माल में औरत व मर्द के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं ।⁽⁷⁾



1] त्रमज़ी, کتاب اللباس، باب ما جاء في ترفيع الثوب، ص २२२، حدیث: १८८०

2] بخاری، کتاب الشرب والمصافة، باب فضل سقي الماء، ص १०، حدیث: २३५५

3] مسلم، کتاب الحج، باب سفر المرأة مع... الخ، ص ५०، حدیث: १३२१

4] مسلم، کتاب الحج، باب سفر المرأة مع... الخ، ص ५०، حدیث: १३२१

5] مسلم، کتاب الحج، باب سفر المرأة مع... الخ، ص ५०، حدیث: १३३८

6] ابوداود، کتاب الطب، باب ما جاء في الرق، ص ११२، حدیث: ३८८८

7] खज़ाइनल इरफ़ान, पारह 4, आले इमरान, तह़तुल आयत : 195, स. 150

﴿18﴾ ﷻ अल्लाह की पनाह जादूगर औरतों के शर से । (प: ३०, الفلق: २)

﴿19﴾ ﷻ गाने वाली औरत के पास बैठने वालियों और कान लगा कर ध्यान से सुनने वालियों के कान में बरोजे क़ियामत सीसा उंडेला जाएगा ।⁽¹⁾ तो गाने वाली का हाल क्या होगा ?

﴿20﴾ ﷻ जब तीन इस्लामी बहनें कहीं इकट्ठी हों तो तीसरी को छोड़ कर दो बाहम चुपके चुपके बातें न करें जब तक कि मजलिस में बहुत से लोग न आ जाएं । येह इस वजह से कि उस तीसरी को रन्ज पहुंचेगा ।⁽²⁾ (कि शायद मेरे मुतअल्लिक कुछ कह रही हैं या येह कि मुझे इस लाइक न समझा जो अपनी गुफ्तगू में शरीक करतीं, वगैरा)

अमीरे अहले सुन्नत की कुतुब से माख़ूज नसीहतें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जैल में पन्दरहवीं सदी की अज़ीम इल्मी व रुहानी शख़्सियत, शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी ज़ियाई **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** की कुतुब से माख़ूज चन्द मदनी फूल ज़रूरी तरमीम (या'नी मुज़क्कर के बजाए मुअन्नस सीगों) के साथ मज़कूर हैं ।

1..... كنز العمال، حرف اللام، كتاب اللهو واللعب والتغني، التفتي المحظور، المجلد الثامن

९२/१५، حديث: २०२२२

2..... بخاری، كتاب الاستئذان، باب اذا كانوا اكثر من... الخ، ص ۱۵۵، حديث: ۲۲۹۰

तन्जीमी मा'मूलात से मुतअल्लिक मदनी फूल

﴿1﴾ हमें हर वक़्त नेकी की दा'वत देने में मसरूफ़ रहना चाहिये, हो सकता है हमारी थोड़ी सी कोशिश किसी की तक़दीर बदल दे और वोह आख़िरत की बेहतरीयां इक़्ठी करने में मसरूफ़ हो जाए और आप का भी बेड़ा पार हो जाए।⁽¹⁾

﴿2﴾ अमल का ज़ब्ज़ा बढ़ाने के लिये मदनी माहोल ज़रूरी है, वरना अरिज़ी तौर पर ज़ब्ज़ा पैदा होता भी है तो अच्छी सोहबत के फुक़दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिफ़ामत नहीं मिल पाती।⁽²⁾

﴿3﴾ इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे अगर कोई तक़लीफ़ पहुंचे तो सब्रो शिकेबाई (या'नी तहम्मूल व बुर्दबारी) का दामन हाथ से मत छोड़िये कि आने वाली मुसीबत **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** बहुत बड़ी भलाई का पेश ख़ैमा साबित होगी।⁽³⁾

﴿4﴾ हमारा काम नेकी की दा'वत पहुंचाना है, मनवाना हमारा मन्सब नहीं।⁽⁴⁾

﴿5﴾ येह बात हमेशा याद रखिये कि इजतिमाअ की हाज़िरी में सिर्फ़ दुन्यावी मसाइल के हल ही की निय्यत न की जाए। तलबे इल्म और

1.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 19

2.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 31

3.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 64

4.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 88

सवाबे आखिरत कमाने की भी नियतें जरूर करनी चाहियें।⁽¹⁾

﴿6﴾ ﷻ गीबत से सच्ची तौबा कीजिये और ज़बान की हिफ़ाज़त की तरकीब बनाइये, इस पर इस्तिफ़ामत पाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के मद्दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये।⁽²⁾

﴿7﴾ ﷻ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मद्दनी काफ़िलों में सफ़र और मद्दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर माह जम्अ करवाना आप के क़ियामत के इम्तिहान के लिये मुमिद्दे मुआविन साबित होगा।⁽³⁾

﴿8﴾ ﷻ اَللّٰهُمَّ बुलन्द रुत्बा ख़ातूनाने इस्लाम के ज़ब्बए इस्लामी का कोई ज़रा हमारी माओं और बहनों को भी नसीब करे कि वोह भी अपनी औलाद को दीने इस्लाम की ख़ातिर कुरबानियों के लिये पेश करें, उन्हें सुन्नतों के सांचे में ढालें और अशिक़ाने रसूल के साथ मद्दनी काफ़िलों में सफ़र पर आमादा करें।⁽⁴⁾

इबादात से मुतअल्लिक मद्दनी फूल

﴿1﴾ ﷻ मुसलमान औरत के लिये हलाल नहीं कि काफ़िरा औरत के



1]....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 197

2]....गीबत की तबाहकारियां, स. 42

3]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ियामत का इम्तिहान, स. 425

4]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, हुसैनी दूल्हा, स. 22

सामने सित्र खोले । इस से इजतिनाब (बचना) लाज़िम है । जब तक मुसलमान दाई मिल सकती हो और वोह दुरुस्त काम सर अन्जाम दे सकती हो तो काफ़िरा से हरगिज़ येह काम न करवाया जाए ।⁽¹⁾

﴿2﴾ ✎ अब्बल तो इस्लामी बहनें नमाज़ पढ़ती नहीं और जो पढ़ती हैं उन की अक्सरियत सुन्नतें सीखने के ज़ब्बे की कमी के बाइस आज कल सहीह तरीक़े से नमाज़ पढ़ने से महरूम रहती है ।⁽²⁾

﴿3﴾ ✎ दौराने नमाज़ पेशानी से मिट्टी छुड़ाना बेहतर नहीं और مَعَادُ اللَّهِ तकब्बुर के तौर पर छुड़ाना गुनाह है और अगर न छुड़ाने से तकलीफ़ होती हो या ख़याल बटता हो तो छुड़ाने में हरज नहीं ।⁽³⁾

﴿4﴾ ✎ الْحَدِيدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ जहां जोहर की दस रकअत नमाज़ पढ़ लेती हैं वहां आख़िर में मज़ीद दो रकअत नफ़ल पढ़ कर बारहवीं शरीफ़ की निस्बत से 12 रकअत करने में देर ही कितनी लगती है ! इस्तिक़्ामत के साथ दो नफ़ल पढ़ने की निय्यत फ़रमा लीजिये ।⁽⁴⁾

①.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 193

②.....इस्लामी बहनों की नमाज़, नमाज़ का तरीक़ा, स. 84

③.....इस्लामी बहनों की नमाज़, नमाज़ का तरीक़ा, स. 113

④.....इस्लामी बहनों की नमाज़, नमाज़ का तरीक़ा, स. 127

﴿5﴾ बा'ज इस्लामी बहनें रात गए तक घरों में जागती रहती हैं, वोह इशा की नमाज पढ़ कर जल्दी सो जाने का जेहन बनाएं कि इशा के बा'द बिला वज्ह जागने में कोई भलाई नहीं।⁽¹⁾

﴿6﴾ क़ज़ा नमाज़ें छुप कर पढ़िये, लोगों पर (या घरवालों बल्कि क़रीबी सहेलियों पर भी) इस का इज़हार न कीजिये।⁽²⁾

﴿7﴾ बा'ज इस्लामी बहनें मस्जिद वगैरा में एक कुरआने पाक का नुस्खा दे कर अपने मन को मना लेती हैं कि हम ने मर्हूम की तमाम नमाज़ों का फ़िदया अदा कर दिया येह उन की ग़लत फ़ेहमी है।⁽³⁾

फ़िक़्रे आख़िरत से मुतअल्लिक मदनी फूल

﴿1﴾ इस दुन्या में आ कर हम सख़्त आज़माइश में मुब्तला हो गई हैं, हमारी आमद का मक्सद कुछ और था मगर शायद हम समझ कुछ और बैठी हैं।⁽⁴⁾

﴿2﴾ अगर मा'सियत के सबब **اَعْوَجَلَ** नाराज़ हो गया, उस के प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** रूठ गए और ईमान बरबाद हो गया तो वोह वोह मुश्किलात दरपेश होंगी जो कभी हल न होंगी।⁽⁵⁾

1].....इस्लामी बहनों की नमाज़, क़ज़ा नमाज़ों का तरीका, स. 152

2].....इस्लामी बहनों की नमाज़, क़ज़ा नमाज़ों का तरीका, स. 155

3].....इस्लामी बहनों की नमाज़, क़ज़ा नमाज़ों का तरीका, स. 163

4].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, मुर्दे की बे बसी, स. 360

5].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, मुर्दे की बे बसी, स. 362

﴿3﴾ ☞ आह ! शादियों में ख़ूब फ़ेशन परस्ती का मुज़ाहरा किया जाता है, ख़ानदान की जवान लड़कियां ख़ूब नाचतीं, गातीं ऊधम मचाती हैं। इस दौरान मर्द भी बिला तकल्लुफ़ अन्दर आते जाते हैं, मर्द और औरतें जी भर कर बद निगाही करते हैं, ख़ूब आंखों का ज़िना होता है, न ख़ौफ़े खुदा न शर्म मुस्तफ़ा। सुनो सुनो ! रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमाने इब्रत निशान है : आंखों का ज़िना देखना और कानों का ज़िना सुनना और ज़बान का ज़िना बोलना और हाथों का ज़िना पकड़ना है।⁽¹⁾

﴿4﴾ ☞ फ़िल्मी रेकोर्डिंग के बिगैर आज कल शायद ही कहीं शादी होती हो। अगर कोई समझाए तो बा'ज़ औकात जवाब मिलता है : वाह साहिब ! अब्बाह ﷺ ने पहली बच्ची की खुशी दिखाई है और गाना बाजा न करें, बस जी ! खुशी के वक़्त सब कुछ चलता है। (مَعَاذَ اللَّهِ) अरे नादानो ! खुशी के वक़्त अब्बाह ﷺ का शुक्र अदा किया जाता है कि खुशियां तवील हों, ना फ़रमानी नहीं की जाती, कहीं ऐसा न हो कि इस ना फ़रमानी की नुहूसत से इकलौती बेटी दुल्हन बनने के आठवें दिन रूठ कर मैके आ बैठे और मज़ीद आठ दिन के बा'द तीन तलाक़ का पर्चा आ पहुंचे और सारी खुशियां धूल में मिल जाएं। या धूम धाम से

[1]....बयानाते अतारिय्या हिस्सए अव्वल, गाने बाजे की हौलनाकियां, स. 119 ब हवाला

مسلم، کتاب القدس، باب قدر علی ابن آدم حظه من الزنا وغیره، ص ۱۰۲۳، حدیث: ۲۶۵۷

नाच गानों की धमाचौकड़ी में बियाही हुई दुल्हन 9 माह के बा'द पहली ही जचगी में मौत के घाट उतर जाए। आह ! सद हजार आह !

महब्बत खुसूमात में खो गई येह उम्मत रुसूमात में खो गई⁽¹⁾

﴿5﴾ जो इस्लामी बहनें ग़फ़लत का शिकार हो कर गुनाहों पर अड़ी रही वोह रास्ता भूल कर बे अमली की तारीकियों में भटक गई और खुदा व मुस्तफ़ा ﷺ की नाराज़ी की सूरत में क़ब्रों आख़िरत के अज़ाब में फंस कर रह गई, अब पछताने और सर पछाड़ने से कुछ हाथ नहीं आएगा, लिहाज़ा अब भी मौक़अ है जल्द तर अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने का अह्द कर लीजिये।⁽²⁾

﴿6﴾ हम बन्दों के सामने गुनाह करते हुवे तो डरती हैं मगर अफ़सोस ! इस बात से नहीं डरतीं कि हमारा रब हमें देख रहा है।⁽³⁾

﴿7﴾ हम ख़्वाह रोएं या हंसें, तड़पें या ग़फ़लत की नींद सोती रहें क़ियामत का इम्तिहान बरहक़ है।⁽⁴⁾

﴿8﴾ दुनिया के इम्तिहान के लिये तो आज कल रात रात भर पढ़ती,

[1].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, गाने बाजे की हौलनाकियां, स. 123

[2].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, ग़फ़लत, स. 24

[3].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, गुनाहों का इलाज, स. 74-75

[4].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ियामत का इम्तिहान, स. 390

नींद आए तो नींद कुशा (ANTI SLEEPING) गोलियां खा कर भी जागती और इस की तय्यारी करती हैं, मगर क्या क़ियामत के इम्तिहान के लिये भी कभी कोई रात जाग कर इबादत में बसर की ?⁽¹⁾

﴿9﴾ दुनिया के इम्तिहान में कामयाबी के लिये स्कूल और कोलेज का रुख करती हैं,⁽²⁾ क्या क़ियामत के इम्तिहान में कामयाबी के लिये भी सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत करती हैं ?⁽³⁾

﴿10﴾ दुनिया के इम्तिहान की तय्यारी के लिये ट्यूटर की ख़िदमात हासिल करती हैं, कोई एकेडमी या ट्यूशन सेन्टर जोइन (JOIN) करती हैं, क्या क़ियामत के इम्तिहान की तय्यारी के लिये सुन्नतों भरे मदनी माहोल को इख़्तियार किया ?⁽⁴⁾

﴿11﴾ दुन्यवी तरक्की के लिये आ'ला ता'लीम हासिल करने के लिये दूसरे शहरों बल्कि दूसरे मुल्कों तक का सफ़र इख़्तियार करती हैं, क्या आख़िरत की हकीकी तरक्की और क़ियामत के इम्तिहान की तय्यारी

1.....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ियामत का इम्तिहान, स. 423

2.....प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ऐसे स्कूलों और कोलेजों से इजतिनाब कीजिये जहां मख़्लूत ता'लीम (Co-Education) हो कि बालिग़ान की मख़्लूत ता'लीम का मुरव्वजा सिलसिला सरा सर नाजाइज़ व हराम और जहन्म में ले जाने वाला काम है ।

(पढ़ें के बारे में सुवाल जवाब, स. 176)

3.....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ियामत का इम्तिहान, स. 423

4.....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ियामत का इम्तिहान, स. 423

के लिये भी कभी दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी काफ़िले के साथ राहे खुदा में सफ़र किया ?⁽¹⁾

﴿12﴾ ۞ जहन्नम की आग तारीक होगी और पुल सिरात अन्धेरे में डूबा हुवा होगा । फ़क़त वोही कामयाब होगी जिस पर रब का फ़ज़्लो करम होगा ।⁽²⁾

﴿13﴾ ۞ क़ब्रो द़शर व पुल सिरात पर नूरे मुस्तफ़ा के सदके में **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कनीज़ाने मुस्तफ़ा को नूर ही नूर मिलेगा ।⁽³⁾

﴿14﴾ ۞ जिन खुश बख़्तों का ईमान पर खातिमा होगा वोह बिल आख़िर नजात पा जाएंगी और जिस का ईमान बरबाद हो गया और बिग़ैर तौबा के मर गई उस की नजात की कोई सूरत नहीं ।⁽⁴⁾

﴿15﴾ ۞ हर एक को डरना ज़रूरी है कि न मा'लूम मेरा क्या बनेगा !⁽⁵⁾

﴿16﴾ ۞ पुल सिरात जहन्नम पर बना हुवा है और उस पर से गुज़रे बिग़ैर जन्नत में दाख़िला मुमकिन नहीं ।⁽⁶⁾

1].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, क़ियामत का इम्तिहान, स. 424

2].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, पुल सिरात की दहशत, स. 442

3].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, पुल सिरात की दहशत, स. 451

4].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, पुल सिरात की दहशत, स. 461

5].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, पुल सिरात की दहशत, स. 461

6].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, पुल सिरात की दहशत, स. 461

﴿17﴾ आज हमारी हालत येह है कि हम दुन्यवी मुस्तक़िबल की सुधार के लिये तो बहुत ग़ौरो फ़िक्र करती और आइन्दा की दुन्यवी राहों के हुसूल की खातिर न जाने क्या क्या मन्सूबे बनाती हैं, लेकिन अफ़सोस ! हम अपनी आख़िरत को सुधारने की फ़िक्र से यक्सर ग़ाफ़िल और उस की तय्यारी के मुआमले में बिल्कुल काहिल हैं ।⁽¹⁾

﴿18﴾ फ़क़त दुन्यवी ज़िन्दगी सुधारने के तफ़क्कुरात में मुस्तगरक़ (مُسْتَغْرَق) हो कर उसी के लिये मसरूफ़े तगो दो रहना, अपनी आख़िरत की भलाई के लिये फ़िक्र व अमल से ग़फ़लत बरतना, साबिका आ'माल पर अपना एहतिसाब करते हुवे आइन्दा गुनाहों से बचने और नेकियां करने का अज़म न करना सरासर नुक़सान व खुसरान है ।⁽²⁾

मौत व क़ब्र की याद से मुतअल्लिक़ मदनी फूल

﴿1﴾ रात के अन्धेरे में डर जाने वाली, बिल्ली की मियाऊं पर चौंक पड़ने वाली, कुत्ते के भोंकने पर रास्ता बदल देने वाली, सांप और बिच्छू का नाम सुन कर थर थर कांप उठने वाली, सुलगती हुई आग को दूर से देख कर घबराने वाली, बल्कि फ़क़त धूएं से बे चैन हो जाने वाली इस्लामी बहनों के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या है कि जब क़ब्र में दाख़िल

[1].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, मैं सुधरना चाहता हूं, स. 40

[2].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, मैं सुधरना चाहता हूं, स. 41

होंगी तो वोह तमाम चीजें उन्हें डराने के लिये आ जाएंगी जिन से दुन्या में तो डरती थीं मगर **अब्बाह** से न डरती थीं।⁽¹⁾

﴿2﴾ ☞ हर मरने वाली खामोशी के साथ येह पैग़ाम देती चली जाती है कि जिस तरह मैं दुन्या से रुख़्सत हो कर मनो मिट्टी तले दफ़न की जाने वाली हूं आप को भी इसी तरह रुख़्सत हो कर दफ़न होना है।⁽²⁾

﴿3﴾ ☞ हमारा अन्दाज़े ज़िन्दगी येह बता रहा है कि **مَعَاذَ اللَّهِ** गोया हमें कभी मरना ही नहीं, याद रखिये ! हमें यहां हमेशा नहीं रहना, इस दुन्या में आने का मक्सद सिर्फ़ माल कमाना या फ़क़त दुन्या के उलूमो फुनून की डिग्रियां पाना और सिर्फ़ दुन्यवी तरक्कियां हासिल किये जाना नहीं है।⁽³⁾

﴿4﴾ ☞ घरों की फ़राख़ी का तो ख़याल रखा जाता है मगर क़ब्र की वुस्अत का किसी को कोई एहसास नहीं, दुन्या के रोशन मुस्तक़बल की तो हर एक को फ़िक्क है मगर क़ब्र की रोशनी की तरफ़ किसी का ध्यान नहीं।⁽⁴⁾

﴿5﴾ ☞ दौलत से दवा तो मिल सकती है लेकिन शिफ़ा नहीं मिल सकती, अगर दौलत से शिफ़ा मिल सकती तो अमीर हस्पतालों में एडियां रगड़ रगड़ कर हरगिज़ न मरते।⁽⁵⁾

1].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ब्र का इम्तिहान, स. 324

2].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ब्र का इम्तिहान, स. 327

3].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, मुर्दे की बे बसी, स. 360

4].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ियामत का इम्तिहान, स. 409

5].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ियामत का इम्तिहान, स. 410

﴿6﴾ ✎ घड़ी का गुजरने वाला हर घन्टा हमारी उम्र के एक घन्टे के कम हो जाने की इत्तिलाअ देता है।⁽¹⁾

﴿7﴾ ✎ कब्र के इम्तिहान से गुजर कर क़ियामत के इम्तिहान से वासिता पड़ना है।⁽²⁾

﴿8﴾ ✎ दुन्यवी कल के सुधरने का इन्तिज़ार करने वाली न जाने कितनी इस्लामी बहनों की आहें हसरत मौत की हिचकियों से हम आगोश हो जाती हैं और वोह रोशन मुस्तक़िबल पा कर खुशियां मनाने के बजाए अन्धेरी क़ब्र में उतर कर का'रे अफ़सोस (रंज के गढ़े) में जा पड़ती हैं।⁽³⁾

﴿9﴾ ✎ मौत के झटकों और नज़अ की सख़्तियों का इल्म होने के बावजूद अफ़सोस ! हम इस दुन्या में इतमीनान की ज़िन्दगी गुज़ार रही हैं।⁽⁴⁾

﴿10﴾ ✎ हमारा हर सांस मौत की तरफ़ गोया एक क़दम और हमारे शबो रोज़ मौत की जानिब गोया एक एक मील हैं।⁽⁵⁾

[1].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ियामत का इम्तिहान, स. 421

[2].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ियामत का इम्तिहान, स. 422

[3].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, मैं सुधरना चाहता हूं, स. 41

[4].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बादशाहों की हड्डियां, स. 83

[5].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बादशाहों की हड्डियां, स. 83

﴿11﴾ ☞ चाहे कोई ज़िन्दगी की कितनी ही बहारें लूटने में कामयाब हो जाए मगर उसे मौत की खज़ां से दो चार होना ही पड़ेगा ।⁽¹⁾

﴿12﴾ ☞ कोई चाहे कितनी ही ऐशो इशरत की ज़िन्दगी गुज़ारे मगर मौत तमाम तर लज़्ज़तों को ख़त्म कर के ही रहेगी ।⁽²⁾

﴿13﴾ ☞ कोई ख़्वाह कितनी ही अहलो इयाल और दोस्त व अहबाब की रौनकों में दिलशाद हो ले मगर मौत उसे जुदाई का ग़म दे कर ही रहेगी ।⁽³⁾

﴿14﴾ ☞ आह ! कितनी ही मग़रूर आबरूदार औरतें मौत के हाथों ज़लीलो ख़्वार हो गई ।⁽⁴⁾

﴿15﴾ ☞ न जाने मौत ने बुलन्द महल्लात में रहने वाली कितनी ही साहिबे जाह ख़वातीन को क़ब्र की काल कोठड़ी में डाल दिया ।⁽⁵⁾

﴿16﴾ ☞ न जाने कैसी कैसी अफ़्सरों को मौत ने कोठियों की वुस्अतों से उठा कर क़ब्र की तंगियों में पहुंचा दिया ।⁽⁶⁾

﴿17﴾ ☞ अफ़सोस ! बा'ज़ इस्लामी बहनें मा'सियत के अम्बार के बा

1]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बादशाहों की हड्डियां, स. 83

2]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बादशाहों की हड्डियां, स. 83

3]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बादशाहों की हड्डियां, स. 83

4]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बादशाहों की हड्डियां, स. 83

5]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बादशाहों की हड्डियां, स. 83

6]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बादशाहों की हड्डियां, स. 84

वुजुद खुशियों से झूम रही हैं मगर क़ब्र की दर्दनाक पुकार से यक्सर गाफ़िल हैं।⁽¹⁾

﴿18﴾ ❦ अक्लमन्द वोही है जो मौत से क़ब्र मौत की तय्यारी करते हुवे नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर ले और सुन्नतों का मदनी चराग़ क़ब्र में साथ ले कर क़ब्र की रोशनी का इन्तिज़ाम कर ले, वरना क़ब्र हरगिज़ येह लिहाज़ न करेगी कि मेरे अन्दर कौन आया?⁽²⁾

﴿19﴾ ❦ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने हर एक जानदार की रोज़ी अपने ज़िम्माए करम पर ले ली है मगर हर किसी मुसलमान के ईमान की हिफ़ाज़त या बे हिसाब मग़फ़िरत का ज़िम्मा नहीं लिया मगर फिर भी रोज़ी ही की फ़िक्र लगी हुई है, ईमान की हिफ़ाज़त और बे हिसाब मग़फ़िरत की त़लब के लिये किसी किस्म की हिल जुल नहीं।⁽³⁾

तौबा व मुहासबए नफ़स से मुतअल्लिक़ मदनी फूल

﴿1﴾ ❦ जो सिर्फ़ वक्ती तौर पर या दूसरों की देखा देखी रोने और पनाह मांगने लगती हैं, ऐसी ढीली और ज़ब्बाती औरतों पर शैतान हंसता है।⁽⁴⁾

﴿2﴾ ❦ बेशक ज़ब्बात में आ कर आरिज़ी तौर पर रोना और तौबा

[1].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बादशाहों की हड्डियां, स. 88

[2].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बादशाहों की हड्डियां, स. 92

[3].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, मैं सुधरना चाहता हूं, स. 66

[4].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अव्वल, पुल सिरात की दहशत, स. 467

करना भी अगर बर बिनाए इख़लास है तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** जरूर रंग लाएगा ।⁽¹⁾

﴿3﴾ ✎ गालों पर चन्द बार हल्की हल्की चपत मार लेने का नाम तौबा नहीं, बल्कि तौबा के तीन रुक्न हैं, अगर एक भी कम हो तो तौबा क़बूल नहीं । वोह रुक्न येह हैं : (1) ए'तिराफ़े जुर्म (2) नदामत और (3) अज़्मे तर्क । या'नी गुनाह छोड़ने का अज़्म ।⁽²⁾

﴿4﴾ ✎ समझदार औरत वोही है जिस ने हिसाबे आख़िरत को पेशे नज़र रखते हुवे खुद को सुधारने के लिये अपने नफ़्स का सख़्ती से मुहासबा किया और गुनाहों पर अफ़सोस और उन के बुरे अन्जाम का ख़ौफ़ महसूस किया ।⁽³⁾

﴿5﴾ ✎ हमारी अस्लाफ़ ख़वातीन नफ़्स को सुधारने के लिये इस का मुहासबा फ़रमातीं और हर दम नेकियों में मसरूफ़ रहने के बा वुजूद खुद को गुनहगार तसव्वुर करतीं मगर अफ़सोस ! आज हालत येह है कि शबो रोज़ गुनाहों के समुन्दर में ग़र्क़ रहने के बा वुजूद एहसासे नदामत है न ख़ौफ़े अ़किबत ।⁽⁴⁾

﴿6﴾ ✎ हमारी अस्लाफ़ ख़वातीन अपनी कमसिनी के गुनाह भी याद


[1].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अब्वल, पुल सिरात की दहशत, स. 468

[2].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अब्वल, पुल सिरात की दहशत, स. 470

[3].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए दुवुम, मैं सुधरना चाहता हूं, स. 41


[4].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए दुवुम, मैं सुधरना चाहता हूं, स. 43

रखतीं और इस पर **अल्लाह** से खौफ़ महसूस करतीं और एक आज की ख़वातीन हैं कि बालिग़ होने के बा वुजूद क़स्दन (या'नी जानबूझ कर) किये हुवे गुनाह भी भूल जाती और नक़ाइस से भरपूर नेकियों को याद रख कर उन पर इतराती रहती हैं।⁽¹⁾

﴿7﴾  वोह रब्बे बे नियाज़ जो दुन्या के अन्दर इन्सानों को बीमारियों, तक्लीफ़ों और मुसीबतों में मुब्तला कर सकता है वोह जहन्म का अज़ाब भी दे सकता है।⁽²⁾

मुआमलात व अख़लाक़िय्यात से मुतअल्लिक़ मदनी फूल

﴿1﴾  बनाव सिंघार घर की चार दीवारी में वोह भी सिर्फ़ महारिम के सामने हो।⁽³⁾

﴿2﴾  बन संवर कर ग़ैर मर्दों के सामने बे पर्दा फिरना फिराना ह़राम और जहन्म में ले जाने वाला काम है।⁽⁴⁾

﴿3﴾  औरत का मर्दों की तरह बाल कटवाना नाजाइज़ व गुनाह है।⁽⁵⁾

﴿4﴾  इस्लामी बहनें, इस्लामी बहनों में बिग़ैर माईक के इस तरह

1.....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, मैं सुधरना चाहता हूं, स. 46

2.....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, मैं सुधरना चाहता हूं, स. 65

3.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 10

4.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 10

5.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 280

ना'त शरीफ पढ़ें कि उन की आवाज़ किसी ग़ैर मर्द तक न पहुंचे। माईक का इस लिये मन्अ किया कि इस पर पढ़ने या बयान करने से ग़ैर मर्दों से आवाज़ को बचाना क़रीब क़रीब नामुमकिन है।⁽¹⁾

﴿5﴾ ❦ ग़ैर मर्द ग़ैर औरत को देखे या ग़ैर औरत ग़ैर मर्द को शहवत से देखे यह हराम और दोनों के लिये जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं।⁽²⁾

﴿6﴾ ❦ नामहरम मर्दों को ब शहवत देखने वालियों को अपनी कमज़ोरी और नातुवानी पर तरस खाते हुवे अपने आप को अज़ाबे इलाही से ख़ूब डराना चाहिये।⁽³⁾

﴿7﴾ ❦ अफ़्सोस ! हमारे ज़मीर मुर्दा होते जा रहे हैं, ग़ैरत की आंखों पर जहालत के पर्दे पड़ गए, हया का जनाज़ा निकल गया, गुनाहों पर नदामत के बजाए इज़हारे मसरत किया जा रहा है। नाच गाने का गुनाह इस क़दर आम हो गया है कि अब बच्चा बच्चा इस का शैदा हुवा जा रहा है।⁽⁴⁾

﴿8﴾ ❦ गाने बाजों में दिलचस्पी रखना शैतान और उस के पैरूकारों की सिफ़त है जब कि सअ़ादत मन्द इस्लामी बहनें फ़िल्मों, ड्रामों और गाने

[1].....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 254

[2].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, गाने बाजे की हौलनाकियां, स. 119

[3].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, गाने बाजे की हौलनाकियां, स. 120

[4].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, गाने बाजे की हौलनाकियां, स. 124

बाजों से दूर ही रहती हैं।⁽¹⁾

﴿9﴾ ☞ गाने बाजों के ज़रीए अपना ग़म ग़लत करना शैतानी काम है।⁽²⁾

﴿10﴾ ☞ गाने बाजों के ज़रीए इन्सान नफ़्सानी लज़्ज़तों में मुब्तला हो कर मज़ीद गुनाहों में फंस जाता है।⁽³⁾

﴿11﴾ ☞ गाने बाजे गुनाहों पर उक्साते, शहवत भड़काते और इन्सान को बे ग़ैरत बनाते हैं।⁽⁴⁾

﴿12﴾ ☞ बा'ज़ ख़वातीन अपने शोहरों की सख़्त नाफ़रमानियां और नाशुक्रियां करती हैं और ज़रा कोई बात बुरी लग जाए तो पिछले तमाम एहसानात भुला कर कोसना शुरूअ कर देती हैं, उन्हें इस से बाज़ रहना चाहिये।⁽⁵⁾

﴿13﴾ ☞ इजतिमाअत वग़ैरा में जहां भीड़ ज़ियादा हो वहां अपनी सहूलत के लिये ज़ियादा जगह घेर कर दीगर इस्लामी बहनों के लिये तंगी का बाइस न बनें।⁽⁶⁾

1]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अव्वल, गाने बाजे की हौलनाकियां, स. 134

2]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अव्वल, गाने बाजे की हौलनाकियां, स. 136

3]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अव्वल, गाने बाजे की हौलनाकियां, स. 136

4]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अव्वल, गाने बाजे की हौलनाकियां, स. 137

5]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अव्वल, एहतिरामे मुस्लिम, स. 268

6]....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अव्वल, एहतिरामे मुस्लिम, स. 275

﴿14﴾ ✎ एक इस्लामी बहन किसी ज़रूरत से मसलन वुजू करने के लिये अपनी जगह से उठ कर जाए और ज़रूरत पूरी कर के अभी अभी आने वाली हो तो उस की जगह दूसरी न बैठे ।⁽¹⁾

﴿15﴾ ✎ एहतिरामे मुस्लिम का तकाज़ा येह है कि हर हाल में हर इस्लामी बहन के तमाम हुक्क का लिहाज़ रखा जाए और बिला इजाज़ते शर्ई किसी की भी दिल शिकनी न की जाए ।⁽²⁾

﴿16﴾ ✎ ज़बान को काबू में रखिये कि ज़ियादा बोलते रहने से बा'ज औकात मुंह से कलिमाते कुफ़्र निकल जाते हैं और पता नहीं लगता ।⁽³⁾

﴿17﴾ ✎ गुस्से के सबब बहुत सारी बुराइयां जनम लेती हैं जो आखिरत के लिये तबाह कुन हैं मसलन : हसद, गीबत, चुगली, कीना, क़ट्ट, तअल्लुक़, झूट, आबरू रेज़ी, किसी को हकीर जानना, गाली गलोच, तकब्बुर, बेजा मार धाड़, तमस्खुर (या'नी मज़ाक़ उड़ाना), क़ट्ट रेह्मी, बे मुरव्वती, शमातत या'नी किसी के नुक़सान पर राज़ी होना और एहसान फ़रामोशी वगैरा ।⁽⁴⁾

1].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अव्वल, एहतिरामे मुस्लिम, स. 279

2].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अव्वल, एहतिरामे मुस्लिम, स. 280

3].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, स. 137

4].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, गुस्से का इलाज, स. 153

﴿18﴾ आप को बोल कर बारहा पछताना पड़ा होगा मगर खामोश रह कर कभी नदामत नहीं उठाई होगी।⁽¹⁾

﴿19﴾ अ़वाम में येह ग़लत मशहूर है कि गुस्सा ह़राम है। गुस्सा एक ग़ैर इख़्तियारी अम्र है, इन्सान को आ ही जाता है, इस में इस का कुसूर नहीं, हां गुस्से का बेजा इस्ति'माल बुरा है।⁽²⁾

मुतफ़रिक् मदनी फूल

﴿1﴾ बुरी सोहबत में हलाकत ही हलाकत और अच्छी सोहबत और अच्छों से महबबत व निस्बत में हर तरह से अ़फ़िय्यत है।⁽³⁾

﴿2﴾ जो भिकारी कमाने पर क़ादिर होने के बा वुजूद बिला ज़रूरत व मजबूरी बतौर पेशा भीक मांगते हैं गुनहगार हैं और ऐसों के हाल से बा ख़बर होने के बा वुजूद इन को देना जाइज़ नहीं।⁽⁴⁾

﴿3﴾ हर एक का त़बई मिज़ाज अलग अलग होता है एक ही दवा किसी के लिये आबे हयात का काम दिखाती है तो किसी के लिये मौत

[1].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए दुवुम, गुस्से का इलाज, स. 166

[2].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए दुवुम, गुस्से का इलाज, स. 173

[3].....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 78

[4].....इस्लामी बहनों की नमाज़, क़ज़ा नमाज़ों का तरीक़ा, स. 168

का पैग़ाम लाती है, लिहाज़ा किताबों में लिखे हुवे या अ़वामुन्नास के बताए हुवे इलाज शुरूअ करने से क़ब्ल अपनी त़बीबा से मशवरा कर लेना ज़रूरी है।⁽¹⁾

﴿4﴾ ۞ बदल बदल कर नहीं बल्कि एक ही त़बीबा से इलाज करवाना मुनासिब रहता है कि वोह त़बई मिज़ाज से वाकिफ़ हो जाती है।⁽²⁾

﴿5﴾ ۞ डराने के लिये अक्सर माएं झूट बोल दिया करती हैं कि बिल्ली आई, कुत्ता आया वगैरा। जिन्हों ने ऐसा किया उन को चाहिये कि सच्ची तौबा करें।⁽³⁾

﴿6﴾ ۞ शैतान के माले तिजारात में से एक मक्र या'नी धोका भी है जिसे येह औरतों के हाथों बेचता है।⁽⁴⁾

﴿7﴾ ۞ मां बाप की ना फ़रमानी करने वालियों को घबरा कर तौबा कर लेनी और वालिदैन से मुआफ़ी मांग कर उन को राज़ी कर लेना चाहिये।⁽⁵⁾



1].....इस्लामी बहनों की नमाज़, हैज़ो निफ़ास का बयान, स. 230

۞.....المرجع السابق

3].....गीबत की तबाहकारियां, स. 56

4].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, शैतान के चार गधे, स. 217

5].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल, मुर्दे की बे बसी, स. 377

«8» ❏ अगर वालिदैन् ख़िलाफ़े शरीअत हुक्म दें⁽¹⁾ तो इस बात में उन की फ़रमां बरदारी न की जाए।⁽²⁾

«9» ❏ बसा औकात दीन के मुआमले में मा'लूमात से बिल्कुल कोरी जाहिल औरतों के ग़ैर शरई मगर बे अमल नफ़्स को भाने वाले जवाब न जाने कितने ज़ेहन ख़राब कर देते हैं।⁽³⁾

«10» ❏ जो दूसरों को अपने नेक आ'माल सुनाती हैं वोह रियाकारी की तबाहकारी का शिकार हो जाती हैं।⁽⁴⁾

«11» ❏ क़ियामत में जहां कुफ़्फ़ार नाक़ाबिले बरदाश्त तकालीफ़ से दोचार होंगे वहां मोमिनीन पर झूम झूम कर रहमतें बरस रही होंगी।⁽⁵⁾

«12» ❏ अफ़सोस ! आज कल चुग़ली इस क़दर आम है कि अक्सर इस्लामी बहनों को शायद पता तक नहीं चलता कि चुग़ल ख़ोरी कर रही

❏.....किसी हुक्म के मुतअल्लिक़ येह जानने के लिये कि वाक़ेई येह ख़िलाफ़े शरीअत है या नहीं, उलमाए किराम बिल खुसूस मुफ़ितयाने किराम से ज़रूर शरई रहनुमाई ली जाए और खुद किसी भी काम के ख़िलाफ़े शरीअत होने का फैसला न किया जाए।

❏.....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, मुर्दे की बे बसी, स. 379

❏.....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए अब्वल, क़ियामत का इम्तिहान, स. 404

❏.....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, मैं सुधरना चाहता हूं, स. 57

❏.....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बादशाहों की हड्डियां, स. 103

हूँ। चुगल खोरी आखिरत के लिये सख्त तबाह कुन है।⁽¹⁾

﴿13﴾ ﷻ **اَللّٰهُ** की खुफ़्या तदबीर को कोई नहीं जानता, किसी को भी अपने इल्म या इबादत पर नाज़ नहीं करना चाहिये।⁽²⁾

﴿14﴾ ﷻ शैतान ने हजारों साल इबादत की, अपनी रियाज़त और इल्मियत के सबब मुअल्लिमुल मलकूत या'नी फ़रिश्तों का उस्ताज़ बन गया था लेकिन उस बद बख़्त को तकब्बुर ले डूबा और वोह काफ़िर हो गया।⁽³⁾

﴿15﴾ ﷻ बन्दों को बहकाने के लिये शैतान पूरा ज़ोर लगाता है, ज़िन्दगी भर तो वस्वसे डालता ही रहता है मगर मरते वक़्त पूरी ताक़त सर्फ़ कर देता है कि किसी तरह बन्दे का बुरा ख़ातिमा हो जाए।⁽⁴⁾

﴿16﴾ ﷻ ब जाहिर कोई कितनी ही इबादतों रियाज़त करे, दीन की ख़ूब तब्लीग़ व ख़िदमत करे, लेकिन अगर दिल में मुनाफ़क़त और मीठे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की अ़दावत हो तो नेकियों और इबादत की कोई हकीकत नहीं।⁽⁵⁾

1].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, स. 116

2].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, स. 132

3].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, स. 132

4].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए दुवुम, बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, स. 132

5].....बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए दुवुम, खुदकुशी का इलाज, स. 396

﴿17﴾ ﷻ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों को इम्तिहानात में मुब्तला फरमा कर उन के गुनाहों को मिटाता और दरजात को बढ़ाता है।⁽¹⁾

﴿18﴾ ﷻ जो मसाइबो आलाम पर सब्र करने में कामयाब होती हैं वोह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की रहमतों के साए में आ जाती हैं।⁽²⁾

﴿19﴾ ﷻ जो नेकियों में कमजोर हैं वोह नेकियों में आगे बढ़ जाने वाली इस्लामी बहनों पर रश्क कर के उन की तरह नेकियां बढ़ाने की जुस्तजू करें।⁽³⁾

﴿20﴾ ﷻ तंगदस्ती, बीमारी, परेशानी और फ़ौतगी के मवाकेअ पर सदमे या इश्तिआल के सबब बा'ज इस्लामी बहनें نَعُوْذُ بِاللّٰهِ कलिमाते कुफ़्र बक देती हैं।⁽⁴⁾

﴿21﴾ ﷻ अगर कोई इश्क़े मजाज़ी की आफ़त में फंस जाए तो उस को चाहिये कि सब्र करे। शादी से क़ब्ल मिलना बल्कि एक दूसरे को देखना नीज़ ख़त्तो किताबत, फ़ोन पर गुफ़्तगू और तहाइफ़ का लैन दैन वगैरा हर वोह फ़े'ल जो इस इश्क़ के सबब किया जाए हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।⁽⁵⁾

1].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, खुदकुशी का इलाज, स. 410

2].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, खुदकुशी का इलाज, स. 411

3].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, खुदकुशी का इलाज, स. 428

4].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, खुदकुशी का इलाज, स. 434

5].....बयानाते अत्तारिय्या हिस्सए दुवुम, खुदकुशी का इलाज, स. 469

सय्यिदी अत्तार की तरफ़ से बिनते अत्तार के लिये 12 मदनी फूल

घर को खुशियों का गहवारा बनाने और आखिरत संवारने के लिये शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** ने अपनी शहज़ादी बिनते अत्तार को रुख़्सती के वक़्त नसीहत आमेज़ दर्जे ज़ैल 12 मदनी फूल अता फ़रमाए :

﴿1﴾ ➞ शोहर की तरफ़ से मिलने वाला हर हुक्म जो ख़िलाफ़े शरअ न हो बजा लाना ज़रूरी है ।

﴿2﴾ ➞ अपने शोहर और सास का खड़े हो कर इस्तिक्बाल कीजिये और खड़े हो कर ही रुख़्सत भी कीजिये ।

﴿3﴾ ➞ दिन में कम अज़ कम एक बार (मुमकिन हो तो) सास की दस्तबोसी कीजिये ।

﴿4﴾ ➞ अपनी सास और सुसर का वालिदैन की तरह इकराम कीजिये । उन की आवाज़ के सामने अपनी आवाज़ पस्त रखिये । उन के और अपने शोहर के सामने **जी जनाब** से बात कीजिये ।

﴿5﴾ ➞ शोहर ज़रूरतन सज़ा देने का मजाज़ है । ऐसा हो तो सब्र व तहम्मूल का मुज़ाहरा कीजिये, गुस्सा कर के या ज़बान दराज़ी कर के घर से रूठ कर आ जाने की सूरत में आप पर **मैके** के दरवाज़े बन्द हैं ।

﴿6﴾ फ़ हां बिगैर रूठे शोहर की इजाज़त की सूरत में जब चाहें मैके आ सकती हैं ।

﴿7﴾ फ़ अपने मैके की कोताहियां शोहर को बता कर गीबत के गुनाहे कबीरा में न खुद मुब्तला हों न अपने शोहर को सुनने के गुनाहे कबीरा में मुलव्वस करें ।

﴿8﴾ फ़ अपनी बे अमली या ला इल्मी को ढांपने के लिये इस तरह कह देना कि मुझे तो वालिदैन् ने येह नहीं सिखाया सख़्त हमाक़त है ।

﴿9﴾ फ़ बहारे शरीअत हिस्सा 7 से नान नफ़का का बयान, जौजैन् के हुकूक वगैरा का मुतालाआ कर लीजिये ।

﴿10﴾ फ़ अपने लिये किसी किस्म का सुवाल अपने शोहर से कर के उन पर बोझ मत बनना । हां अगर वोह मुक़रर कर्दा हुकूक अदा न करें तो मांग सकती हैं ।

﴿11﴾ फ़ मेहमान की खिदमत सआदत समझ कर करना, इस के अख़राजात के मुआमले में शोहर पर बेजा बोझ मत डालना । अपने वालिद (या'नी सगे मदीना) से त़लब कर लेना । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** मायूसी नहीं होगी और अगर वोह खुश दिली से रिज़ामन्द हों तो उन की सआदत मन्दी होगी ।

﴿12﴾ फ़ शोहर की इजाज़त के बिगैर हरगिज़ घर से न निकलें ।



शादी के मौक़अ पर अमीरे अहले सुन्नत की तरफ़ से इस्लामी बहनों को दिया जाने वाला मक्तूब

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सगे मदीना मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि रज़वी غُفَى عَنْهُ की जानिब से दरबारे मदीना की भिकारन, कनीजे गौसे ज़मन, ख़ादिमए शहनशाहे जुलमिनन की खिदमत में मदीनए मुनव्वरा رَاَدَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا की मुस्कुराती हुई बहारों और मक्कए मुकर्रमा رَاَدَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا के रंगीन रेगज़ारों और वहां के ख़ूब सूरत पहाड़ों की क़ितारों की बरकतों से माला माल महका महका खुशगवार सलाम ।

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ عَلَى كُلِّ حَالٍ

اَللّٰهُ आप को दोनों जहानों में शादो आबाद रखे, आप की खुशियों को तवील करे, اَللّٰهُ आप को मदीनए मुनव्वरा رَاَدَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا के सदा बहार फूलों की तरह हमेशा मुस्कुराती रखे । आप की बीमारियां, परेशानियां, घरेलू नाचाक़ियां, तंग दस्तियां, क़र्ज़ दारियां दूर हों । इज़्दवाजी जिन्दगी खुशगवार गुज़रे । औलादे सालेहा से गोद हरी रहे, बार बार हज़ का शरफ़ मिले और मीठा मदीना चूमना नसीब हो । آمين بِجَاةِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

आप की दुनिया व आखिरत की बेहतरी के जज़्बे के तहत महज़ हुसूले सवाब की खातिर अर्ज करता हूँ कि अपने शोहर की खिदमत में कोताही मत करना, इस जिम्न में मीठे मीठे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के 6 खुशबूदार इरशादात पेश करता हूँ :

﴿1﴾ ➡ क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर क़दम से सर तक शोहर के तमाम जिस्म में ज़ख़्म हों जिन से पीप और कच लहू बहता हो फिर औरत उसे चाटे तब भी हक्के शोहर अदा न किया ।⁽¹⁾

﴿2﴾ ➡ हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में अर्ज की, कि दो औरतें दरवाजे पर येह सुवाल करने के लिये खड़ी हैं कि अगर वोह अपने शोहर और अपने ज़ेरे कफ़ालत यतीमों पर सदका करें तो क्या उन की तरफ़ से सदका अदा हो जाएगा ? तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : वोह औरतें कौन हैं ? हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज की : अन्सार की एक औरत और ज़ैनब है । तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : उन दोनों के लिये दुगना अन्न है, एक रिश्तेदारी का और दूसरा सदके का ।⁽²⁾

1.....مسند احمد، مسند انس بن مالك، ٢٢٥/٥، حديث: ١٢٩٢٩

2.....مسلم، كتاب الزكاة، باب فضل النفقة... الخ، ص ٣٦٠، حديث: ١٠٠٠ ملخصاً

﴿3﴾ ➡ शोहर ने बीवी को बुलाया उस ने इन्कार कर दिया और उस (शोहर) ने गुस्से में रात गुज़ारी तो फ़रिश्ते सुबह तक उस औरत पर ला'नत भेजते रहते हैं।⁽¹⁾ और दूसरी रिवायत में है : (शोहर) जब तक उस से राज़ी न हो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस औरत से नाराज़ रहता है।⁽²⁾

﴿4﴾ ➡ और (बीवी) बिगैर इजाज़त उस (शोहर) के घर से न जाए अगर ऐसा किया तो जब तक तौबा न करे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और फ़रिश्ते उस पर ला'नत करते हैं। अर्ज़ की गई : अगर्चे शोहर ज़ालिम हो ? फ़रमाया : अगर्चे ज़ालिम हो।⁽³⁾ बात बात पर रूठ कर मैके चली जाने वाली औरतों के लिये मुन्दरिजए बाला हदीस में काफ़ी दर्स है।

﴿5﴾ ➡ तीन किस्म के लोगों की नमाज़ को **अल्लाह** तअ़ाला क़बूल नहीं फ़रमाता एक तो वोह औरत जो अपने शोहर की इजाज़त के बिगैर घर से निकले, दूसरा भागा हुआ गुलाम और तीसरा वोह बादशाह जिस की रिआया उसे नापसन्द करती हो।⁽⁴⁾

1] بخاری، کتاب بدء الخلق، باب اذا قال احدکم... الخ، ص ۸۲۹، حدیث: ۳۲۳۷

2] مسلم، کتاب النکاح، باب تحریم امتناعها من... الخ، ص ۵۳۹، حدیث: ۱۴۳۶

3] کنز العمال، حرف النون، کتاب النکاح، الباب الخامس فی حقوق الزوجین، الفصل الاول،

المجلد الثامن، ۱۶/ ۱۴۴، حدیث: ۴۴۸۰۱

4] کنز العمال، حرف المیم، کتاب المواعظ والرتق... الخ، الباب الثاني فی ترهيات، الفصل

الثالث، المجلد الثامن، ۱۶/ ۲۵، حدیث: ۴۳۹۱۹

शायद किसी इस्लामी बहन को येह वस्वसा आए कि क्या सिर्फ औरतों पर ही मर्दों के हुक्क हैं ? मर्दों पर भी औरतों के कोई हुक्क हैं या नहीं ! तो पढ़िये :

﴿6﴾ ➡ कोई मोमिन किसी मोमिना बीवी को दुश्मन न जाने अगर उस की किसी आदत से नाराज़ हो तो दूसरी ख़स्लत से राज़ी हो जाए ।⁽¹⁾ हकीमुल उम्मत हज़रते मौलाना मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَن लिखते हैं : **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** कैसी नफ़ीस ता'लीम ! मक्सद येह है कि बे ऐब बीवी मिलना नामुमकिन है, लिहाज़ा अगर बीवी में दो एक बुराइयां भी हों तो उसे बरदाश्त करो कि कुछ ख़ूबियां भी पाओगे । यहां साहिबे मिर्कात ने फ़रमाया : जो बे ऐब साथी की तलाश में रहेगा वोह दुन्या में अकेला ही रह जाएगा, हम खुद हज़ारहा बुराइयों का सर चश्मा हैं, हर दोस्त अज़ीज़ की बुराइयों से दर गुज़र करो, अच्छाइयों पर नज़र रखो, हां ! इस्लाह की कोशिश करो, बे ऐब तो रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) हैं ।⁽²⁾

ज़ैल के पांच मदनी फूल भी अपने दिल के मदनी गुलदस्ते पर सजा लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** घर अमन का गहवारा बन जाएगा ।

.....مسلم، كتاب الرضاع، باب الوصية بالنساء، ص 556، حديث: 1429 [1]

[2]मिरआतुल मनाजीह, बीवियों से बरताव, पहली फ़स्ल, 5 / 87

﴿1﴾ ➡ सास और नन्द से किसी सूरत भी न बिगाड़िये। उन की खूब खिदमत करती रहिये। अगर वोह तन्ज़ करें तो खामोश रहिये।

﴿2﴾ ➡ सास बिलफ़र्ज़ झिड़कियां दे तो अपनी मां का तसव्वुर कर लीजिये कि वोह डांट रही हैं तो सब्र आसान हो जाएगा। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

﴿3﴾ ➡ आप ने कभी सास के गुस्से हो जाने पर अगर जवाबी गुस्से का मुज़ाहरा किया तो फिर निभाव मुश्किल तरीन है।

﴿4﴾ ➡ सुसराल की बद सुलूकी की फ़रयाद अपने मैके में करना आगे चल कर तबाही का इस्तिक्बाल करना है। लिहाज़ा सब्र के साथ साथ इस उसूल पर कारबन्द रहिये कि **एक चुप सो को हराए** जवाब में सिर्फ़ दुआए ख़ैर कीजिये।

﴿5﴾ ➡ उमूमन आज कल सुसराल की तरफ़ से बहू पर **जादू करती है**, अपने शोहर को **काबू कर लिया है** वगैरा वगैरा इल्ज़ाम लगाए जाते हैं, खुदा न ख़्वास्ता आप के साथ ऐसा मुआमला हो जाए तो आपे से बाहर हो जाने के बजाए हिक्मते अमली और इन्तिहाई नर्मी से काम लीजिये। अपना कमरा दिन के वक्त बन्द न रखिये, घर के दूसरे अफ़राद की मौजूदगी में अपने शोहर से **काना फूसी** न कीजिये। शोहर की मौजूदगी में भी चाए वगैरा अपनी सास या नन्द के साथ बैठ कर ही पियें।

उन के सामने हरगिज़ मुंह न बिगाड़िये, गुस्सा निकालने के लिये बरतन

जोर से न पछाड़िये। बच्चों को इस तरह मत डांटिये कि उन को वस्वसा आए कि हमें सुनाती और कोसती है। धोने पकाने के काम में फुर्ती दिखाइये, मतलब येह कि नजासत को नजासत से (या'नी इल्जाम को हंगामे से) पाक करने के बजाए (हिक्मत व हुस्ने अख़लाक़ के) पानी ही से पाक किया जा सकता है। इस तरह आप **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** अपने सुसराल की मन्ज़ूरे नज़र हो जाएंगी और ज़िन्दगी भी खुश गवार हो जाएगी, सुसराल के हक़ में दुआ से गुफ़लत न कीजिये कि दुआ से बड़े बड़े मसाइल हल हो जाते हैं। सौमो सलात की पाबन्दी करती रहिये, शरई पर्दे का एहतियाम कीजिये। याद रहे ! देवर व जेठ से भी पर्दा है। अपने घर में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स जारी कीजिये। ख़ामोशी की आदत डालिये कि ज़ियादा बोलने से झगड़े का अन्देशा बढ़ जाता है। फ़ेशन परस्ती के बजाए सुन्नतों का रास्ता इख़्तियार कीजिये कि इसी में भलाई है। मुझ गुनहगार को दुआए ग़मे मदीना व बक़ीअ व मग़फ़िरत से नवाज़ती रहें। अगर आप को मेरा येह मक्तूब पसन्द आए तो इसे प्लास्टिक कोटिंग करवा लीजिये और खुदा न ख़्वास्ता कभी घरेलू झगड़ा हो तो इस को पढ़ लीजिये। **والسلام مع الأكرام**

शादी मुबारक के नौ हुरफ की निश्चत से 9 मदनी फूल

- 1) बहू को चाहिये कि अपनी मां बहनों ही की तरह अपनी सास और नन्द से भी महब्बत करे।
- 2) बहू की मौजूदगी में मां और बेटी का आपस में काना फूसी करना बहू के लिये वस्वसों का बाइस और उस के दिल में एहसासे महरूमि पैदा करने वाला है और इस तरह उस के दिल में नफरतों की बुन्याद पड़ती है।
- 3) बहू को जब तक बेटी से बढ़ कर सास का प्यार नहीं मिलेगा उस वक्त तक उस का अपनी सास, नन्दों से मानूस होना बहुत मुश्किल है।
- 4) सास कभी डांट दे तो बहू को चाहिये कि अपनी मां की डांट समझ कर बरदाश्त कर ले।
- 5) अगर कभी बहू बद तमीजी कर बैठे तो सास को चाहिये कि बेटी समझ कर मुआफ़ कर दे।
- 6) भूल कर भी येह अल्फ़ाज़ किसी के मुंह से न निकलें कि बहू ता 'वीज़ करवाती है, वरना फ़साद बरपा और सुकून बरबाद हो सकता है।

﴿7﴾ अगर खुदा न ख्वास्ता कभी घर से ता'वीज़ मिल भी जाए तब भी बिगैर शरई सुबूत के येह तै कर लेना कि बहू ने डाला जाइज़ नहीं ।

﴿8﴾ यकीन जानिये ! शैतान भी ता'वीज़ ऐसी जगह डाल सकता है कि घर के किसी फ़र्द के हाथ लग जाए और घर में फ़साद खड़ा हो ।

﴿9﴾ भाभी का देवर व जेठ से पर्दा न करना हुराम और जहन्म में ले जाने वाला काम है । सास और सुसर वगैरा बा वुजूदे कुदरत नहीं रोकेंगे तो खुद भी गुनहगार होंगे ।

शादी शुदा इस्लामी बहनों के लिये ﴿14﴾ मदनी फूल

﴿1﴾ मियां हाकिम होता और बीवी महकूम होती है इस के उलट होने का खयाल भी दिल में न लाइये ।

﴿2﴾ जब मियां हाकिम है तो उस की इताअत को लाज़िम समझिये । सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : औरत जब पांच नमाज़ें पढ़े, रमज़ान के रोज़े रखे, अपनी इज़ज़त की हिफ़ाज़त करे और अपने ख़ावन्द की इताअत करे तो जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो ।⁽¹⁾

﴿3﴾ उन का शरीअत के मुताबिक़ मिलने वाला हर हुक्म ख़्वाह नफ़्स पर कितना ही गिरां हो खुश दिली के साथ सर आंखों पर लीजिये ।

..... معجم اوسط، باب العين، من اسمعہ عبد ان، ۳/ ۲۸۳، حدیث: ۲۵۹۸ [1]

﴿4﴾ ➡ उन की पसन्द के खाने उन की मर्जी के मुताबिक उम्दा तरीके पर पका कर, बश्शाशत (खुशी) के साथ पेश कर के उन के दिल में खुशी दाखिल कर के बे अन्दाज़ा सवाब की हकदार बनिये। हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़दीक फ़राइज़ की अदाएगी के बा'द सब से अफ़ज़ल अमल मुसलमान के दिल में खुशी दाखिल करना है।⁽¹⁾

﴿5﴾ ➡ उन की हर वोह तन्कीद जो शरअन दुरुस्त हो अगर उस पर बुरा लगे तो इसे शैतान का वार समझ कर लाहौल शरीफ़ पढ़ कर शैतान को नामुराद लौटाइये।

﴿6﴾ ➡ अगर किसी ख़ता बल्कि ग़लत फ़ेहमी की बिना पर भी मियां डांट डपट करे या बिलफ़र्ज़ मारे तो हंसी खुशी सह लीजिये कि इस में आप की आख़िरत के साथ साथ दुन्या में भी भलाई है और إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى घर अमन का गहवारा रहेगा।

﴿7﴾ ➡ अगर सामने ज़बान चलाई, मुंह फुलाया, बरतन पछाड़े, मियां का गुस्सा बच्चों पर उतारा और इसी तरह की दीगर नामुनासिब हरकतें कीं तो इस से हालात संवरने के बजाए मज़ीद बिगड़ेंगे, येह अच्छी तरह गिरह में बांध लीजिये कि इस तरह करने से अगर ब

.....معجم کبیر، ما استند عبد الله بن عباس، مجاهد عن ابن عباس، ۲۶۶/۵، حدیث: ۱۰۹۱۶ [1]

ज़ाहिर सुल्ह हो भी गई तब भी दिलों में से नफ़रतें ख़त्म होने का इमकान न होने के बराबर है।

﴿8﴾ ➡ मियां की ख़ामियों के बजाए ख़ूबियों ही पर नज़र रखिये और उन के हक़ में **اللَّهُ** **عَزَّوَجَلَّ** से डरती रहिये।

ऐबों को ऐब जू की नज़र ढूँडती है पर

जो खुश नज़र है ख़ूबियां आएँ उसे नज़र

﴿9﴾ ➡ मियां या सुसराल की शिकायत मैके में करना दुनिया व आख़िरत के लिये सख़्त नुक़सान देह साबित हो सकता है कि फ़ी ज़माना मुशाहदा येही है कि इस तरह ग़ीबतों, तोहमतों, चुग़लियों, ऐबदरियों और दिल आज़ारियों वग़ैरा तरह तरह के गुनाहों का बहुत बड़ा दरवाज़ा खुल जाता है, फिर इस की नुहूसत से बारहा दुनिया में येह आफ़त आती है कि घर टूट जाता है।

﴿10﴾ ➡ हां अगर वाक़ेई शोहर जुल्म करता है या सुसराल वाले सताते हैं तो सिर्फ़ ऐसे शख़्स को अच्छी निय्यत के साथ फ़रयाद की जाए जो जुल्म से बचा सकता, सुल्ह करवा सकता हो या इन्साफ़ दिलवा सकता हो, बाकी सिर्फ़ भड़ास निकालना, दिल हल्का करने के लिये घर की बातें मैके या सहेलियों के पास करना ग़ीबतों और तोहमतों वग़ैरा के गुनाहों में डाल कर सुनने सुनाने वालों को जहन्नम का हक़दार बना सकता है।

﴿11﴾ ➡ बिलफर्ज शोहर या सास वगैरा की किसी हरकत से कभी दिल को ठेस पहुंचे तो खुद को काबू में रखिये, यह आप के इम्तिहान का मौक़अ है कि या तो ज़बान व दिल को काबू में रख कर सब्र कर के जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों को पाने की सई कीजिये या ज़बान की आफ़तों में पड़ कर शरीअत का दाइरा तोड़ कर अपने आप को जहन्नम की हक़दार ठहराइये ।

﴿12﴾ ➡ अगरचें आप कितनी ही मसरूफ़ हों, ख़्वाह नींद के मजे लूट रही हों, जूं ही शोहर आवाज़ दे, सवाबे अज़ीम पाने की निय्यत से फ़ौरन लब्बैक (या'नी मैं हाज़िर हूं) कहती हुई उठ बैठिये और उन की ख़िदमत में मशगूल हो कर जन्नतुल फ़िरदौस के ख़ज़ाने समेटना शुरूअ कर दीजिये ।

﴿13﴾ ➡ शोहर की दिलजूई की ख़ातिर उन के वालिदैन् वगैरा की खुश दिली के साथ ख़िदमत बजा लाइये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दोनों जहां में बेड़ा पार होगा ।

कर भला हो भला

﴿14﴾ ➡ शोहर की हरगिज़ नाशुक्री मत किया कीजिये कि उस के आप पर बेशुमार एहसानात हैं । सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** एक बार ईद के रोज़ ईदगाह तशरीफ़ ले जाते हुवे ख़वातीन की तरफ़ गुज़रे तो फ़रमाया :

ऐ औरतो ! सदक़ किया करो ! मैं ने तुम्हारी अक्सरियत जहन्नमी देखी है । ख़वातीन ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ! इस की वजह ? फ़रमाया : इस लिये कि तुम ला'नत बहुत करती हो और अपने शोहर की नाशुक्री करती हो ।⁽¹⁾

मदनी सहरा «इस्लामी बहनों के लिये»

तुझ को हो शादी मुबारक हो रही है रुख़सती	रुख़सती में तेरी पिन्हां क़ब्र की है रुख़सती ⁽²⁾
घर तेरा हो मुश्कबार और ज़िन्दगी भी पुर बहार	रब हो राज़ी खुश हों तुझ से दो जहां के ताजदार
मदनी बेटी का खुदाया घर सदा आबाद रख	फ़ातिमा ज़हरा का सदक़ दो जहां में श़ाद रख
येह मियां बीवी इलाही मक़्रे शैतां से बचें	येह नमाज़ें भी पढ़ें और सुन्नतों पर भी चलें
येह मियां बीवी चलें हज़ को इलाही ! बार बार	बार बार इन को मदीना भी दिखा परवर दगार
मैका व सुसराल तेरे दोनों ही खुश हल हों	दो जहां की ने'मतों से ख़ूब माला माल हों
अपने शोहर की इताअत से न गुफ़लत करना तू	हज़र में पछ्ताएगी ऐ मदनी बेटी वरना तू
मदनी बेटी या इलाही ! ना बने गुस्से की तेज़	येह करे सुसराल में हर दम लड़ाई से गुरैज़
याद रख ! तू आज से बस तेरा घर सुसराल है	नफ़रते सुसराल सुन ले आफ़तों का जाल है

[1] بخاری، کتاب الحیض، باب ترک الخائض الصوم، ص ۱۳۷، حدیث: ۳۰۴

[2] याद रख ! जिस तरह आज तुझे दुल्हन बना कर फूलों से लाद कर हुज़राए अरूसी में ले जाया जा रहा है इसी तरह जल्द ही तेरे जनाजे को फूलों से लाद कर अन्धेरी क़ब्र की तरफ़ ले जाया जाएगा ।

तू खुशी के फूल लेगी कब तलक

तू यहां ज़िन्दा रहेगी कब तलक !

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मां समझ कर सास की खिदमत जो करती है बहू
सास नन्दों की तू खिदमत कर के हो जा कामयाब
सास और नन्दें अगर सख्ती करें तो सब कर
सास और नन्दों का शिकवा अपने मैके में न कर
मैके के मत कर फ़ज़ाईल तू बयां सुसराल में⁽²⁾
याद रख तू ने ज़बां खोली अगर सुसराल में
सास चीखी तू भी बिफरी और लड़ाई ठन गई
मेरी मदनी बेटी सुन "फ़ैज़ाने सुन्नत" पढ़ के तू
गर नसीहत पर अमल अत्तार की होगा तेरा

राज सारे ही घराने पर वोह करती है बहू
उन की गीबत कर के मत कर बैठना ख़ाना ख़राब
सब कर बस सब कर चलता रहेगा तेरा घर
इस तरह बरबाद हो सकता है बेटी तेरा घर⁽¹⁾
अब तू इस घर को समझ अपना ही घर हर हाल में
फंस के तू कज़ियों के सुन रह जाएगी जनजाल में
है कहां भूल एक की दो हाथ से ताली बजी
इल्तिजा है रोज़ देना दर्स अपने घर पे तू
अपने घर में तू सुखी होगी सदा⁽³⁾

[1]....अगर खुदा न ख़्वास्ता सुसराल में कोई चपकलिश हो जाए तो मैके में इस की भड़ास निकालने में येह ख़तरा है कि मां, बहनें हमदर्दी करें और उन की शह मिलने पर ज़ुबात मजीद मुश्तइल हों और यूँ लड़ाई ठन्डी होने के बदले मजीद बढ़ जाए और नतीजतन घर बरबाद हो जाए, आज कल इस तरह से घर तबाह हो रहे हैं, इसी लिये सगे मदीना ने येह नसीहत करने की ज़सारत की है। (कोई सुने या न सुने रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स जारी रखने की मदनी इल्तिजा है।)

[2]....अपने मां, बाप, या भाई बहनों की सखावतों के उमूमन चर्चे बहू अपने सुसराल में करती है जिस से सुसराल वालों को शैतान वस्वसा डालता है कि येह तुम लोगों को सुनाती और जताती है कि तुम लोग तो कन्ज़ूस और बे मुरव्वत हो। यूँ नफ़रतों की बुन्यादें मज़बूत होती हैं। बहू का मुंह फुलाए रहना भी फ़साद की सूरत बनता है। इस तरह सुसराल के सामने अपने बच्चों को कोसने से भी गु़रैज़ करें कि बा'ज़ औकात सुसराल वाले समझते हैं येह हमें सुना रही है, फिर जंग छिड़ जाती है।

[3].....वसाइले बख़्शिश, स. 661

ब वक़्ते रुख़्सत बेटी को नसीहत

हज़रते सय्यदतुना अस्मा बन्ते ख़ारिजा फ़ज़ारी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا

ने अपनी बेटी को शादी के बा'द घर से रुख़्सत करते वक़्त नसीहत आमोज़ मदनी फूलों का जो गुलदस्ता अता फ़रमाया ऐ काश ! हर मां येह मदनी फूल अपनी बेटी को रुख़्सती के वक़्त याद करा दे। येह मदनी फूल कुछ यूँ हैं :

- ❁ बेटी तू जिस घर में पैदा हुई अब यहां से रुख़्सत हो कर एक ऐसी जगह (या'नी शोहर के घर) जा रही है जिस से तू वाकिफ़ नहीं।
- ❁ एक ऐसे साथी (या'नी शोहर) के पास जा रही है जिस से मानूस नहीं।
- ❁ उस के लिये ज़मीन बन जाना वोह तेरे लिये आस्मान होगा।
- ❁ उस के लिये बिछौना बन जाना वोह तेरे लिये सुतून होगा।
- ❁ उस के लिये कनीज़ बन जाना वोह तेरा गुलाम होगा।
- ❁ उस से कम्बल की तरह चिमट न जाना कि वोह तुझे खुद से दूर कर दे।
- ❁ उस से इस क़द्र दूर भी न होना कि वोह तुझे भुला ही दे।
- ❁ अगर वोह क़रीब हो तो क़रीब हो जाना और अगर दूर हटे तो दूर हो जाना।
- ❁ उस के नाक, कान और आंख (या'नी हर तरह के राज़) की हिफ़ाज़त

करना कि वोह तुझ से सिर्फ तेरी खुशबू सूंघे (या'नी राज की हिफाजत और वफादारी पाए) ।

❀ वोह तुझ से सिर्फ अच्छी बात ही सुने और सिर्फ अच्छा काम ही देखे ।⁽¹⁾

इन मदनी फूलों से वोह माएं नसीहत हासिल करें जो बेटियों के घर को जन्नत का गहवारा बनाने के तरीके बताने के बजाए शोहर, नन्दों और सास पर हुकूमत करने के तरीके सिखाती हैं । फिर जब बेटी उन तरीकों पर अमल करने की कोशिश करती है तो फितना व फसाद की एक ऐसी आग भड़क उठती है जो दोनों घरानों को अपनी लपेट में ले लेती है । **اَللّٰهُمَّ** हमें अपनी औलाद बिल खुसूस बेटियों की मदनी तरबियत करने की तौफीक मर्हमत फरमाए ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपनी औलाद की सहीह इस्लामी उसूलों के मुताबिक तरबियत करने के लिये दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल किसी ने'मत से कम नहीं, लिहाजा खुद भी दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहिये और अपने अहलो इयाल को भी इस महके महके मदनी माहोल से वाबस्ता रखिये, क्यूंकि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर बे शुमार लोगों की ज़िन्दगियां बदल चुकी हैं, आप भी अपनी और अपने अहलो इयाल की ज़िन्दगियों में खुश गवार मदनी तब्दीली पैदा करने के लिये फैज़ाने औलिया से

..... احیاء العلوم، کتاب آداب النکاح، الباب الثالث فی آداب المعاشرة، القسم الثانی، ۴/۷

माला माल दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये और कुरआनो सुन्नत से माखूज नसीहतों के मदनी फूल अपने दामन में समेटने के लिये अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में पाबन्दी से शिर्कत फ़रमाइये फिर देखिये आप पर कैसा मदनी रंग आता है ! तरगीब के लिये दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ की एक मदनी बहार पेशे खिदमत है ।

नसीहत की बरकत

हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्तगी से क़ब्ल गुनाहों भरी ज़िन्दगी बसर कर रही थी, हर वक़्त दुन्या की अरिज़ी और फ़ानी रौनकों में गुम रहती थी, अफ़सोस ! ज़िन्दगी के कीमती अय्याम **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ رَسُوْلِكَ** और उस के प्यारे रसूल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ना फ़रमानी में बरबाद करना मेरा मा'मूल और फ़िल्में ड्रामे, गाने बाजे देखना-सुनना मेरी आदत थी, ज़बान पर अक्सर औकात गानों के अल्फ़ाज़ होते, रात गए तक टी वी स्क्रीन पर बेहूदा मनाज़िर देख कर अपना नामए आ'माल सियाह करती, फ़ेशन की मतवाली थी, बाल कटवाना, लड़कों जैसा लिबास पहनना मेरा शौक था, मामूँ और ख़ालाज़ाद कज़िन्ज़ के साथ मिल कर गेम्ज़, लुड्डो, ताश खेलना मेरा महबूब मशग़ला था ।

फिर मेरी ख़्वां रसीदा जिन्दगी में बहार आई और मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गई। जिस का सबब कुछ यूँ बना कि मेरी वालिदाए मोहतरमा दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना बालिगात में शिर्कत फ़रमाती थीं, उन्होंने ने हमारी हल्का जिम्मेदार इस्लामी बहन से अर्ज़ की, कि मेरी ख़्वाहिश है कि आप मेरी बेटी को समझाएं और उसे भी मद्रसतुल मदीना बालिगात में शिर्कत की तरगीब दिलाएं, लिहाज़ा एक दिन दा'वते इस्लामी की वोह मुबल्लिगा इस्लामी बहन हमारे घर तशरीफ़ लाई, उस वक़्त मैं गाने सुनने में मशगूल थी, मदनी बुर्क़ा वाली इस्लामी बहन पर नज़र पड़ते ही मैं ने फ़ौरन टेप बन्द कर के जल्दी से सर पर दूपट्टा ओढ़ लिया, वोह इस्लामी बहन मेरे क़रीब तशरीफ़ लाई और मदनी इन्आमात के रिसाले का तअरुफ़ कराते हुवे मुझे उस पर अमल करने की तरगीब दिलाई और वालिदा के हमराह मद्रसतुल मदीना बालिगात में शिर्कत की दा'वत पेश की, दुन्या व आख़िरत की भलाई पर मन्बी नसीहतों के उन मदनी फूलों की खुशबू से मेरा क़ल्ब व ज़ेहन मुअत्तर हो गया और मैं ने शिर्कत की हामी भर ली और अगले ही दिन वालिदा के साथ नूरे कुरआन से रोशन होने के जज़्बे के तहत मद्रसे में पहुंच गई, यूँ मैं रफ़ता रफ़ता दा'वते इस्लामी की हो कर रह गई, मुझे दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल बहुत अच्छा लगा, पुर सोज़ बयानात और दुआओं की बरकत से मुझे साबिका बद आ'मालियों से नफ़रत हो गई। मैं ने अपने साबिका तमाम गुनाहों से तौबा की और

गुनाहों से बचने और नेकियों भरी ज़िन्दगी बसर करने का तहिय्या कर लिया, मेरे कमरे में बेहया अदाकाराओं की तस्वीरें लगी हुई थीं मैं ने तमाम तस्वीरों को उतार कर उन की जगह मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा **زَادَهُمُ اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** के तुग़रे सजा दिये। शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के ज़रीए सिलसिलए अलिया कादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिय्या में बैअत हो गई, मेरे रिश्तेदार मेरी तब्दीली पर बे हद हैरान थे, रबीउल अव्वल शरीफ़ के बा बरकत महीने में मदनी बुर्क़ा भी पहन लिया। दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से मेरे दिल में हुसूले इल्मे दीन का शौक़ पैदा हुवा तो इसे अमली जामा पहनाने की गरज़ से मैं ने जल्द ही जामिअतुल मदीना लिलबनात में दाख़िला ले लिया, यूँ एक इस्लामी बहन की इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से मेरे शबो रोज़ नेकी की धूमें मचाते हुवे बसर होने लगे, **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** तादमे बयान मैं दर्से निज़ामी की सनदे फ़राग़त हासिल कर चुकी हूँ और जामिअतुल मदीना लिलबनात में तदरीस के फ़राइज़ अन्जाम देने के साथ साथ रुक्ने काबीना होने की हैसियत से सुन्नतों का पैग़ाम आ़म करने में भी मसरूफ़े अमल हूँ, **عَزَّوَجَلَّ** तादमे मर्ग़ दा'वते इस्लामी के मुशक़बार मदनी माहोल में इस्तिक़ामत अता फ़रमाए। **أَمِينٌ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

माخذومراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
1.	کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۳۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
2.	موطا امام مالک	امام مالک بن انس اصبحی، متوفی ۷۹ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۳۳۳ھ
3.	مسند الامام الشافعی	امام محمد بن ادريس شافعی، متوفی ۲۰۴ھ	غراس الكويت ۱۳۲۵ھ
4.	فتوح الشام	ابو عبد الله محمد بن عمر بن واقد الواقدی، متوفی ۲۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۳۱۷ھ
5.	الطبقات الکبری	محمد بن سعد بن منیع هاشمی، متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۳۱۱ھ
6.	مسند احمد بن حنبل	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۳۲۹ھ
7.	صحیح البخاری	امام ابو عبد الله محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۳۲۸ھ
8.	صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
9.	ستن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۳۲۸ھ
10.	ستن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
11.	صحیح ابن حبان	ابو حاتم محمد بن حبان خراسانی، متوفی ۳۵۴ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۳۲۵ھ
12.	المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الفكر عمان ۱۳۲۰ھ
13.	تنبيه الغافلین	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفی ۳۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۳۳۰ھ

14.	قوت القلوب	شیخ ابوطالب محمد بن علی مکی، متوفی ۳۸۶ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۶ھ
15.	المستدرک	امام ابو عبد الله محمد بن عبد الله حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفة بیروت ۱۴۲۷ھ
16.	حلیة الاولیاء	حافظ ابونعیم احمد بن عبد الله اصفهانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۷ھ
17.	شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیهقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۹ھ
18.	الاستیعاب	ابو عمر یوسف بن عبد الله ابن عبد البر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۷ھ
19.	تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۵ھ
20.	احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیة بیروت 2008ء
21.	مجموعہ رسائل امام غزالی	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	الکتابۃ التوفیقیة القاہرہ مصر
22.	کتاب الشفا	القاضی ابو الفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۳۴ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۳۲ھ
23.	عیون الحکایات	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۳۳ھ
24.	التفسیر الکبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۹ھ
25.	اسد الغابۃ	ابو حسن علی بن محمد ابن اثیر جزیری، متوفی ۶۳۰ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۹ھ
26.	شرح النووی علی المسلم	امام محی الدین ابوزکریا محیی بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دار السلام الریاض ۱۴۳۱ھ
27.	مشکاۃ المصابیح	علامہ شیخ ولی الدین ابو عبد الله محمد بن عبد الله تبریزی، متوفی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۸ھ
28.	جامع العلوم والحکم	عبد الرحمن بن شہاب الدین بن رجب حنبلی، متوفی ۷۹۵ھ	مؤسسة الرسالة بیروت ۱۴۱۹ھ

29.	الاصابة في تمييز الصحابة	حافظ احمد بن علي بن حجر عسقلاني، متوفى ٨٥٦هـ	المكتبة التوفيقية مصر
30.	القول البديع	علامه شمس الدين محمد بن عبد الرحمن السخاوي الشافعي، متوفى ٩٠٢هـ	دار الكتاب العربي ١٣٠٥هـ
31.	سبل الهدى والرشاد	محمد بن يوسف صالح شافعي، متوفى ٩٣٢هـ	دار الكتب العلمية بيروت ١٣١٣هـ
32.	كنز العمال	علامه علي متقي بن حسام الدين هندی برهان پوری، متوفى ٩٤٥هـ	دار الكتب العلمية بيروت ١٣١٩هـ
33.	مدارج النبوت	شيخ محقق عبد الحق محدث دهلوی، متوفى ١٠٥٢هـ	النورية الرضويه لاهور ١٩٩٤هـ
34.	اشعة اللمعات	شيخ محقق عبد الحق محدث دهلوی، متوفى ١٠٥٢هـ	فريد پک سنال لاهور
35.	شرح الزرقاني	ابو عبد الله محمد بن عبد الباقي زرقاني، متوفى ١١٢٢هـ	دار الكتب العلمية بيروت ١٣١٤هـ
36.	ذوق نعت	مولانا حسن رضا خان قادري متوفى ١٣٢٦هـ	شبير برادرز لاهور
37.	فتاوى رضويه	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفى ١٣٣٠هـ	رضا فاؤنڈیشن لاهور
38.	حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفى ١٣٣٠هـ	مکتبہ المدینہ بآب المدینہ کراچی ١٣٢٩هـ
39.	تفسير عزرائل العرفان	صدر الافاضل مفتي نعيم الدين مراد آبادي، متوفى ١٣٢٦هـ	مکتبہ المدینہ بآب المدینہ کراچی ١٣٣٣هـ
40.	بهار شريعت	مفتي محمد امجد علي اعظمي، متوفى ١٣٢٦هـ	مکتبہ المدینہ بآب المدینہ کراچی
41.	تفسير نور العرفان	مفتي احمد يار خان نعيمی، متوفى ١٣٩١هـ	نعیمی کتب خانہ گجرات
42.	مرآة المناجیح	مفتي احمد يار خان نعيمی، متوفى ١٣٩١هـ	نعیمی کتب خانہ گجرات

43.	سيرت مصطفیٰ	شيخ الحديث علامه عبد المصطفى اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
44.	جنتی زیور	شيخ الحديث علامه عبد المصطفى اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
45.	جواہر الحديث	شيخ الحديث علامه عبد المصطفى اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۲۰۰۱ء
46.	نور ايمان	مولانا محمد عبد السمیع بیڈل رام پوری	دارالسلام ۱۴۳۳ھ
47.	اردولغت	ادارۃ ترقی اردو بورڈ	ترقی اردو لغت بورڈ کراچی ۲۰۰۶ء
48.	نیکی کی دعوت	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دانش تہ کاظمیہ العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
49.	پورے کے بارے میں سوال جواب	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دانش تہ کاظمیہ العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
50.	غیبت کی تباہ کاریاں	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دانش تہ کاظمیہ العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
51.	اسلامی بیہوشوں کی نماز	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دانش تہ کاظمیہ العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
52.	بیاناتی عطا ربہ اول	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دانش تہ کاظمیہ العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
53.	بیاناتی عطا ربہ دوم	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دانش تہ کاظمیہ العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
54.	وسائل بخشش	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دانش تہ کاظمیہ العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
55.	فتاویٰ اہل سنت	مجلس افتاء دار الافتاء اہل سنت (کتاب الزکوۃ)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
56.	تربیت اولاد	المدینۃ العلمیہ	//

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
इजमाली फ़ेहरिस्त	4	वा'ज़ में त़वालत इख़्तियार	
नियतें	5	करना कैसा ?	27
तआरुफ़े इल्मिय्या	6	नसीहत के ग़लत और दुरुस्त तरीक़े	28
पहले इसे पढ़िये	8	ख़ुश तबई में मगन लोगों को	
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	10	वा'ज़ करना	28
क़ाबिले रश्क लोग	11	गुनाहों पर किसी को आर दिलाना	29
नसीहत क्या है ?	12	किसी के सामने नसीहत करना	30
वा'ज़ो नसीहत का तज़क़िरा		दुरुस्त तरीक़े से की गई नसीहत	
क़ुरआन में	13	की तासीर	31
वा'ज़ो नसीहत और हबीबे खुदा	15	नसीहत व फ़ज़ीहत में फ़र्क़	33
दीन सरापा नसीहत है	15	इताब व तौबीख़ में फ़र्क़	33
शर्हें हदीस	16	ख़ैरख़्वाही महबूबत की अ़लामत है	34
अन्नसीहतु लिल्लाह	17	मोमिन तो मोमिन का आईना है	34
अन्नसीहतु लिक्किताबिल्लाह	18	किसी को उस के ऐब से आगाह करना	37
अन्नसीहतु लिरसूलिल्लाह	19	इस्लाह का हसीन अन्दाज़	40
अन्नसीहतु लिअइम्मतिल मुस्लिमीन	20	आदाबे नसीहत	41
अन्नसीहतु लिआम्मतिल मुस्लिमीन	21	वा'ज़ो नसीहत करने वाली के आदाब	41
नसीहत मुसलमान का हक़ है	22	वा'ज़ो नसीहत सुनने वाली के आदाब	42
नसीहत का हुक्म	23	नसीहत के फ़वाइद	43
रोज़ाना वा'ज़ो नसीहत पर मन्बी		वा'ज़ो नसीहत में ज़रूरी उमूर	43
बयान करना कैसा ?	25	सरकार की सहाबियात को नसीहतें	44

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
सय्यदतुना आइशा सिद्दीका को अ़ताक़र्दा मदनी फूल	45	सय्यदतुना युसैरा को अ़ताक़र्दा मदनी फूल	60
सय्यदतुना उम्मे सलमह को अ़ताक़र्दा मदनी फूल	46	सहाबियाते तथ्यिबात की नसीहतें	61
नमाज़ की अहम्मियत	49	सहाबियात की बतौरें मां नसीहत	62
नमाज़ में सुस्ती	50	सहाबियात की बतौरें बहन नसीहत	66
क़ब्र में आग के शो'ले	51	सहाबियात की बतौरें बीवी नसीहत	67
सय्यदतुना अस्मा बन्ते सिद्दीक़ को नसीहतें	51	सहाबियात की बतौरें बेटी नसीहत	71
सय्यदतुना अस्मा बन्ते यज़ीद को अ़ताक़र्दा मदनी फूल	53	सहाबियात की बतौरें ख़ाला नसीहत	74
सय्यदतुना क़िस्रा किन्दिय्या को अ़ताक़र्दा मदनी फूल	56	सहाबियात की बतौरें फूफी नसीहत	75
सय्यदतुना उम्मे साइब को अ़ताक़र्दा मदनी फूल	56	सहाबियात की मुजाहिदीन को नसीहतें	76
सय्यदतुना उम्मे फ़रवह को अ़ताक़र्दा मदनी फूल	57	सहाबियात की हुक्मरानों को नसीहतें	78
सय्यदतुना ज़ैनब सक़फ़िया को अ़ताक़र्दा मदनी फूल	57	कुरआनो सुन्नत से माख़ूज़ नसीहतों के मदनी फूल	81
सय्यदतुना हुसैन बिन मिहूसन की फूफी को अ़ताक़र्दा मदनी फूल	59	पर्दे व ज़ीनत से मुतअल्लिक़ मदनी फूल	81
सय्यदतुना ख़ौला बन्ते कैस को अ़ताक़र्दा मदनी फूल	59	नेक औरतों से मुतअल्लिक़ मदनी फूल	82
		शोहर से मुतअल्लिक़ मदनी फूल	84
		वालिदैन व औलाद और दीगर रिश्तों से मुतअल्लिक़ मदनी फूल	86
		अहक़ामे तहारत से मुतअल्लिक़ मदनी फूल	87
		इबादात वग़ैरा से मुतअल्लिक़ मदनी फूल	88
		मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल	90
		अमीरे अहले सुन्नत की कुतुब से माख़ूज़ नसीहतें	92

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
तन्जीमी मा'मूलात से मुतअल्लिक मदनी फूल	93	शादी के मौक़अ पर अमीरे अहले सुन्नत की तरफ़ से इस्लामी बहनों को दिया जाने वाला मक्तूब	118
इबादात से मुतअल्लिक मदनी फूल	94		
फ़िक्रे आख़िरत से मुतअल्लिक मदनी फूल	96	शादी मुबारक के नौ हुरूफ़ की निस्वत से (9) मदनी फूल	124
मौत व क़ब्र की याद से मुतअल्लिक मदनी फूल	101	शादीशुदा इस्लामी बहनों के लिये (14) मदनी फूल	125
तौबा व मुहासबए नफ़्स से मुतअल्लिक मदनी फूल	105	मदनी सहरा (इस्लामी बहनों के लिये)	129
मुआमलात व अख़्लाक़ियात से मुतअल्लिक मदनी फूल	107	ब वक्ते रुख़सत बेटी को नसीहत	131
मुतफ़रिक् मदनी फूल	111	नसीहत की बरकत	133
सय्यिदी अत्तार की तरफ़ से बिन्ने अत्तार के लिये 12 मदनी फूल	116	माख़ुजो मराजेअ	136
		फ़ेहरिस्त	140
		ग़ैर मुफ़ीद कामों में मशगूल होना कैसा ?	142
		❀ ❀ ❀ ❀ ❀	❀

ग़ैर मुफ़ीद कामों में मशगूल होना कैसा ?

किसी का ग़ैर मुफ़ीद कामों में मशगूल होना इस बात की अ़लामत है कि **अल्लाह** ने उस से अपनी नज़रे इनायत फेर ली है और जिस की उम्र चालीस साल से ज़ियादा हो जाए और इस के बा वुजूद उस की बुराइयों पर उस की अच्छाइयां ग़ालिब न हों, तो उसे जहन्नम की आग में जाने के लिये तय्यार रहना चाहिये । (روح البیان، ۲، سورة البقرة، تحت الآية: ۲۳۲، ۱/۳۶۷ ملقط)

नेक नमाजी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाज़े इशा आप
के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार
सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये
अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये
❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में
आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और
❁ रोज़ाना "फ़िक़्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला
पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार
को जम्अ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

मेश मदनी मक्खद : "मुझे अपनी और सारी दुनिया के
लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" إِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى

अपनी इस्लाह के लिये "मदनी इन्आमात" पर अमल
और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश
के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र
करना है। إِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى



मक़्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- ❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- ❁ अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- ❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- ❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786